



I ISSN 2229-547X VI DEHA

बिदेह १२५ म अंक ०१ मार्च २०१३ (वर्ष ६ मास ६३ अंक १२५)



ई अंकमे अछि:-

१. संपादकीय सन्देश

२. गद्य



२.१. डॉ. जगदीश प्रसाद यादव- जगदीश प्रसाद यादवक कथा सभा- सम्मिलित पत्रिका



२.२. जगदीश प्रसाद यादव- उपन्यास- रौद्रकी रत्न (आगाँ..)



२.३. सम्पादकावली श्री बाजदेव यादवक संग

—



२.४. जगदीश प्रसाद यादव- बालक डोह (एकांकी)



२.३.३. ओम प्रकाश- गजवक लेल (समीक्षा)



२.३.४. जगदीश प्रसाद मण्डलक बिहनि कथा- जनक हाथे खेती २. बिन्दुप्रिय ठाकुर- रिपतिपाक बिदेशे [बिहनि कथा]



२.१. डमेश मण्डल- बिदेह नाछी उत्सव- २०१३



२.४.प्रा. हविमोहन साक प्रजातिथि मनाउल गेल- सराद- सुमित आनन्द

३. पद्य



३.१.१. बामबिवास साहक दुष्टी करिता २. करिता



हेम नाबायण साह जीक



३.२.१. आशीष अनचिन्नाव-गजवक २.



डा. शिर कृपाव प्रसादक दुष्टी गीत



३.३.१. जगदानन्द झा 'मनु' गजल १-४ २.



पंकज चौधरी "नरनशी"

भक्ति गजल/ भगवती गीत १-२/ करिता १-२/ गजल १-१



३.४.१. आशीष खनटिन्नाव गजल १-२ २.



सुमित मिश्र गजल १-३



३.५.१. कामिनी कामायनी- आश्रक पूर्ण कवने २.



रिनीता झा- टैन



३. जाति झा चौधरी-पिया जन्दी सँ आड ले (रैनेल्लेगन डे पब रिशेष)



३.७.१. राजदेव मण्डवक दु गोठ करिता २.
गीत



जगदीश प्रसाद मण्डवक दु ठा



३.९. रौत झरुन्द पाठक- गजल-२



३.११. रिन्दुशिव ठाकुर "नेपाली"- प्रेम / गजल २.
गजल १-२



सुमित मिश्र-



बिदेह' १२५ म अंक ०१ मार्च २०१३ (वर्ष ६ मास ६३ अंक १२५)
जगदानन्द या मनु - होएत जै



बिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साइट



VIDEHA MAITHILI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE

बिदेह ग्र-पत्रिकाक सब्त्ता प्रवान अंक (ब्रैल, तिरहुता आ देवनागरी मे) पी.डी.एफ.
डाउनलोडक लेल नीचाँक लिंकपव उपलब्ध अछि । All the old issues of
Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari
versions) are available for pdf download at the
following link.

बिदेह ग्र-पत्रिकाक सब्त्ता प्रवान अंक ब्रैल, तिरहुता आ देवनागरी कपमे Vi deha
e journal's all old issues in Braille Tirhuta and
Devanagari versions

बिदेह ग्र-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

बिदेह ग्र-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक



बिदेह आब.एस.एस.फीड एनीमेटरकेँ अपन साइट/ ब्लॉगपव लगाउ ।



ब्लॉग "लेखाउठ" पव "एड गाडजेट" मे "फीड" सेलेक्ट कए "फीड यू.आब.एन."
मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठाँगप केलासँ सेहो बिदेह फीड
प्राप्त कए सकैत छी । गुगल रीडरमे पठरा लेल <http://reader.google.com/>
पव जा कऽ Add a Subscription बटन क्लिक करू आ थाली स्थानमे
<http://www.videha.co.in/index.xml> पेस्ट करू आ Add बटन दबाउ ।



Join official Videha facebook group.



Google समूह [Join Videha google groups](https://www.google.com/joinvideha)



बिदेह रेडियो: मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पौडकास्ट सांघ

<http://videha123radio.wordpress.com/>

मैथिली देरनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ निथि पारि बहर छी, (cannot see/write Maithili in Devanagari / Mithilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाऊ । संगहि बिदेहक सुँभ मैथिली भाषापाक/ बचना लेखनक नर-प्रबान अंक पढ़ू ।

<http://devanagari.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रीकामे ऑनलाइन देरनागरी ठाँगप कक, रीकामे कापी कक आ रडि डाक्यूमेन्टमे पेसठ कए रडि हाँगरकेँ सेर कक । विशेष जानकारीक लेल ggajendra@videha.com पब सम्पर्क कक ।) (Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM) / Opera / Safari / Internet Explorer 8.0 / Flock 2.0 / Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at <http://www.videha.co.in/>.)

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. बिदेहक प्रबान अंक आ ऑडियो/ रेडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक हाँगर सभ (उच्चारण, रडि सुथ साव आ दूरस्थित मंत्र सहित) डाउनलोड करौक हेतु नीचाँक लिंक पब जाऊ ।



VI DEHA ARCHI VE बिदेह आर्कावर



जातिबिहारी पूर्ण महकरी रिद्यापति । भावत आ नेपालक माईमे पसबन मिथिलाक धवती प्राचीन कारहिसेँ महान प्रकष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक महान प्रकष ओ महिला लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखु ।



गौरी-शैकबक पातरणि कारक मुर्ति, एहिमे मिथिलाम्बरमे (१२०० बरष पूर्क) अभिनेथ अंकित अछि । मिथिलाक भावत आ नेपालक माईमे पसबन एहि तबहक अन्यान्य प्राचीन आ नर स्थापन, चित्र, अभिनेथ आ मुर्तिकारक हेतु देखु मिथिलाक खोज

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसेँ सङ्गित सूचना, सम्पर्क, अन्वेषण सर्गहि बिदेहक सर्च-अङ्गन आ नृज सर्गिस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसेँ सङ्गित रेरेसाँगे सभक समग्र संकलनक लेल देखु बिदेह सूचना सर्पक अन्वेषण

बिदेह जानबुतक डिसकसन फोरमपर जाड ।

“मैथिल आब मिथिला” (मैथिलीक सभसेँ लोकप्रिय जानबुत) पर जाड ।

१. संपादकीय

बिदेह: लोगो: रिद्यापति: डगना: मिथिला: मैथिली



। .

महाभावतमे उल्लख अछि, जे अन्द-प्रजा गाठ नीत बगक होगत छन । बामक प्रजा नान-गेकथा बगक छनहि आ एहि पब कनदेरता सूर्यक चित्र अंकित छन । महाभावतमे अर्जुनक प्रजा पब रानवराजक चित्र छन । नरकक प्रजा पब सबल पशुक चित्र छन । अथरवेदक अनुसाव सबल पशु दु माथक , दूठ सुन्दर पंथ रैना, एकठा नमगब पृथ्वी रैना आ सिँहक समान आठ नोकगब पैबक आँखर हाकत होगत छन । अतिमनुक प्रजा पब सारंग पक्षी छन । दूर्योधनक प्रजा सर्पप्रजा छन । द्वापक प्रजा पब मृगछान आ कमलन छन । कर्कक प्रजा पब हाथीक पैबक जिँजीव छन, आ सूर्य सेहो छनान ।

भगवान रिष्णुक प्रजा पब गकड़ अंकित अछि । शिरक प्रजा पब नदी वृषभ अंकित अछि ।

दुर्गा मन्दपमे शिख,ईका,पठह,मृदंग, काञ्चतान(राँसुवीकेँ छोडा), राद्य प्रज,करच आ धनुष केब पूजन होगत अछि । एहिमे सरप्रथम खड्क पूजा होयबाक चाही । तकवा रौद चुबिका, कङ्काबक, धनुष, कलत्र आ करच केब पूजा आ हेल चामब,छत्र,प्रज,पताका,दुन्दुभि,शिख, सिँहासन आ अग्नि केब पूजा होगत अछि । हमबा हिसारे मिथिलाक कोनो नडा रिन एहि सबक सम्मिलनक संपूर्ण नहि होयत ।

। .

अन्दसुख शिची समुज्जरनगुणा गौबीर गौबीपतेः कामसुख बतिः सुभारमधुवा सीतेर बामसु या । रिष्ठाः श्रीविर पद्मसिंहनूपतेरेषा पवा प्रेयसी रिष्निथ्यातनया द्विजेन्द्रतनया जागति भूमन्ते ॥ ९ ॥

उपर्युक्त पद्य रिद्यापतिद्वारा शिरसरसुखावक प्राबन्धक नरम श्लोक छी । एकव अर्थ अछि-
उक्रेष्ठ, गुणरती, मधुव सुभाररानी, ब्रह्मा-रंजिता, नीति-कौशिल्यमे रिष्निथ्यातनया महाबानी रिष्ठासदेरी सम्प्रति संभावमे सुशोभित छथि, जे पृथ्वी-पति पद्मसिंहकेँ तहिना प्रिय दुनीत जहिना अन्दकेँ शिची, शिरकेँ गौबी, कामकेँ बति , बामकेँ सीता ओ रिष्णुकेँ नमस्सी ॥ ९ ॥ ।। .

मधुरनी जिना म्हाथानयसँ दक्षिण पल्लौर बेतरे-सुशैनक निकट भरानीपुव ग्राम रँसन अछि । एहि गामक निकट छह बीठ नीचाँ जमीनमे एकठा शिर-रिंग अछि, जे उग्रनाथ महादेवक नामसँ प्रसिद्ध अछि । एहन रिष्ठास लोकमे छेक जे पन्द्रहम शताब्दीक आरंभमे



हुनकर सहचर उगना, जखन महाकरि पासमे अम्हात डूनाह, हुनका अपन जठास गंगाजल निकारि कय पियउने बहथि । एहि पब करिके शिका भेलन्हि, आ ओ करिसँ असली पबिचय प्रदुलन्हि । तकब रौद एहि स्थान पब शिर हुनका अपन असली रूपक दर्शन देलन्हि ।

एहि कथा पब रिश्नास तखने भ सकैत अछि, जखन तर्क आ रिज्ञानक संग श्रद्धा मिश्रण होय । शिकवाचार्यक रिषामे कहल गेल जे ओ अपन कर्मडनमे धार भवि लेलन्हि । भेल ओ जे रौठा मे रैचेमे पहाड़ बहलक कारण एक दिशि रौठा अरैत डूत आ एक दिशि दाही । रौचक गृहकारे शिकर अपन शिषक सहयोगसँ तोड़ा जखन कमलुन लेने रैहबउनाह तँ लोक देखलक जे दोसर कात पानि आरि बहल अछि । सब शिकवाचार्यक झुति कएलन्हि, जे अहाँ अपन कर्मडनमे धार आनि हमरा सभकेँ दाही सँ आ दोसर कातक लोककेँ रौठा सँ झूठ कबाओत । अहाँ कमलुनमे पानि आ धार अनलहुँ । रौदमे अरसबरादी लोकनि एकबा क्लकोवसँ जोड़ा देलक । आशि अछि जे अहाँ सेहो अपन लेखमे उगनाक कथाक तर्क आ श्रद्धासँ रिरचना कबर ।

बीस मार्चकेँ १४ दिनका मिथिला स्फोटक गृही परिव्रमा, आग कान्हि जनकपुरक, दु ठा डालाक संग- १. मिथिला रिहारी जी आ किशोबीजी आ आव मारिते बास ठेब मन्दिरक/ भोजक डाला सभक संग कथा बासपुव द२ क२ जनकपुरमे प्रवेश करैत छथि । कतेक भोज तँ अपन पशुक संगे परिव्रमा करैत छथि । ओ परिव्रमा कच्ची मठ, धनुषासँ शुरू होगत अछि आ अमारम्याक बातिमे पहिल रिश्याम हनुमान नगर आ चतुर्दशी दिन पन्द्रहम रिश्याम जनकपुरमे होगत अछि । २१ मार्चकेँ हाथन परिव्रमा दिन ओ यात्रा जनकपुर नगरपालिकाक परिव्रमाक अंतर्गत परिव्रमा (लगभग ४ किलोमीटर) क संग होगत अछि । २२ मार्चकेँ जनकपुर आ आसपासमे होली मनाओत जागत अछि ।

जनकपुर मध्य परिव्रमाक १३. सुन आ २. ओतुक्का कथा देरता १. हनुमाननगर- हनुमानजी २. कल्याणेश्वर- शिरनिर्ग ३. गिरिजा-स्थान- शिञ्ज ४. मठिहानी- रिश्याम मन्दिर ५. जानेश्वर- शिरनिर्ग ६. मनाङ्ग- मालुन भूषि ७. श्रुत कल- श्रुत मन्दिर + कंचन रन- कोनो मन्दिर नहि मात्र मनोवम दृष्ट ८. परत- पाँच ठा परत ९. धनुषा- शिरधनुषक टुकड़ा १०. सतोखड़ा १- सप्तर्षिक सात ठा कल १२. हकषाहा- रिमलार्गगा १३. कक्षा- कोनो मन्दिर नहि मात्र मनोवम दृष्ट १४. रिसौन- रिश्याम मन्दिर १५. जनकपुर । अन्तमे फेब जनकपुरमे खतम भ२ जागत अछि । भोज सभ राबहरीया मैदान आ धमशिला सभमे ठहरैत छथि ।

लगू परिव्रमा आठ कि.मी. , मध्य परिव्रमा ४० कोसक (१२८ कि.मी.) आ बृहत परिव्रमा २६८ कि.मी. होगत अछि ।



१. उग्रतावा स्थान- मल्लन मिश्रिक कनदेरी/ गौसाडनी महिष मर्दिनी भगवती, महिषाती ।
१४म शताब्दीमे बाजा शिर सिँहक ज्योति बानी पद्मारती एतए एकठा मन्दिर रैनरेल्लि ।
खल्लरता बाजरशि कारमे सेहो एतए मन्दिरक बथ-बथार होगत छल आ बाजा आसिन
नरबावमे एतए पूजा आ बहरौक लेल अरैत बहथि ।

तावा भङ्ग लोकनि दुर्गापूजाक समयमे एतए खुर मात्रामे अरैत छथि ।

२. कपिलेश्वर स्थान- मधुबनीसँ पाँच किलोमीटर पश्चिम माधर मन्दिर आ पुरान शिरनिग,
साथी दर्शनक जनक कपिल एतए मन्दिरक स्थापना कवरौल्लि । एखनका मन्दिर दबडंगा
महाबाज बाघर सिंह द्वारा २३.० वर्ष पहिने रैनरौल्लि गेल । प्राचीन कारमे सम्राट
हिमालय पवि पसवत छल आ हेब जमीन पसवत । जखन रँगालक खाड़ क निकट
गंगासागर तीर्थ लग कपिल सगबक ३०००० पुत्र / सैनिककेँ जवा देल्लि तखन ओ
कपिलेश्वर अएलाह । एखन गंगासागर सेहो सम्राटसँ कनेक छुट कए छल ।

जानकी नरमी- रेशीख शुक्ल नरमी- मानसी । वामनरमी- छैत्र शुक्ल नरमी ।
रिद्धापतिक मृत तिथि कार्तिक धरत त्रयोदशी-देसित रयना ।

रिराह पंचमी- अगहन शुक्ल पंचमी । शिवानन्द पुरहित-वाम सीताक रिराह । मवरापव
मिथिला चित्रकला आ पविचन, गौसाडन गीत आ लेना जोगिन ओहिना जेना जुगत
सबकाबक रिराहमे लेल बहए, आगयो ।

मिथिला प्राचीन कारमे मैथिलक भूमि रिदेहक नामसँ- जकब राजधानी मिथिला बहए-
स्थापना मिथी (भरिया पुराण) द्वारा । दोसब नाम रिदेह, मिथिला, तीव्रभुजि, तीव्रत,
तपोभूमि, साम्बरी, सुवर्णकानन, मँतिनी । मिथिला माहायो (बृहद रिद्ध पुराण)- बृहद
परिक्लमा- सम्पूर्ण मिथिलाक परिक्लमा एक सारमे । २६८ कि.मी. । कौशिकीसँ शुक भए
सिंघेश्वर स्थान, ओतएसँ सिमबियाघाट, हेब हिमालयक कूटहिम, हेब कौशिकी होगत
सिंघेश्वरस्थान । मध्य परिक्लमा- ४० कोस (१२८ कि.मी) ५ दिनमे, ऊदा आग-कान्ति १५
दिनमे । हानून शुक्ल पञ्चक पहिल तिथिकेँ (अमारस्या) दिन शुक होगत छल आ
पूर्णिमा दिन अतम होगत छल । हाथनक परिक्लमा सभसँ रेशी प्रसिद्ध छल ऊदा
परिक्लमा कार्तिक आ रेशीखमे सेहो कएल जा सकैत छल ।

पाणिनी- मिथिला ओ नगरी छी जतए शत्रुक मर्दन कएल जागत छल । जनक- जन
(रिषी)सँ रूपेति । निमी द्वारा रैजयती (जनकपुर) आ मिथी द्वारा मिथिला नगरक
स्थापना ।

शिवभ नरकक नडापव बहए, मिथिलक जानवर जकवा दु ठाँ माथ, दु ठाँ पाँथ, एकठा
नमगव पछी, आ सिंह जकाँ ८ ठाँ नह होगत छल । जखन भगरन रिद्ध नवसिँह
अरताब लेल्लि तखन हुनका प्रसन्न कवरौक लेल शिर शिवभक रूपमे जग लेल्लि ।
मिथिला चित्रकलाक पाँच बंग- क्षिति, जल, पारक, गगन, समीबक द्यातक । अरुणि- दु



बैंबक रैबडा- स्पीयब जाहिसँ हाथीकेँ नियंत्रित करैत छी, गणेशी जीक अँकुरी मुसकेँ नियंत्रित करैत छी ।

यूनीकोड- 1200 सात प्रवान हिगवागन आ 500 सात प्रवान पाल्नुनिपि । सहाजाम्भव-
कोष्ठकक सँख्या जे रँगानीमे नहि छी रा रिंकून अलग छी- करन्ना (10), खरन्ना
(4), गरन्ना (8), घरन्ना (4), ओ रन्ना (4) चरन्ना (6), ज रन्ना (5), न रन्ना (4) छ
रन्ना (3), ठ रन्ना (2), ड रन्ना (2), ट रन्ना (3), ण रन्ना (6), त रन्ना (6) , थ
रन्ना (3), द रन्ना (8), ध रन्ना (3), न रन्ना (6) प रन्ना (8), फ रन्ना (2), रँ रन्ना
(4), भ रन्ना (3), म रन्ना (11) अँत-सहाजाम्भव य रन्ना (2), व रन्ना (2), न रन्ना
(4), र रन्ना (4), शी रन्ना (9), ष रन्ना (8), स रन्ना (8), ह रन्ना (8) तीन रँक
सहाजाम्भव- (49) चाबि रँक सहाजाम्भव (1) रिंकारी (1), ग्रंग द्रस्य-दीर्घ (2), अँजी
एक ठाँगप अँशुमन पाल्नु द्वारा रँपित (5) प्रकार आव ।

संस्कृत-अरुठक रिद्यापतिक नेपात नथिमाक सँग पलायन- घुबनाक रौद अँतिम बचना
दुर्गा भक्ति तर्वागिणी जातिवीथिब पूर्ब रिद्यापति मुमब, नचावी, महेशीराणी, जोग उँचती,
रँठगरनी, पविद्धनि, कोरँव, पवाती, राँवहमासा, मान, तिवहूत, दृष्टकुँठ, शिर, भगरती आ
गंगा, रिष्टु, शिजि, हब-गौबीक रिषयमे गीत लिखननि।



गजेन्द्र ठाकुर

ggaj_endr_a@videha.com

अपन मँतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।

२. गद्य



२.१. उमेश मिश्रा- जगदीश प्रसाद मिश्राक कना सँबाब- सम्पिप्त पकिय



२.२. जगदीश प्रसाद मण्डल-उपन्यास- रौंकी रहिन (आगाँ..)



२.३. साक्षात्कार श्री बाजदेव मण्डलक संग

—



२.४. जगदीश प्रसाद मण्डल-बनोकव डकैत (एकांकी)



२.५. उम प्रकाश- गजलक लेल (समीक्षा)



२.६.१. जगदीश प्रसाद मण्डलक रहिन कथा- जनक हाथे खेती २. रिद्धिबैब ठाकुर- रिपतियाक बिदेह [रहिन कथा]



२.७. उमेश मण्डल- बिदेह नाँठे उत्सव- २०१३



२. + प्रो. हविमोहन झाक प्रजातिथि मनाओत गेल- संवाद-

सुमित आनन्द



डमेशे मण्डल

जगदीश प्रसाद मण्डलक कना संसार- सम्मिप्त पकिय

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक जन्म 05 जुलाई 1947 एकरे मधुबनी जिलाक नखनौब रौनौकक रैबमा गाममे भेलन्हि। साहित्य लेखन 2000 एकर पछातिसँ कबए लगलन्हि। शिक्षा- एम.ए. (राजनीति शास्त्र आ हिन्दी)। जीरिफोपार्जन- धर्मि। रैबमा गामक धर्मि-कार्यमे, सामाजिक आन्दोलनमे रैठि-चठि कइ भाग लइ अपन एक गोष्टि रिशिष्ट ओ फुवाक छरि रैनौने छथि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्य रिषाक रिरिध स्केत्रमे योगदान छन्हि। हिनक गद्य एरि पद्यमे प्रकाशित निम्नांकित बचना अछि-

गद्य साहित्य-

कथा संग्रह- “गामक जिनगी”, “सतभैया पोखरि”, “तरेगन”, “रैजन्ता-रूमन्ता”, “ऊनरौं चाँद”, “शेम्भू दास” एरि “अहंगिनी..., सरोजनी..., स्वभद्र..., भागक सिनेह... अत्यादि...”

उपन्यास- “मौलाओल गाँवक फूल”, “उत्थान-पतन”, “जिनगीक जीत”, “जीवन-मरण”, “जीवन-समर्थ” “सधरा-रिधरा” तथा “रैडकी रैहिन”

नाटक- “मिथिलाक रैठि”, “कम्प्रामाओल” आ “नमेलिया रिंखल”

एकांकी- “पछरैठि”

पद्य साहित्य-



करिता संग्रह- “अनुभवधरणी अकास”, “वाति-दिन” एवं “सतरेंध”

गीत संग्रह- “गीतांजलि”, “तीन जेठ एगावहम माघ”, आ “सविता”

समाजक कल्याणमे अपन कल्याण देखै, बुझै आ रीश्यास कबै तथा ओग पथपव सतत् डेगे-डेगे, समए पबिसुथितकेँ पियानमे बाथि आगु झुनै चनै, चनैत बहै जगदीश जीक अपन सररिदित पहिचान बहरा छन्हि । काज (शारीरिक श्रम), भोजन आ आवायकेँ एक सहतपव न२ क२ चनै, हिनक जीवनक क्रिया-कलापक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बहरा छन्हि । ओना सामाजिक आन्दोलनक परिपेक्ष्यमे कतेको रैब जेन-यात्रा सेहो कबए पढ़नन्हि । हिनक साहित्यमे ग्राम्य लोकक जिजीरिषाक रर्षन आ नर दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होएत छन्हि ।

हिनक बचना कबराक कला-कौशल मैथिली साहित्यमे कबए स्थान बथैए । हिनका विषयमे प्रख्यात साहित्यकार श्री गजेन्द्र ठाकुर लिखै छथि-

“जगदीश प्रसाद मण्डल शिल्पी छथि, कथ्यकेँ तेना समेटि लेत छथि जे पाठक रिसुमित बहि जाएत छन्हि । झुदा हिनका द्वारा कथ्यकेँ (कथा, उपन्यास, नाटक, रिहनि कथा, प्रेबक-कथा, करिता सभमे) उद्देश्यपूर्ण रैनेराक आग्रह आ क्षमता हिनका मैथिली साहित्यमे ओहि स्थानपव स्थापित करैत छन्हि, जतएसँ मैथिली साहित्यक इतिहास “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्ण” आ “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ” एहि दु खण्डमे पाठित होएत । समाजक सभ रक्षा हिनक कथ्यमे लेटैत छन्हि आ से अर्थकारिक रूपमे नहि रबन् अनायास, जे मैथिली साहित्य लेन एकठा हिनकोर अरराक समान छन्हि । हिनक कथ्यमे कतहु अन्तर-भाषण नहि लेटैत, सभ रक्षाक लोकक जीवन शैलीक प्रति जे आदर आ गौरव ओ अपन कथ्यमे बथैत छथि से अद्भुत । हिनक कथ्यमे नोकरी आ पलायनक रिकछ पावम्परिक आजीविकाक गौरव महिमा मडित लेटैत छन्हि । आ से प्रभावकारी होएत छन्हि हिनक कथ्य आ कर्मक प्रति समान दृष्टिकोणक कावसँ आ से छन्हि हिनक रयक्तिगत आ सामाजिक जीवनक श्रेष्ठताक कावसँ । जे सोचैत छी, जे करैत छी सभए लिखैत छी- ताहि कावसँ । यात्री आ धुमकेतु सन उपन्यासकार आ क्रमाव परन आ धुमकेतु सन कथा-शिल्पीक अद्भुत मैथिली भाषा जनसामान्यसँ दूर बहरा । मैथिली भाषाक आरोह-अरोह मिथिलाक राहक लोककेँ सेहो आकर्षित करैत बहरा अ । ओही भाषाक आरोह-अरोहमे समाज-संस्कृति भाषासँ देखाओन जगदीशजीक सरोकारी साहित्य मिथिलाक सामाजिक क्षेत्र ठामे नहि रबन् आर्थिक क्षेत्रमे सेहो अन्ति आनत । ”[1] “हिनक गामक



जिनगीक सबल कथा उत्प्रेषण अछि, बिकृत स्थानक प्रति करैत अछि आ मैथिली साहित्यक पुनर्जागरणक प्रमाण उपलब्ध करैत अछि।”[2]

गामक जिनगी- (नवकथा संग्रह) प्रकाशिन वर्ष- **2009**, ISBN- 978-81-90772-94-5.

ई कथा संग्रहमे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक मौलिक आ अद्वितीय छवि अभिरूपाकृत भेल अछि। आजुक संक्रमणकालिक हांगमे मिथिलाक गाम कौन तबहें पबम्पबित जीवन पद्धति, आस्था एर रिश्तासक संग प्रेरण जिवीरिषाक रौनै संघर्ष पथपव आकट अछि तेकब सूक्ष्म रिश्तासक भेल अछि। प्रेमपव रिश्तास, अमानदारी प्रयास, कर्मक्षयता एर चातुर्यक संरक्षण रिपन्नतापव रिजयक आ गाथा सब मिथिलाक जन-जीवनमे व्याप्त उत्साह ओ संघर्षक मर्मस्पर्शी चित्र प्रस्तुत करैत अछि। डेनिस गौठ कथाक आ संकलन अछि। कथाक शीर्षक रहैत किछ स्पष्ट करैत अछि- “भैरवक तारा”, “ई रसाठ”, “पीबबक फड”, “अनेकथा रैठा”, “दूठा पाग”, “रौन नहा बन मवनी”, “हा ब-जीत”, “ठैठारना”, “जी रका”, “ई बक़ारना”, “चुनरानी”, “डीहक रैठारवा”, “भैयाबी”, “रहीन”, “घबदेहि थया”, “पडतारा”, “डाकठब हेमन्त”, “रौरी” एर “का मनी”।

अछिगिनी..., सरोजनी..., सुभद्रा..., भागक सिनेह..., अत्यादि... (नवकथा संग्रह) प्रकाशिन वर्ष- **2012**, ISBN : 978-93-80538-42-6. ई संग्रह कथा सबमे नोकबिहारक संवास, नाबी रिमर्श, दलित रिमर्श, पवित्रेयी धर्मकक उत्साह, पारनि-तिहाबमे पैसल अन्धरिश्तास, ग्राम जीवनमे जातीय ब्यवसाय केब महत्तर, छुटैत सम्बन्ध-रन्ध, मिथिलाक सामाजिक आर्थिक ओ बाजनीतिक जीवनमे होगत परिवर्तन, सामाजिक आर्थिक धार्मिक शोषण, नागब जीवनक चक टिक्य, जीवनक सौहार्दपूर्ण रातारवणक प्रति आकर्षण अत्यादि रिन्दु सबपव अति सूक्ष्म रिश्तासक भेल अछि। **20** गौठ कथाक आ संग्रह अछि यथा- “दोहरी माबि”, “केना जीर ?”, “नरान”, “तिरसकान्तिक तारा”, “भागक सिनेह”, “प्रेमी”, “रपौती सम्पति”, “डका”, “सगी”, “ठकठवर”, “अतहत”, “अछिगिनी”, “अपरेशन”, “धर्मनाथ”, “सरोजिनी”, “सुभद्रा”, “सोनमा कका”, “दोती रिखाह”, “पड १०न” ओ “कतौ नै”।



सतलैया पोथरि- (तयूकथा संग्रह) प्रकाशिन ररष- 2012, | SBN : 978-93-80538-80-8. ई संग्रह कथाक शीर्षक थुडि- “रिहवन”, “मायबाम”, “गोहिक शिकाव”, “मातृभूमि”, “भर्रडाह”, “पविरावक प्रतिष्ठा”, “फागु”, “नरूक साग”, “तिनकोवक तकथा”, “एकोठा नै”, “धोतीक मान”, “साम्नी”, “सतलैया पोथरि”, “न्याय चाही”, “पनियारा दुध”, “कऊ”, “पवदेशी रैष्ठी”, “मान” आ “मनोवथ” कथाक एक अन्नपम संग्रह थिक । ए संग्रहमे उन्नैस गोष्ठ कथा संग्रहित थुडि ।

श्रीह्मा, भक्ति, रन्नधुतर, अन्नधरिष्ठास, समाजमे मन्नथक खरीद-रिफ्ती, गाए-महिंस, थेत-पथाव, समाजक रू नारैष्ठीपव रैदिक प्रभार, नीक तँ किएक, अन्नता तँ किएक आ केहेन गत्यादि रिभिन्न रिषयपव लिखन कथा-ह्मति थुडि ।

तरंगन- (रौर प्रेवक रिहनि कथा संग्रह) पहिन प्रकाशिन- 2009 आ दोसर- 2012 ग्रा.मे । | SBN : 978-93-80538-25-9.

110 गोष्ठ रौर प्रेवक रिहनि कथाक संग्रह थिक तरंगन । जहिना मेघमे तरंगन अपन-अपन चमकसँ सम्पूर्ण आकासकें जगमगेने रैहत तहिना ई संग्रहक छोट-छोट कथा सम्पूर्ण संग्रहकें जगमगा देने थुडि । अनेक रिषयकें समेटने थुडि ग्रा संग्रह । एकव शीर्षकहिसँ रैहत किड रूमन-पवखन जा सकैए- “उथोन-पतन”, “प्रतिभा”, “मर्म”, “अपथङ्ग आ”, “समैक रैवरदी”, “पहिने तप तखन ठनिहै”, “खनीहा उमवक सिनेह”, “जखने जागी तखने पवात”, “अस्तित्वक समाप्ति”, “खजाना”, “उग्रयावा”, “जाति नै पानि”, “डूच-नीच”, “पागलखाना” गत्यादि-गत्यादि ।

रैजन्ता-रूमन्ता- (रिहनि कथा संग्रह) | SBN : 978-93-80538-89-1. प्रकाशिन- 2012 ग्रा.मे । 67 गोष्ठ रिहनि कथाक ग्रा संग्रह थिक । अह्म संग्रहक कथा सभ अनेकानेक रिषय-रिम्पव लिखन थुडि । जगमे नारी रिमर्ष, दलित रिमर्ष, साम्प्रदायिक सौहार्द, महिना सशिकतीकवण, प्रह्मति रर्षन गत्यादि रिषय-रसुत सहजाक र्ग कपायित भेन थुडि । 67 गोष्ठ महत्तरपूर्ण रिहनि कथाक ग्रा संग्रह थुडि । एक नजवि किड शीर्षकपव देन जाए- “रूधनी दादी”, “अकास दीप”, “खिनतोड”, “रूह-कान”, “अनदिना”, “अपन काज”, “पुवनी भौजी”, “हुष्ट गेन”, “अपुन हारि”, “कनफूसकी”, “रूहक रौर रूहेमे”, “गति-गुदा”, “रिसरास”, “कचहिया-भाय”, “गुहारि”, “पनचैती”, “कटोष्ट”, “अजाति”, “चौकीदारी”, “रूसाग पडित”, “भवमे-



सबम”, “देखन दिन”, “पहाडक रैखा”, “डमकी”, “रैजन्ता-रूमन्ता”, “चर्मरोग”, “शिका”, “ओसाव”, “बमेत जोगी रैहत पानि”, “कोसनिया”, “छुसि गेल”, “पोखना कठहब”, “सबही सौरजा”, “तेबहो कबम”, “डुमेत ि जनगी”, “टोब-सिपाही”, “दुधरैना”, “समदारी”, “रूठा या दादी” अत्यादि ।

उवरौ चाडव- (तघुकथा संग्रह) । SBN : 978-93-80538-95-6.

सामंती संस्कार, सभ्य समाज, शुद्धतारादी सोच, प्रगतिशील चेतना, रिन्नपत होगत मिथिलाक र्वाजन, ठहरैत रैदिक पबम्पवा, शैर्दजान, स्वतर्कक रैशिष्ट्य, पुजीरादी होबमे भूमिआगत लोक अत्यादि अनेक रिषय-रसुत ई संग्रहक कथा सभमे सहजता पूर्क देखन गेल अछि । किछ महत्पूर्ण शीर्षकपब दृष्टिपात कएल जाए-

“सुदि भवना”, “जन्मतिथि”, “गमानदाव घुसखोब”, “पट्टियारैना”, “सनेस”, “उवरौ चाडव”, “कर्क”, “रैजोब”, “दोस्ती नै धारेए” अत्यादि ।

शैभुदास- (दीर्घ कथा संग्रह) । SBN : 978-93-80538-74-7. पहिल प्रकाशन-2012 ई.मे ।

तीन गोष्ट दीर्घकथाक संग्रह अछि । “शैभुदास”, “मगईगब” एर “फाँसी” शीर्षक अछि ।

शैभुदास- कथाक रिषय-रसुत रैड र्यापक अछि । मिथिलाक गाम-गाममे पसबन कना-प्रेमीक, कनाकाबक थिस्सा ई कथा मध्य कहल गेल अछि ।

मगईगब- मगईगब अर्थात जन्मति काल धीवज आ घुबनीक जौआँ रैछाक माए मरि जाग छथिन । पिता तपेसब आ दादी सर्ग पन्थनिक रैदौरति रैछाक पावन-पोसन होग छैक । एमरी: दुनु रैछाक जीरन-नीलाक प्रावम्भ होगत छै आ कथा सेहो आगु रैठौत अछि ।

फाँसी- संग्रह तेसब दीर्घकथा छी । मन्थमे अपराध वृत्ति केना पनपैत अछि आ तकब प्राय: छोट-छोट अनेक काबकक छोट-छोट तन्तुपब रिचाव करैत रैहूत दुब धरि कथा-यात्रा होगत अछि ।



मौवाखन गाढक कुव- (उपन्यास) | SBN : 978-93-80538-02-0. प्रकाशिन- 2009
ग.मे ।

लेखकक ग्रा पहिने उपन्यास छियन्हि । आदर्शवादी रिचावधाराम ओतप्रोत ई उपन्यासमे हिनक उदात्त सामाजिक चिन्तनक प्रस्फेपण भेल अछि । उपन्यासक केन्द्रीय पात्र बमकान्तक ग्रा खरधारणा छन्हि जे संसारक सब मनुक्खकेँ जीविक अधिकार छै । सबकेँ सबसँ सिनेह हेराक चाहिअक ।

सिनेह, तियाग, संघर्ष, प्रकृतिक रिपदा, खेत-पखा, पोखरि-माखरि अत्याधिक संग मिथिलाक रिभिन्न पहलूपर नजरि दैत मद्रासक सेहो रहूत अछूत चित्रण भेल अछि । द्वितराद, धर्म, सम्प्रदाय, अध्यात्म अत्यादि विषयक चिन्तन अति सूक्ष्मताक संग ई उपन्यासमे ठाम-ठाम सबर-भाषा आ हल्बक रिमरमे परिणति कएल गेल अछि ।

उत्थान-पतन- (उपन्यास) | SBN : 978-93-80538-11-2. प्रकाशिन- 2009
ग.मे ।

श्री बाजुदेव मण्डल ई उपन्यासक आत्मकथा छथि । ओ लिखै छथि- “गामक जड़ता, बीति-बिराज, पारनि-तिहार, मूर्खता, रिद्वता, अछि जागरना भार आ सहज स्रभार आदि सहज कपमे ई उपन्यासमे आएल अछि ।

कथारसुतमे रिच्छिन्न होगत गाम-घर आ छुटैत परिवार, सरहक समस्याक मार्मिक ठगसँ अतिरिक्ती कएल गेल अछि । उपन्यासक प्राबल्य होगत अछि- ‘गामे-गाम, कतौ अष्टयाम-कीर्तन तँ कतौ नराह, कतौ चण्डी यज्ञ तँ कतौ सहस्र चण्डी यज्ञ होगत । जगठाम एगारहठि ग्रह एकत्रित भऽ गेल अछि । तगठाम तँ अन्नमानो कस्य रहत । परोपस्था भगरानक नामसँ गदमिसान होगत । जाधरि लोक कीर्तन मंडलीक संग मंडपमे कीर्तन करैत ताधरि घरक सब स्त्री-बुद्धि रिमरि मस्त भऽ बहैत । मद्रा घबपर अरिह... रछाकेँ रागस-रैवठि लेल हुनकर स्त्री रथारकेँ दरेत सब आँखि नोब होगत रहैरैत ।’ सामाजिक उत्थान कबऽ रैना रैकतीकेँ गामक एहि पबम्परा आ धार्मिक आडमूरबसँ संघर्ष कबऽ पड़ैत अछि । लेखक अपना पात्रक द्वारा अंधविश्वासकेँ तोड़ि परिवर्तन अनरक प्रयास कएने छथि ।”[3]

ई उपन्यासक भाषा गाम-घरक रौर-चारक भाषा अछि । साधारण जनक रौरी आ नूतन शिर्दक प्रयोग ई उपन्यासमे प्रचुरताक संग देखल जा सकैत अछि ।



जिनगीक जीत- (उपन्यास) | SBN : **978-93-80538-10-5**. प्रकाशन- **2009**

झ.मे ।

अदोसँ मिथिला श्रमजरी, तियागी महाप्रबन्धक बाज बहन छि । ब्यक्तिक विकास समाजक मौलिक काजक श्रेणीमे अरैत छि । एकव चित्रा लेन उपन्यासकाव देरन नामक पात्रक अरतावणा करैत छि । सोन तँ कान नै..., रँना संकष्टपब सजग मिथिलानी स्वमित्राक रैरहाव आ रिचाव सहजताक सर्ग सहज रैनरैत छि । जेकब चित्रा अत्यन्त रोचक आ मार्मिक ढंगे प्रस्तुत कएन गेल छि, जे उपन्यासमे पठनीयताक स्तर रैठरैत छि । स्वमित्रा आ हुनक पुत्र रँछे नान जे शिक्षक छथि तिनका सर्ग अछ्छेनान जे रौनिराव बँह छथि, दुनु परिवारक सम्वन्ध ई तबहँ स्थापित होगए जेकब एकठा नर आधार-आर्थिक आधार-क पबिकरपना स्वमित्रा द्वारा कएन गेल । तबक सफलता उपन्यासकाव ई तबहँ देखोनि जे आजुक रिचावणीय रँन्दू छि ।

जीरन-मर्षा- (उपन्यास) | SBN : **978-93-80538-26-6**. पहिल प्रकाशन- **2009** आ द्वितीय- **2012** झ.मे ।

चिड़ सदृश जीरन-पद्धति संयुक्त परिवारक महत्त्वकें तहस-नहस कइ देने छि । उपन्यासक पात्र डा. देरनन्दन जे मिथिलासँ राहब बँह छथि, माए-पिताजीकेँ सेहो ओहि बखने छथि । पिता-बघुनन्दनक मृत्यु भइ जाग छन्हि । मेडिकलमे पठैत दुनु पुत्र सलाह दग छन्हि ओही शिरदाह गृहमे दाह-संस्कार होन्हि । गाम जेराक कोनो प्रयोजन नै । झुदा डाक्टर देरनन्दन कह छथिन-

“रँचा, सब जीर-जंतुकें अपन-अपन जिनगी होगत छि । जे जग जिनगीमे जीरैत छि ओकरा लेन रह जिनगी आनन्ददायक होगत छि.... । ”[4]

पिताक रात अनि दयानन्द प्रकटथिन-

“झ तँ रँड आश्चर्यक रात कह छी, रँबू ? ”

दयानन्दक जिज्ञासा देखि देरनन्दन कहथिन-



“कोनो आश्चर्य नै । गामक दोसब नाँउ समाजो छिई । जे शिहब-रँजाबमे नै छि । समाजमे रँधन छि जग अन्तक लोक चलेत छि जेकबा सामाजिक रँधन कहल जागत छै । ए रँधनक भीतव धर्मक काज छिपर छि जेकबा सब मिनि निर्माहित छि । झुदा शिहबमे से नै छै । कानून-कायदाक हिसारसँ चलेत छि जगमे दया-प्रेम नै छि । प्रतिदिन रूढ़ि केँ दस गोठेक जिनगीक रात सनरँ आ दस मिनट रँजेक जे अत्रास रंगि गेल छि से एठोम केना हेतनि । सब अपन पाछु रँहल बँह । के केकब स्वथ-दूथ, जीरन-मवण सनत । भवि पैठ नीक अल्ल-तीमन थुँने लोकक मन अस्थिर थोड़ै बहि सके । जापरि आमोक संतुष्टि नै हेतैक ? ”[5]

अही तबहँ उपन्यासक आवम्भ होगत छि । ई उपन्यासक केन्द्रिय पात्र बघुनंदन छि । जिनकब कथा-रथथा आदिक श्रुतथात हुनक मृत्यु दिनसँ श्रुत होगत छि ।

जीरन-संघर्ष- (उपन्यास) । SBN : 978-93-80538-27-3. पहिल प्रकाशन- 2009
डा. आ दोसब 2012 छामे ।

ई उपन्यासमे ग्रामीण समाजक एक-एक तन्त्रकेँ दृष्टिपात करैत विकासक राधक ओमवीकेँ सोमबरेक सफल प्रयास भेल छि । सामाजिकताकेँ कमजोर करैक जे कोनो काबक छि तकब चित्रण करैत यथोचित नर राँठ देखैक सफल प्रयत्न उपन्यासकाब केन्द्र छि ।

“सब गाममे दस-रसिठा ब्रह्मा-वम्प छि बहि छि । जे सदिकान किछ नै किछ उकठ समाजमे कबिते बँह छि ताड़ि-दाक पीर अनेर ककरो गबियरैत बँह छि । माए-रहिनकेँ देखि पीरकाबी भरेत बँह छि । नूठ-हुस सिखा नकठा नगरैत बँह छि ओहन-ओहन वृत्ति केनिहाबक वृत्तिकेँ लोकक समाजक दायित्व रनि जागत छि हमर सँह नै केनो जँ दुर्गा-पूजामे वामेश्वर नै गेल बहिनो तँ एहेन घटना थोड़ै गाममे होगत... । ”[6]

“...रैसारेमे किछ चक-चक भँ गेलै । समाजोकेँ धन्यवाद दी जे गगत काजक सिरोपमे एकजुट भँ ठाढ़ भेल । झुदा गगतियो केनिहाब तँ रैसथेक हुन-हुन छी, तँ ओहो कमजोर नहिये छि । ”[7]

प्रा. दयानन्दक रात सनि प्रा. कमलनाथ कहलथिन-



“देथियौ, कोनो स्थानपर पहुँचैले बस्तो अनेक आ सर्रावियो अनेक तबहक होग छै झुदा चरनिहार जूँ यएह सोछैत बहि जाए जे आ नीक कि ओ, तहन ओ पहुँचि केना सकैत अछि अपना अलाकाक दुर्भाग्य बहन अछि जे रिचावक क्षेत्रमे पैघ-पैघ रिचाव कइ लग छी झुदा कर्मक रैबमे शिथिल भइ जाग छी। कोनो रिचाव तापरि महत्तरक ले रैनेत जापरि कर्मकपमे ले आ गत...।”[8]

रिकासरादी प्रक्रियामे प्रगतिशील चेतनाकेँ जोड़ि ओगमे नर गति आनि मिथिलाक सुदूर गाम सिमौनी आ रसपुवाक जनजीवनक अत्यंत मार्मिक चित्र प्रस्तुत भेल अछि। महिला संग होगत अन्यायक चित्रण, रौढ़ी-रौदीसँ वसत जन-जीवन, धर्मिक लोकक कावनामा, प्राकृतिक रिपदा, अत्यादि अनेक विषयक दृष्ट्यारलोकन करैत उपन्यासकार सुन्दर चित्रण करन्हि अछि।

सधरा-रिधरा- (उपन्यास) | SBN : 978-93-80538-92-8.

नर हाग नाबीक नर-नर सन्दर्भक संधान केवल अछि। आधुनिक चकाचौंधसँ अपविचित महिला, गवरीक जालमे फँसल महिला, पलायनसँ छुटैत समर्थनक स्रल भेल कोठबीमे गुनागत महिला, रिधरा आ सधरा नाबीक समस्या अत्यादि-अत्यादि प्रकारक नाबीक बुनियादी समस्या सरहक चित्रण कएल गेल अछि। सरोजनी-मैयाँ आ ककुमिणीक किछ कथोप-कथनपर नजरि देल जाए-

“ककुमिणी, मनमे ठूठि गेल छल जे पैगतीसे रैथिक अस्थायमे रिधरा भेल बही आ अहँ केँ देखे छी जे अही उमेरमे पतिसँ समर्थन रिच्छेद भेल।”

मैयाँक रात सुनिने ककुमिणी चमकि कइ चमचमेनी-

“मैयाँ, हिनकर अखन कते उमेर छन्हि ?”

“सुबिम छी।”

“पबिरावमे के सुब छन्हि ?”

“कियो ने। असकरे।”



मैयाँक अस्करव अस्नि ककुमिणीक मनमे ठहरक अपनो जिनगी तँ भविसक तहिना अछि ।
 राजनि- “अस्करव जेन लोक घब-दुखार रैना किअए बहत, ओ परिवार केना
 भेन ? ”[9]

रङ्गी रङ्गि- (उपन्यास) । SBN : 978-93-80538-93-5.

मनोरिक्तानक घात-पविघात ओव अन्तरिरोधमे कृतागत-पिमागत नावीक अत्यन्त
 सरेदनशीलताक रर्षि ई उपन्यासक मध्य भेन अछि । नावीक ओहन-ओहन समस्या जे
 प्रायः चिन्तित नै भेन अछि । तकर सरहक चित्रण ई उपन्यासमे देखल जा बहन
 अछि । रसमतिआ दीदी आ स्रोचना रङ्गि जे दू एक उमेरिये छथि । रसमतिआ
 दीदीकेँ देखिते स्रोचना रङ्गि पछे छथि-

“साने भविमे एते गेटैक गेलै ? ”

दूनुक जिनगी रङ्गिसेँ एकठाम रीतने रङ्गिमे कोनो कमी बहरै नै कबए । निधोक भ२
 रसमतिआ दीदी रङ्गी- “तू नै भाए-भातिजक कमेनहा था क२ गेड़ । रङ्गि गेलै,
 हमरा के देत ? ”

स्रोचना- “किअए भगरान तोबा थोड़ै रैपाठ छथुन जे नै देनिहाव छै ? ”

रसमतिआ- “हँ से तँ अछिये, झुदा जएह कमाएत तेहीमे नै देत । अछुदा, कह
 जे छुँदाहा नग कज्जी नै तँ बहनौ । नीक जकाँ हज्जी जूँ छै गेलौ किने ? ”

“हँ । आरँ तँ रौन्हीनो उठरै छी, पोतोकेँ कोरो-काँथमे न२ क२ खेनरै छिई ।
 अपने गाड़ी यो छी, आरँ गामेमे बहरँ । ”

“ई उमेरमे अस्करे बहि हेतौ ? ”[10]

अन्धधन्यी अकास- (कविता संग्रह) । SBN : 978-93-80538-46-4. प्रकाशन 2012
 ई ।

लोक मिथिलासँ राहब पलायन करैत छथि तँ मन्दनजीकेँ कटोछै होगत छन्हि । झुदा
 जखन लोक मिथिलासँ सफे बिस्ता-नाता समाप्त क२ आनठाम रैसि जाग छथि तँ मन्दन



जीक द्वाद ए जेना भोकावि पाड़ा-पाड़ा कान ए नगैत छन्हि । ई रातक सहज
खनभूति उड़ा आएन चिड़-मे पबित्रकित होगत छिट्टि :

“उड़ा आएन चिड़-क ठेकाने कोन

उड़ा कत२ जा रास कबत ।

भवि पोख घोघ भवते जत२

दिन-राति जा बास कबत ।

ओहन चिड़-क आशि कोन

जे रिसवि जाएत डीहो-डारव ।”[111]

“देखू । देस पवदेस कतौ जाडू झुदा अपन माष्टि आ अपन संस्कृतिसे अपनारो रिझख
ने कक । शायद यह रात थिक ई करिताक मूर । अगव आँखि मुनि पनायन करैत
बहरै आ अरसब एर सफलता मात्र पैरौक कावणो अपन डीह-डारव सदाक नेन बाणि
नेरै तँ भना अहाँ केहेन मनुख । अहाँक केहेन संस्कार ? छोट करिताक माध्यमसँ
कतेक पैघ आ मर्मक रात रँजैत छिट्टि जगदीश प्रसाद मन्दन केव करि मोन ।
समाजशास्त्रक push आ pull factor अतए स्रतः आरि जागत छिट्टि ।

एक आव करिता- “चर रे जीरन” अहाँकेँ लोकि नेत । करिता पढ़ू, ओकव शिष्टक
हास्यकेँ देखू आ करिताक संग अपन-अपने गतिमान रँना नीख । ने करिता ककत
आ ने अहाँ । करिता पढ़ूत जाडू कम्पना संसारक दुनियामे घुमैत जाडू । अलंकारसँ
मतभिन्नता भ२ सकैत छिट्टि झुदा करिताक प्रवाहमे तँ प्रवाहित भगये ठा जाएर ।
राह रे राह । एहेन आसाधारन स्रष्टा करिता आ पाठकक रीच । जीरन गतिशील
थिक । ए रात अनेको करि अनेको भाषा आ कारणे अपन-अपना ठगसँ करिताक
माध्यमे कहने छथि । झुदा अही रातकेँ सरहाबाक शिष्टारनीसँ कहर । कहर की चलेत
पहियापव एना रँसाएर कि पाठककेँ जोशि आरि जागत । ए कता मण्डन जीमे
छन्हि । करिताक किछ अशि देखू :

‘किछ दैतो चर किछ लेतो चर

किछ कहितो चर किछ स्निहो चर

किछ समेठतो चर किछ रँष्टो चर



किछु बखितो चर किछु फेकितो चर

रिचो-रीच तू चरिते चर ।

चर रे जीरन चरिते चर ।

समए संग चर

भृत संग चर

गति संग चर

मति संग चर ।

गति-मति संग चरिते चर ।

चर रे जीरन चरिते चर ।”[12]

“है, करि केरन गतिमान होमाक प्रेक्षा ठी नै दैत छथि । ओ कहैत छथि जे जोशी संगे होशिये बद्ध : गति संग चर/ मति संग चर/ गति-मति संग चरिते चर ।

अही तबहै जान आ गानक उपमा नह करि लोककेँ अगाह करै छथि : जहिना जान सब तबहक माँकेँ पकड़ैत अछि, पबलु अगब मल्लह जानकेँ ठीकसँ नै ओछेकर आ कार्रुमे नै केकर तू जान फाँट जागत छैक, माँकेँ भागियो जागत छैक । तहिना मनषाकेँ अपन रौलीपब सयम कबक चाही-

शेछ,जान छी महान

जगमे समष्टि महान

देखेमे जहिना रिकवान

तहिना अछियो महान ।

सब किछु भेष्टत आँखियेमे

सब नष्टकर अछि जानेमे



सभ किछु छै गानेमे... । ”[13]

जान करिता छायावाद आ याथार्थवादक रीचक करिता छि । जानक अनेक यंत्र तथा जानसँ माँछ माबरक प्रक्रियाकेँ मूल मानि एक देसी करिताक रियास कबरक अनुपम स्मृता करिमे छन्हि ।

बाति-दिन- (करिता संग्रह) । SBN : 978-93-80538-73-0. पहिल प्रकाशन **2012** छामे ।

मैथिलीक नर करिताक निबन्तव विकासमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डल पूर्ण निष्ठा आ तत्परीताक संग ई विकास कर्ममे संगन छथि । दोसर करिता संग्रह 'बाति-दिन' थिक । ई पोथीमे **52** गेष्ट करिता संकलित छि ।

करिता भार, रूषि कल्पना आब शैलीक समन्वित परिणाम थिक ।

ई गुण आदिसँ अद्वैत मानस सृजनक गम्भीर, सचेत प्रक्रियासँ संचालित भऽ सकैत छि । तग कावशे करि अत्यधिक संवेदनशील होगत छि । हरक कानारधमे मनुष्यक अन्तस मनमे अतीप्सा पालित-पोषित होगत बहै छै आ ओगपब जखन तुषारपात होग छै तँ जन मानस आन्तरिक वेदनासँ भवि जागत छै । मोह भंग भऽ जागत छै । रक्तिक अन्तसँ उपजे छै । रिदाह, कूठा, आकाशि, संवास, स्फूर्ति, आत्म बल्लाक सँगादि । अही संरक्षक अभिव्यक्ति मैथिलीक नर करिता थिक ।

मण्डलजी सन संवेदनशील करि जे ई यथार्थकेँ भोगने छथि से केना छुप्प बहि सकैत छथि । हुनका लेखनीसँ तँ संघर्षक सब निकलै कबतैक ।

“जिनगीक होगत संघर्ष ।

सीमा रीच जखन अरैत

मचरैत नैत दूब-घर... । ”[14]

मनुष्यक बीत-नीत आ रैरहाबमे कतेक परिवर्तन भऽ गेलैक छि । रैदलेत जुग-जमानापब हिनकर कहै छन्हि-



“जूग रँदतन जमाना रँदतन

रँदति गेल सभ बीति-रँदतन ।

छानि-छानि सेहो रँदति गेल

रँदति गेल सभ आचाव-रिचाव...”[15]

अंग्रेजी भाषापव शिर्दक प्रहार करैत कहैत छथि-

“अंग्रेजी पढ़ा अंग्रेजिया रँनि-रँनि

पप्पा-मम्मी आनत घब ।

रौप-दादाक कि भेद ओ रूमत

अछि -अछि रौजत निडब ।”[16]

सतरेंध- (करिता संग्रह) । SBN : **978-93-80538-94-2**. पहिल संस्करण- **2012**
आमे ।

मण्डनजीक अनेक करिता संग्रह मध्य सतरेंध करिता संग्रह सेहो एक अल्पम कार्य संग्रह अछि । मनुक्खक आ स्रुतार बहलैक अछि जे नीकक जिम्मा लेगमे तैयार बहत झुदा अधराक भाव से चाहे ओकरे केनहा कि एक ने होड, ओगसँ कात भेज जाएँ पसन्द करैत अछि । ई परिपेक्ष्यमे करि कहैत छथि-

“अपने हाथक खेत मीत यौ

अपने हाथ खेत ।

संगे-संग दू चले ।

अजोत-अन्हाव रँनैत बहै ।

हँसि-हँसि कानि-कानि



पठका-पठका करैत बहै । ”[17]

मनुक्खक जिनगीमे ब्याप्त जे कोनो नीक-बैजध होएछ तकर जिम्मा करि सूर्य
मानरपर केन्दित करैत छथिन्ह । आगु एहो कहैत छथिन्ह जे-

“के केकर हित के केकर हृद

दिन-राति देखैत बहै छी ।

गबदनि पकड़ा जे कानए कनपए

पकड़ा गबदनि तोड़ैत देखै छी... । ”[18]

यथार्थवादी चित्रणमे ओ कतेक सजग अमानदाब छथि तकर उदाहरण स्पष्टतः करैत
कहै छथि-

“हित रनि मिनि संग चले

हृद रनि-रनि ढाँढैत बहै ।

सोममतिआ चाँचि पकड़ा -पकड़ा

माँखुब-रौन ओमरागत बहै... । ”[19]

गीतांजलि- (गीत संग्रह) । SBN : 978-93-80538-72-3, पहिल संस्करण- 2012
ई. ।

51 गोष्ट गीतक संचयन थिक गीतांजलि । गीतांजलिक एक-एक गोष्ट गीतमे भेन
शेर्दक प्रयोगसँ सहजहि बूझागत छै जे एक गोष्ट रिश्ति शेरद-साधक कपमे श्री
मण्डनजी स्थापित भेन छथि । रिश्ति-रिश्त तँ रैस सम्हनि कहै अखतियाव करै छथि
जेना-



“डगडगाएन हान पारि डुसब
हुन डुसब सिबजेत बह डे ।
घुबि तकि नै भवमए भौवा
दिरा बसराज कहरैत बह डे ।
हान-रैहान देखि बाग-बागनिक
रुशेन हुन..... । ”[20]

तीन जेठ एगावहम माघ- (गीत संग्रह) । SBN : 978-93-80538-88-4, पहिल
संस्करण- 2012 ए.मे ।

74 गौठ गीत-कार्यक समायोजन “तीन जेठ एगावहम माघ” पोथीमे केने छथि । ई
पोथीक समर्पणके देखन जाए-

“मिथिलाक बृन्दारनसँ न२ क२ रौबुक टेबपब रैसन

हुनराड १ नगौनिहाबकेँ एरं नर रिहान खननिहाबकेँ समर्पित । ”[21]

समर्पणक भारसँ सेहो रहूत किछु स्पष्ट सहजे भ२ जागत अछि । प्राप्ति रणनमे
हिनक नर प्रतीक एरं रिमर द्रष्टर्य अछि-

“थन-कमन जकाँ कहियो

गाठ-नान-उज्जब रने डे ।

तहिना हुन-हन कोठा जकाँ

मवि-मवि कोनो हनो रने डे ।

गाछक बंग रदनि बहन डे

मौसम संग... । ”



“...रिन्न तनने घोकचि-मोकचि जौं

जाड माघ खरैत बह डै ।

चैतक चेत चेतौनी ओहिना

सिब जेठ धड़त बह डै ।

दीनक दिन केना... । ”[22]

सकिता- (गीत संग्रह) । SBN : 978-93-80538-94-9. पहिल संस्करण- 2013 ई. ।

ई पोथीमे 51 गौष्ट गीत संकलित छै । संकलित गीतमे “आजादी”, “समाज”, “खरिते खगहन”, “मोनेमन”, “खरिते आंगन”, “चाननि-सूप” आत्यादि गीतमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डनक बचना-रैरिष्य सहज द्रष्टर्य होगत छै । आजादिक गवमाहट, सामाजिक रिद्धपता, प्रकृति सौन्दर्य, मानवीय मनोरिज्ञानक संग-संग मानवीय त्रासदीक कप-रैरिष्य ई संग्रहक रिशिष्टता छै । खगहनक स्वप्ना द्रष्टर्य छै-

“खरिते खगहन ओस ओसा धड़ धवती धड़ए नगै डै ।

चब-चाँचब आँचब पकड़ि उजाहि सिन्नी चबए नगै डै । ”[23]

मिथिलाक रैष्टी- (नाटक) । SBN : 978-93-80538-03-7 पहिल संस्करण- 2009 ई.मे ।

“मिथिलाक रैष्टी नाटक ‘कर्म प्रधान रिश्र करि बाथा’ सिद्धान्तक आपावपव लिखल गेल छै । एकठा कर्मठ आ अमानदाव र्यक्तिकेँ समाजमे की-की सहय पड़त छै, ओग परिपेक्ष्यक मार्मिक चित्रण कएल गेल छै । कथाक मूलमे कर्मनाथक रिखाह अममे आएल एकठा गबीर (चमेरीक पिता) र्यक्तिक मनोदशीक प्रसन्नति नीक छै । ओ र्यक्ति गबीर छथि अदा चारकि दर्शनक पातक । पैष्टमे खट नै सिहमे तेन जेरीमे कैचा नै अदा नख हलाक रैष्टी जेगमे भोगक रसतु छनिया स्वपावी पान आ तमाकू । हमरा सरहक गाममे एनो होगत छै, भोजन नै अदा, पान खरिष्य । पग-पग पोथवि माड मथान... मधुब रौल अस्की अथ पान... केना पढ़नक, नै पता,



कनियारै पथ्य भेटैत नै जने छी, रैठौक जेन दुध थछि... नै । झुदा । पान
अतिआरक्षक, हाथी मवि गेल, सिक्कि बर क२ रौखा बहत छी । कर्मनाथक अपन पनी
चमेरीक संग रातनिपमे “अष्टव ककाक तबंगक दर्शन होगत थछि । गाममे प्रचलित
लोककौतिक हास्य झुदा, सत्य प्रस्तुति । ”

“बामरिनास जीरनक अंतिम पड़ा रमे माधुवीसँ माने अपन पनीसँ अपन जीरन-यात्राक
रयाख्यान करैत छथि, आशिर्च्यमे पड़ा गेलहुँ । जिनका संग चालीस रँथक यात्रा
कएनि ओ हिनक जीरन दर्शन नै जनेत छलीह । हमबा सरहक समाजमे एते प्रकारक
घटना होगत थछि । गरीब नैनपनक रौद सोने प्रादुर्भाव जागत छथि । जे
कर्मरदा छथि हुनक अंतिम अस्थि स्थाय नै तँ..... । अपन कर्मक नारकै कलकत्तामे
मजदूर क२ सोने गाम आरि जागत छथि । मातृभूमि प्रति सिनेह, गामेमे गैरेज
खोलराक योजना थछि । चौघाबा घब रँनाएर, दान अरक्ष बहत, किएक तँ दान
समाजक मर्यादा थिक गामक जीरन शिबसँ स्थायी थछि । एते पोथीमे पलायनवादक
विरोध कएन गेल थछि । ”[24]

कम्प्यागज- (नाटक) । SBN : 978-93-80538-44-0 पहिल संस्करण- 2012
ग.मे ।

अंक रिहिन 13 दृश्यमे विभक्त ग नाटक थछि । ई नाटकमे रैस समूह क२ नाटक-
कथाक समायोजन केतन्हि थछि । पलायनसँ भेल मिथिलाचलक ऋषि-कार्यक मध्य
रौप्यप नर चेतनाक संग नर रौठ अस्थित्याक केतन्हि थछि । ई नाटकक पात्र छथि
नसीरतार- किसानक अग्रणी, सुकदेव, मनचन, सोमन आ बामरूप- रैठेदार, कर्मदेव-
बी.ए. पास हारक, प्रा. ऋषादेव, दिनेश- मैथिलिक छात्र, शिरीषक- रौप्य-दमक
एजेण्ट, घनश्याम- रैठे मैनेजर, रौठार- नौक, मनमोहन- अंतर्निध, सतोष-
अर्थिकज्ञ, प्रेजुएण्ट, डा. बघुनाथ- सेरा निरुत डाक्टर । नारी पात्र- अन्नबाबा- डा.
बघुनाथक पनी, सुधा- ऋषादेवक रैठे, शान्ती- पांचायत झुथिया, आभा- शिक्षिका एर
सोनिया- सुकदेवक पनी ।

समेविद्या रिखाह- (नाटक) । SBN : 978-93-80538-45-7, पहिल संस्करण-
2012 ग. ।



समेतिआ रिखाहक समेतिआ जिनगीक स्राभारिक बग परिवर्तनसँ उद्धृत अछि, तँए जीरनक सामान्य गतिरिपिक चित्रण चलि बहल अछि कथाकेँ रिना नीबस रनेने । नाटकक कथा विकास रिना कोनो रिहाडि क आगू रँठत अछि, झुदा लेखकीय कोशिल सामान्य कथोपकथनकेँ रिशिष्ट रनरैत अछि ।

“नाटकक सातम दृश्य सभसँ नमहब अछि, झुदा रिखाह पुरी रब आ कन्यागतक सिका-तीबी आ घटकलाय द्वारा रँबियाती गमनक रिभिन्न बसगब प्रसंगसँ नाटक रौमिल नै होगत छैक । आ घटक लायपब पियान देरै, पूरा नाटकमे सभसँ रेंशी झुहारबा, लोकोक्ति, कहलैकक प्रयोग रएह करैत छथिन । मात्र सातमे दृश्यकेँ देखल जाए-

“खबमास (रैसाथ जेठ) मे आगि-ढागक डब बह छै ।” (खनुभर के रँहाने रात मनेनग)..... । ”

“प्रकष नाबीक संयोगसँ सृष्टिक निर्माण होगए ।” (सिद्धांतक तरे पियान मूररिदूस हठैनग)..... ।

“आगूक रिचाब रँठरैसँ पहिले एक रैब चाह-पान भइ जाए ।” (भोगी आ नारूप समाजक प्रतिनिधि)..... ।

“जग काजमे हाथ दग छी ओग काजकेँ कगये कइ छोड़ छी ।” (गरौजि).....

“जिनगीमे पहिल रैब एहेन फेबा लागल ।” (कथा कहरैसँ पहिले पियान आकर्षित कवरौक सफल प्रयास)..... ।

“आग पीरैक रैरो भइ गेल आ देहो हाथ अकड़ि गेल.....”[25]

पाँचरुपी- (एकांकी संचयन) । SBN : 978-93-80538-41-9 पहिल संस्करण- 2012
ग.मे ।

पाँचरुपी एकांकी संग्रह थिक । संभवतः तँए पाँचरुपी नाँउ बाखल गेल अछि । सतमाए, कल्याणी, समेतिआ, तामक तमयेल आ रिवांगना नामक एकांकीक संचयन अछि ।

सतमाए शिर्दसँ सामान्य जनमे जग भारनाक रेखांकन होगत अछि तँसँ भिल ओकब रिशेषतापब दृष्टिपात “सतमाए” एकांकीमे कएल गेल अछि ।



“तामक तमघैर” प्राचीन एरं नरीन नाबी जीरनक दस्तारेज छटि । पतिक मृत्युक पश्चात अपन एरं सन्तानक जीरन हेतु संघर्षवत पनी तथा मैथिल समाजमे रिपरा एरं सासु-पुतोहक रीचक खाधि अादिक मर्मस्पर्शी चित्र ई एकांकीमे चित्रित छटि । पाँचरुपी रासुतरमे मैथिली एकांकी रिधाक अरिस्मरणीय संग्रह छटि ।

संक्षिप्त परिचयक क्रममे हमबा लोकनि हिनक अथन तकक सृजित-प्रकाशित साहित्यपर दृष्टिपात कएत । रक्षित भेल जे श्री मण्डन जीक अथन तकक गद्य-एरं-पद्य साहित्यक श्रीरूहिमे अहम यागेदान छन्हि । गद्य साहित्यमे, लगभग सात दर्जन रघुकथा, लगभग पन्द्रह दर्जन रिहनि कथा तीन गोष्ट दीर्घ कथा, सात गोष्ट उपन्यास, तीनठो नाटक तथा पाँचठो एकांकी अथन तक प्रकाशमे छटि ।

तहिना पद्य साहित्यमे सेहो रैस योगदान छन्हि । “अनूपनृषी अकास”, “बाति-दिन”, “सतरैध”, “गीतांजलि”, “तीन जेठ एगावहम माघ” तथा “सविता” नामक पद्य संग्रहमे 31 दर्जन करिता तथा गीत संग्रहित छटि । एकब अतिरिक्त उत्सृष्ट रिषय जेना “अरतावरद”, “संस्कार गीत”, “उपन्यास साहित्यमे गामी चित्रा” पर कएक गोष्ट निरूप सेहो प्रकाशित छन्हि । श्री मण्डन जीक धारणा छन्हि जे जारै धरि मनुख स्वपत कमाय कमा अपन जीरन निधरिबत नै कवता तारै धरि हरा-रिहाड़ि मे भूसरै कवता जगसँ जिनगी पूर्तिासँ हटैते बहतेक । तँए अपन जिनगीरै अपना हाथमे ल२ क२ जे जीरन-यात्रा कवता रहल जिनगीक सही बस पीर रिहाबी रनि रुज रिहाव कवता । “बिदेह प्रथम पाक्षिक मैथिली अ-पत्रिका (www.videha.co.in)” पर हिनक सभ बचना श्री गजेन्द्र ठाकुर जीक राखै होगत बहल छटि, तही अशिक संग हम सभ आशान्वित छी जे अही गतिसँ श्री जगदीश प्रसाद मण्डन, जे हमबा सरहक रीच जाज्रन्यमान नष्कत्रक रूपमे छथि, आगुओ अहिना बचनावत् बहता तथा श्रुति प्रकाशिन, नग दिवली, अहिना हिनक बचना सभकै सोना अनेत बहए ।

सम्पर्क-

ग्राम-पोसुठ- निर्मली, राउ- नं. 06

जिला- सुपौल

मोबाईल- 8539043668



-
- [11] मौनागत गाढक बून उपन्यासक पङ्क्तिना करब पृष्ठ- अतिम
- [12] गामक जिनगी कथा संग्रहक पङ्क्तिना करब पृष्ठ- अतिम
- [13] उत्थान-पतन उपन्यासक आह्वान, पृष्ठ- 5
- [14] जीरन-मवण उपन्यास, पृष्ठ- 7
- [15] जीरन-मवण (उपन्यास), पृष्ठ- 07
- [16] जीरन-संघर्ष उपन्यास, पृष्ठ- 48
- [17] जीरन-संघर्ष उपन्यास, पृष्ठ- 48
- [18] जीरन-संघर्ष उपन्यास, पृष्ठ- 48
- [19] सधरौ-रिधरौ, उपन्यास, पृष्ठ- 05
- [1.10] रँडकी रँहिन- उपन्यास, पृष्ठ-05
- [1.11] अन्द्र धनुषी अकास (करिता संग्रह), पृष्ठ- 30
- [1.12] अन्द्रधनुषी अकास (करिता संग्रह) आह्वान डा. कैलाश कृमाव मिश्र, पेज- 07
- [1.13] अन्द्रधनुषी अकास (करिता संग्रह) आह्वान डा. कैलाश कृमाव मिश्र, पेज- 08
- [1.14] बाति-दिन (करिता संग्रह), “करिता-संघर्ष”, पृष्ठ-11
- [1.15] बाति-दिन (करिता संग्रह), “जुग रँदतल जमाना रँदतल”, पृष्ठ-12
- [1.16] बाति-दिन (करिता संग्रह, करिता- “घबक लोष्टियाँ बूढ़ने छुटि”, पृष्ठ-13
- [1.17] सतरेंध करिता संग्रह, “अपने हाथक खेत मीत यौ”, करितासँ, पृष्ठ- 13



VIDEHA

- [18] सतरैध करिता संग्रह, “किछ ने बूने छी” करितासँ, पृष्ठ- 7
- [19] सतरैध करिता संग्रह, “किछ ने बूने छी” करितासँ, पृष्ठ- 8
- [20] गीतार्जुन गीत संग्रह, पृष्ठ- 08
- [21] तीन जेठ एगावहम माघ (गीत संग्रह), पृष्ठ- 05
- [22] तीन जेठ एगावहम माघ (गीत संग्रह), पृष्ठ- 11
- [23] सबिता गीत संग्रह, गीत- अरिते अगहन, पृष्ठ- 15
- [24] “अंशु” (प्रबन्ध संग्रह) शिरकामाव ना ठिनु, पृष्ठ- 53
- [25] नमेलिया रिखाह (नाटक) आदिकार श्री बरि भूषण पाठक, पृष्ठ- 5

अ कनापब अपन मतलब ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



जगदीश प्रसाद मिश्र

रङ्गी रङ्गिन

(उपन्यास)

आगाँ...

सात भवि पछाति नूनसबक दुवागमन भेल । दुवागमन भेला पछाति साधना
सासुब एली । सासुबक बहन-सहन, घब-दुखाव देखि मनमे जरैबदस धक्का लगलन्हि ।



जे स्राभारिको छुनै । कतए अफसवक परिवार आ कतए एकठा छोट-छोटा गामक किसान परिवार । झुदा एहेन खाली साधनेक भेलन्हि से नै, धनेरोकेँ भेलो छन्हि आ होगतो छन्हि । ओना साधनाक अपनो (नैहब) परिवार गामेक छन्हि झुदा नोकरी भेले परिवारकेँ संगे बाँटीमे बसेत छला । बाँटीमे जमीन कान मकानो रना नेने छथि । अफसव-एस.डी.ओ बहने दोसो-महिम आ सरो-समरन्धी अगुआएन तँ छन्हिहै । ओना परिवारमे तीन भाए-रहिनक रीच साधना सबसँ जेठ (पहिल सतान) बहने दोसव-तेसवक लेन अतिभारकेँ सदृश बहथिन । झुदा रैथी तँ रैथी होगत, रिखाह-दुवागमनसँ पहिले धरि माए-रौपक घबकेँ अपन घब बुनैत । अपना गामसँ श्यामानन्द (साधनाक पिता) समरन्ध तोड़ा ये जकाँ लेनन्हि । कहने तँ घब-घबाड़ छन्हिहै झुदा बँहक घब नै । साधारण घब छन्हि जे किछ दिन पछाति गिब पड़न्हि, दोहरा क२ रनरैक खगता नहियेँ बुनन्हि ।

दुवागमनसँ पूर्व धरि झुनेसब परिवारक भावक रीच नै पड़त छला, झुदा पछाति पनी एने किछ जरूरदेही तँ भग्ये गेलन्हि । अपना ओते खेत-पखा नै जे गिबहस्तसँ जिरिकोपार्जन क२ सकैत छला, तग संग समाजमे पठन-लिखन संग हँसक जरबदस समस्या तँ जन्म लग्ये नेने छल जे जँ पठन-लिखनकेँ नोकरी नै भेलन्हि तँ समाजमे पीहकारीक पात्र बनियेँ जागत छथि । गाम-घबमे प्रचलित अछि 'पढ़ए हावसी, रैचए तेन देखु भाग कबमक खेन' रिन खेतरना जँ गिबहस्त रनि गिबहस्ती अपना लेत सेहो रात नहियेँ छै । जिरिकोपार्जन लेन केहेन गिबहस्ती चाली ओ तँ सरहक लेन संभर नै । खेतक खरीद-रिक्की होग छै, सम्पति छिई । ओना जेठ भाय जुगेसब नोकरी करैत छेलथिन । लोखब प्रागमवीक शिक्षक छला, झुदा अथुनका जकाँ नै सबकारी छल आ नै तेहेन रेतन । दुनु भाँग मिला परिवार नमहब छेलन्हिहै । जहिना सब पठन-लिखन रेरोजगारकेँ होग छै तहिना झुनेसबकेँ सेहो होगत छन्हि जे एतए नोकरीक आरदन कक, ओतए नोकरीक अन्तर्बन्धु दिओकक स्थिति तँ बहरै कबन्हि । ओना समाजमे (ग्रामीण अलाका) गनन-गुथन पठन-लिखनक संख्या झुदा जतरौ छल ओकरो नोकरीक अ शिा तँ नहियेँ छलै । आ नै अथुनका जकाँ सबकारी कार्यनिय छलै । ओना अथनो कम अछि । नमहब-नमहब पचायत छल, चालीस-चालीस, पचास-पचास पचायतक रीच रँलोक थाना छलै । तग संग सबकारी कामो-काज कम छल जेसँ सबकारी काजमे प्रवेश कबर कठिन तँ छेलैहै । रँलोकमे अफसवक नाँपव एकठा री.डी.ओ. बँहत छला । काजो कम, अलक अलार बहने खेवातक रँलरावा आ कोठक माध्यमसँ अमेरिकन गहमक रिक्की । चीनीक कोठ नै रनन छल । एक तँ चीनीक उपोदन नीक, दोसव खेनिहाव कम । तहिना सकुलो-कओलेजक संस्था सएन, 'गनन कठिया नापन मोव सदृश छल । जे शिक्षक काज



करैत छुना ओ सेरा-निरुत हेता तेकर पछातिये नर चेहवाक प्रवेशे हेतन्हि ।
रैकक लोक नाँउँ ठाँ सुनेत छन जे ओगमे कपेथाक लेन-देन होग छै ।

दुवागमनक किछु-दिन पछाति साधना नैहब गेली । अथन धरि पिता-श्यामानन्द
रैष्टी-जमागक घर-दुआर नै देखने । री.एस.सी. तड़का, शीबीसँ सरस्य सुनि रैष्टीक
रिखाह केतन्हि । तग समए रैष्टीओ (साधना) मैष्टीक पास केनहि बहन्हि । रिखाहो
समैसँ भेल छतन्हि । नैहब आपसीक पछाति साधना जखन सासुरक सब हार माए-
पिताकेँ कहतन्हि तखन पिताक मनमे जमागक नोकरीक प्रश्न उठतन्हि । अनेसबकेँ
बाँचीये रँजा केतन्हि । जमागक नोकरीक चर्च सगियो-साथी आ सरो-समरनरीक रीच
गप-सपक क्रममे कबए लगला । बाँची रिश्विरिद्यालयक केमेस्ट्रीक हेडक सोना सेहो
चर्च केतन्हि । दुनूक रीच घनिष्ठ दोस्ती । डेरो अगले-रंगरमे बहन्हि । हुनकर
(हेडक) ससुर हाग सकुन पलामुमे रँनौने छथि । ओना जंगल-माड़क अलाका पलामु,
झुदा छोट-मोट कसरा जकाँ तँ छेलैह । हुनका रूमर छतन्हि जे सकुनमे जे
सागस-ष्टीचर छुना, ओ छोट कऽ दोसर नोकरी कबए चलि गेल जेसँ सागस-ष्टीचरक
अभार छै । ओ होन कऽ ससुरकेँ पढतथिन । रिश्विरिद्यालमे शिक्षकक अभार बहरै
करै, अनेसबकेँ नोकरी भऽ गेलन्हि । दिनक १-१०-१९६९ अ.केँ निहाकति
भेलन्हि । रिश्विरिद्याल सबकारी नहियेँ भेल छन, झुदा कोठावी कमिशनक मजदूरी तँ
भगये गेल छलै । एक सए पाँच कपेथाक महीनाक नोकरी अनेसबकेँ भऽ गेलन्हि ।
नोकरीक समए पनी कओलेजमे पढ़ात बहथिन, तँए पिते अँठाम बहिलो छेलथिन ।
अपने असगरे पलामुमे बँहल छुना आ छुष्टीमे बाँची अरै-जाग छुना । ओना सागस
शिक्षककेँ सबठाम शूनि चलिने अछि जे मौका अनेसबकेँ भेटैतन्हि । एक तँ ग्रामीण
जिनगीक जीवन स्तर, तगपब अरिक्सित अलाकाक नोकरी, रीचत नीक होगत
छतन्हि । किछु-दिन पछाति बाँची चयेमे जमीन कीन अपन घर सेहो रँना केतन्हि ।
मकानसँ किछु कियो आरैए लगतन्हि । अपन पैतृक गाम अनेसब छोट यै जकाँ
देतन्हि । कहियो कार रँहिन-सुलोचनाकेँ कपड़ १ आ कपेओ पठा दग छेलथिन झुदा
आरा-जारी नहियेँ जकाँ छतन्हि ।

हाग सकुन शिक्षकक लेन ट्रेनिंग कवर जकर छन । ट्रेड-आ-अनट्रेड
शिक्षकक रीच रेतनोक अंतब छलै आ रँना ट्रेड शिक्षककेँ स्थायी हेरामे सेहो राधा
छलै । अनेसबक निहाकतिक दु सार पछाति मावराड १ कओलेज दरभंगामे ट्रेनिंगक
पढ़ाग शुक भेल । दसे मासक कोर्स । डोनेशनपब एडमिशन होगत । जे
पढ़ागक समए (सेशन शुक भेला रँदो छह मास धरि एडमिशन होगते बहल ।) चाब
मास पछाति अनेसब एडमिशन केतन्हि । डरै मासमे ट्रेड भऽ पुनः पलामु जरागन
कऽ केतन्हि ।



उना उग समथ नावखंड नगा रिहाव डन । बाज्योक स्थिति दु भागमे रिभाजित । उतब-रिहाव आ दडिन रिहावक स्पष्ट अन्तव अछि । दडिन-रिहाव (नावखंड) मे खेती-पखारी कम होग छै । खेती जोकव माष्टयो कम छै । कम स्केव उपजाडु अछि । पहाड १-जंगनक गलाका । उना खनिज सम्पदा प्रचुर मात्रामे अछि । ज्येनारस न२ क२ अरबख पबिक खान अछि । जखन कि उतब रिहाव गंगा-ब्रह्मपत्रक तनहरी मैदान छी । पहाड जंगन नहिये जकाँ छैक । उना गाडी-रिबडी पर्याप्त अछि झुदा पहाड १ नकड १क ले ।

खनिज सम्पदा बहने दडिन रिहावमे देशी रिदेशी पूँजीपति आ सबकारियो कारोबार पर्याप्त मात्रामे छै । बंग-बंगक खनिज-सम्पदा, उँए रिसत्रत रुपमे कारोबार चलेत अछि । देशी-रिदेशी पूँजीपति आ सारजनिक (सबकारी) कारोबार बहने रोजगारो रहुतायत अछि । झुदा जंगली-पहाड १ गलाका बहने स्थानीय मूल रासीक रीच शिक्षाक प्रचार-प्रसार कम भेल अछि । साधारण-सँ-कृषि श्रमिकक सृजन नहिये जकाँ अछि । साधारण मजदूरक रुपमे बहन अछि । झुदा उतब रिहाव पठ-लिखेमे अग्रगण्य । जगसँ कृषि श्रमिकोक संख्या रैसी । उँए उतब-रिहावक पठ-लिखल लोक दडिन रिहाव जा नोकरी कवए नगला आ घर-दुआव रँना रँसि गेल छथि । अगिलो पीढ़ीक लेल जरीकोपार्जनक उपाय रँनिये गेल छन्हि ।

उतब रिहावक अर्थात् मिथिलाचलक ग्रहो दुर्भाग्य बहन जे ऋषि प्रधान स्केव होगतो पहाड १ नदी ततेक अछि जे स्केवके नष्ट क२ देने अछि । उना तीन रुपमे धार प्रवाहित होगत अछि । किछ धार एहेन अछि जे मात्र रँवसातक मौसममे प्रवाहित होगत अछि आ पछाति सुखि जागत अछि । प्रवाहित होगत किछ धार एहेन अछि जे असुखिसँ रँहत अछि, काँठ-ढाँठ नहिये जकाँ करैत अछि । हजारो रँखसँ एके स्थानपर रँहत अछि । किछ धार एहनो अछि जे काँठे-ढाँठ रँसी करैए आ उपजाडु माष्टिके रँबसँ भवि नष्ट करैत अछि । जगसँ गाम-गामक खेतिउ नष्ट होग छै आ घर-दुआव नष्ट होग छै । जीरन-यापनक मूल आरक्षकता उत्पादित पूँजी नष्ट भेने पड़ १गन उँ नगले डन आ नगले बहत ।

उना मिथिलाचलक माँष्टि-पानि, हरके अन्कुर बहने उँरब शक्ति उँ छगहे । जगसँ केतरो लोक गामसँ पड़ १ देशी-रिदेशीक कोष-कोषमे रँसला झुदा अखनो गाम-घरक आरादी सघन उँ अछिये ।

गामसँ तीन कोस हँष्टि जुगसरो नोकरी करैत छला आ देवा रँहरे बखने छला । कावणो डन जे ने अखनका जकाँ गाड १-सराबी छले आ ने रँन्ह-सडकक दशा नीक छले । शिव-रँजाव छोडि ने पीछ (पक्की सडक) गाम दिस रँटन डन आ



ने रिजनी । झुदा तैयो 1947 असरीक अंग्रेज भगा अपन स्रतंत्र देशे रनेरौक रिचाव तँ जन-जनक मनमे छनन्हिहै । ग्रामीक शोषणसँ देशीक स्थिति रिगड़ा गेल अछि, जगसँ देशीक विकास अरकछ भइ गेल अछि । स्रतंत्र भेला पछाति विकासक वास्ता देशे जकर पकड़क । झुदा तते असथिबसँ जे आजादीक साठि-पँगसठि रर्थ पछातियो, जनकेक हबसँ खेतियो होगत अछि आ कबीने-टोमिसँ पछैनी । धुषि-प्रधान देशे (जग देशेमे असु प्रतियेतसँ डुपव आरादी धुषि आधावित अछि) बहितो पाछ पछा गेल । किछ पूजापति सत्ता हथिया शहर-रँजावक विकास धवि देशीक अर्थ-रैरस्थाकेँ समेष्टि लेलक । तग सँग ओहो नै नकावत जा सकैत अछि जे जे मिथिलाचतरासी आन-आन देशीक उल्लतिमे अपन शक्ति रैचि सेरा करै छथि ओ मिथिलाचतरासँ, अपन मातृभूमिसँ आँखि सेहो मुनि लेलन्हि । देशीक सत्ता किसानक समस्यासँ हठि जाति-धर्मक एहेन रातारवण रँना देने अछि जे रासत्रिक विकासकेँ अरकछ कइ देने अछि । मिथिलाचतरक पानि-माष्टि आ मौसममे एहेन अन्कुरता अछि जे सागयो बंगक अन्न, फल, तबकावी सँग सागयो बंगक चिड़, पशु लेल अन्कुर अछि । झुदा सत्ता किछ बहितो कि अछि से सरँक सोने अछि ।

ओना अठारारे (शनि-बरि) जुगसब गाम अरिते छला तग सँग पारनिक छुष्टी आ अनदिनोक छुष्टीमे सेहो अरिते छला । स्थितियो एहेन नै छनन्हि जे सागकिनो कीन सकितथि । ओना परिवारो तेहेन नमहव नहियेँ छनन्हि । तद्धमे अपने अन्ते बह छला । जगठाम देवा बखने छला ओग परिवारक रँचा सत्ताकेँ पढ़रैत छला । रँदनामे भोजन आ बहक रैरस्था छनन्हि । ने राँगनी छुष्टि छनन्हि आ ने दवमाहा छोड़ा दोसब आमदनी । शनिचरा प्रथा समाप्त भइ गेल छल ।

जुगसबक सासुब झुगेब जिना । गंगा दियावाक गाम । तीन भाँगक भैयाबीमे सासुब जेठ बहथिन । संयोग एहेन लेलन्हि जे छोट दू भाँकेँ रैठे लेलन्हि, हिनका (जुगसबक सासुबकेँ) दूठ रैठियेठ । रँहूत रैसी जमीनरँना परिवार तँ नहियेँ छनन्हि झुदा पछास-तीस रीघा तँ छनन्हिहै । भैयाबीक सम्पतिक प्रश्न भैयाबीमे ठकवाएल । दू छोट भाँक कहँ छनन्हि सत्ता दिन अरैत-जागत बहती । झुदा से जेठ भाय बमानन्दकेँ मान्य नै । बमानन्दक रिचाव छनन्हि जे हम अपन हिस्सा रैठियेकेँ देरै । भैयाबीमे जमीन नइ कइ रिवाद ठाढ़ लेल । छोट दू भाँग रिचाव लेलन्हि जे किछ होइ, जमीन तँ गामेमे बहत । ओ तँ ससब कइ नै जाएत । तखन गामक लोक कीन लेत आ कपैया उठा कइ दइ गुथिन्ह । गामे-गाम तँ तीन तसियो चारिक लोक अपन चाँच चलेरैते छै । झुदा किछ होशियावी लेल । दू भाँग साँसे गामक लोककेँ खास कइ तीन तसियारँनाक रैसाव लेलन्हि । रैसावमे अपन प्रस्ताव देलथिन जे जखन भैयाकेँ रैठा नै छनन्हि तखन



बूढ़ ाड़ क सैरा भैलन्हि सै भातीजे सभ कबतथि, जगसँ क्रोडा-खनदानक गज्जत रैचन बहन आ सैरो हेतन्हि । किअए खनेरे बूढ़ ाड़ ईमे ईगाम-सँ-ओगाम रौएता । समाजोकेँ जैचन । झुदा बमानन्द सैरो अपने मनक लोक । परिवारसँ समाज धरिक किनको रात सुनेले तैयारे नै । अकछि कऽ समाजक सभ दुनू भाँगेकेँ कहि देलथिन जे तैयारीक नमनै अछि समाज ईमे नै पड़त । मौका पारि दुनू भाँग पुष्टि देलथिन-

“जै किबो टोब-बुकरी निखा तथि, तखन ? ”

जते गोष्टे रैसन बहथि पंच-पवमेष्ट्रिक कपमे बहथि, अन्नकुर रिचाव देखि अन्नकुरतामे भूसि हरे-हरे एक्क शिरदमे राजि उठना-

“जे समाजसँ राहब हएत, ओ रैष्टीटोद हएत । ”

रैजैकार तँ सभ राजि गेला झुदा पछाति अपनेपव तामस उठै नगनन्हि जे सस्त चीज हाथसँ निकलि गेल ।

जहिना आगिक ताउपव लोहियाक जिलेरी, कचड़ ई पेंनीसँ उठि डुपव अलगि जागत तहिना बमानन्दकेँ भैलन्हि । गंगाकातक गाम जकाँ गामक लोक सोन-सोनी बमानन्दकेँ दूतकावए नगनन्हि । अखन धरि समाजमे अहाँकेँ लोक कोन नजबिये देखैत बहन आ अहाँ कि करैपव उताहूँ छी । झुदा तैकब कोनो असबि बमानन्दकेँ नै भैलन्हि ।

1940 ग्राक नगातिमे बमानन्द मैथिलिक पास केने छला । जग समए हजारो रिद्यार्थी सुकुर-कओलेज छोड़ि आजादीक आन्दोलनमे कुदि अपन सरसुर नाम केनन्हि । ओग समेक उत्पादित मन्थ बमानन्द सैरो छथि, अंग्रेजी धूब-माव रैजै छला । रेल-ताव अत्यादि सबकारी सैराक कतेको गोष्टे नोकरी छोड़ि अपन आहुत देलन्हि । मध्यम किसान परिवारक बमानन्द । पिताक देख-रेखमे परिवार चलैत, तँए घरक छुट्टा आदमी । एतए-ओतए घुमनाग आ गुरदुर्डी । छोड़नाग जिनगीक काज छलन्हि । झुदा जहिना शरीरमे रोगक आगसँ धीरे-धीरे शरीरक शक्ति त्रसित हुअए नगैत तहिना बमानन्दकेँ परिवारसँ समाज धरिमे हुअए नगनन्हि । जे भातीज रैडका राबू कहि छलन्हि ओ झूठपव गाबि पढ़ए नगनन्हि । मनुष्योक तँ अजीर सरभार होग छै । घनिष्ठ-सँ-घनिष्ठ मित्र जै कोनो अपना वृत्तिमे बसि जागत अछि तखन जे स्थिति पैदा लैत सएह बमानन्दकेँ भैलन्हि । समाजक लोक नै किबो दवरज्जापव



रैसए कहन्ति आ ने गप-सप करैले तैयाब । जहिना खूना जहन होगत, तहिना बमानन्दकेँ भेलन्हि ।

भैयाबीमे रिराद उठने झुकदमारौजी सेहो उठन । समागसँ पातब बहने बमानन्द कमजोब पड़ए नगना । सोनेमे भाए सब खेतक जजाति, गाछ-रौस उजाड़ए-काँठए नगनन्हि । दूनु भाँग खरँधाबि लेनन्हि जे जते झुकदमा कबता कबथु । थानो आमदनी बूमनक, तँए हिसारँ मिना कऽ चलैत । दूनु रैष्टी-जमाएकेँ रँजा अपन सब दुखवा स्मरैत बमानन्द कहनथिन-

“जहिना, हम अपन सब सम्पति अहाँ सबकेँ दिखए छै छी तहिना तँ अछि सबकेँ चाही जे ओकरा रँचा कऽ नऽ जाग ।”

दूनु रैष्टी-जमाएक रँज जहिना बमानन्दकेँ भेलन्हि तहिना ओह दूनु भाँगकेँ समाजक लोक झुकदमामे सर्ग दिखए नगनन्हि ।

धीरे-धीरे बमानन्दक मन झुँझए नगनन्हि । एक तँ साँठ रँथक उमेब छपि गेले तगपब कोष्ट-कचहरीक दौड़सँ नऽ कऽ रैष्टी-जमाए ओगठामक दौड़-रँवहा तते रँठा गेलन्हि जे गामसँ रैसी अन्ते गजबए नगनन्हि । असगरे पनी घबमे सकर्पज भेल छनन्हि आ अपने रौखागत-रौखागत फिबिसान ।

किछु दिन पछाति पनी अस्सक पड़नथिन । ने दियादराद आ ने गामक कियो एको रँव पछाड़ि कबए आरँनि दूनु रैष्टी-जमाए नगमे ने, मधुरनी जिनक गाममे । ने उचित समेपब डाकूरी देख-भार होन्हि आ ने दराग-दाक । किछु दिन पछाति मबि गेलथिन । पनीक झगला पछाति बमानन्दक जिनगी आरो जटिल भऽ गेलन्हि । गाममे जखन बहथि तखन भानसो-भातक ओबिधान अपने कबए पड़न्हि । आमदनी सेहो भाए सब रोकि देलथिन । अन्ना-गाँहिस देखि दूनु जमागयो हाथ-झुँझि सकत लेनन्हि । फुँटे-हनमे बमानन्द पड़ि गेला । जिनगीक कोनो सोमबाएन रौठ देखै ने कबथि ।

जिनगीक अंतिम पाँच रँथ बमानन्दक एहेन रितनन्हि जेकरा लोक नबकक रौस कहै छै । हाबि-थाकि किछु दिन रौद अपने (बमानन्द) मबि गेला । जमागयो सब आराजारीक सर्ग केसो-झुकदमा देखरँ छोड़ि देलन्हि । अंत-अंत एकतबहा केस भऽ गेल ।

जुगैसबक गाममे दियादिक दोसब परिवारमे रेमात्रेय भैयाबीक रौच रिराद उठन । एक भाएकेँ एक रैष्टी आ दोसबकेँ चाकिष्टी । चाक भैयाबी मिनि पाँचम भाएकेँ



(रेमात्रेय) उपद्रव क२ गामसँ भगा देलकन्हि । किछु दिन तँ ओ (पाँचम भाए) सब-समरंन्धीसँ न२ क२ समाजक रीच चक्कर लगौलन्हि, झुदा किछु हाथ नै लगलन्हि । अन्तमे थिसिया क२ पिताक सम्पतिक (जमीनक) कागज-पत्रब कलक्त्रीएसँ निकालि कहि देलथिन जे अपन हिस्सा घराड़ १ तक रैचि नैर । रीघाक लगभग हिस्सा पड़ौत बहनहि । झुदक मार थागरना सब समाजमे बहिने छल । तीन-चारिष्ठा परिवार खेत निखरैक रिचाव क२ लेलन्हि । झुदा रिराद तँ रीचमे छेलैह । लेलैक रीच प्रश्न उठैत जे जमीन-जयदादक रिराद छी, माबियो हेरै कबत आ थाना-होदारी सेहो हेरै कबत । ने माबिक ठेकान छल आ ने कते दिन नमनठ बहत तकब ठेकान । तँ दनुकै नजबिमे बथि लेन-देन कबर । तहिना जमीनरनाक (पाँचम भाय) रीच प्रश्न उठैत जे जँ सस्त्रमे निथि देरै, तगसँ नाभ कि रहत ? तखन तँ नीक छल जे अपने तैयारी सब थाथि । कम-सँ-कम एक परिवारक तँ छथि । झुदा चारियो देनिहारक तँ कमी नहियै छल । उनष्ठा-सीपा मत्रक तते डकनि पड़ै जे रैहवा कबकरेतक रीथ जकाँ निच्छा झुहै ससबन ।

अन्तमे हड़ि अएत जे अपिया (खेत निखौनिहार) तैयार भेला । रैचिनिहारकै (पाँचम भाएकै) तते चाक भाँग गजन केने जे तामस कमरै ने करैत । होगत-हरागत अपिया दाममे जमीनक लेन-देन भ२ गेल । ओही लेलैकमे एकष्ठा जुगैसरो । झुदा संयोग नीक बहनन्हि जे जुगैसब अपने स्कुरक नौकरी दुखारे रीहरे बथि तही रीचमे गाममे दासब लेलैक संग माबि भ२ गेल । जरबदस माबि लेल । दनु दिस कपाव हूँत, रीचि हूँत । सौसे गाम सना-सनी पसबि गेल । अनेको भागमे समाज रिभाजित भ२ गेल । किछु गोष्टे खुनि क२ दनु गोष्टेक (दनु पाँचैकै) केसमे गराही दगले तैयार भ२ गेल । किछु गोष्टे माबियोमे संग देलकन्हि । किछु गोष्टे रयक्तिगत पूँजी देखि अपनाकै दनुसँ अलग बखलन्हि । झुदा समाजक वृत्ति तँ एहेन सरुंधने छल जे नहियै रिचाव लेने पबिस्थितिरी मजबूतीमे 'हँ' कहए पड़ै छै । सेहो लेल । ततरै ने वृत्तिक सोब एहेन छल जे गामेमे लोक साम्प्र-मात्रक सेहो ठाढ़ क२ नगए ।

ओही नमनठमे जुगैसब आठ कष्ठा जमीन कीनैक रिचाव केनन्हि । ओना दनु पबानीक रिचाव जे झुनेसबकै ई जमीनमे संग नै कबर । झुदा परिवारक तँ रिपिरत् रैठरावा लेल नै छल तखन जेठ भाय छिई, छोट भाएक हिस्सा तँ भगये जअत । तँ कहि देरै जकबी छल । जँ आ १५५ खर्च देत तँ ठीके छै नग तँ अपन दोथ तँ मेष्ठा नैर । रिचावक पाछु पैठमे बहनहि जे झुनेसबक आमदनी ततरै छै जे कहना क२ परिवार चले छै । तखन कपैया कतए सँ आनत ? तग रीच मनमे एहो जे



गुप-चुप दाम भेल अछि किने, रैठ १ देरै । कहुना (अधिया दाम भेने) चाबि कष्टा तेहिसरा (तीन फसिरा) खेतक भेलु कम नै भेल ।

पोस्टर कार्डक माध्यमसँ जुगसब झुगसबकें जनतर देलथिन । स्कूलक दबमारा तँ जुगसबकें बुझल, झुदा धुशिनक आमदनी तँ नै बुझल । तग सग पनिबो (झुगसबक) रिचाव देलथिन जे नैहबमे देल रबतन-रामन जे अछि ओ अनेरे घबमे ठनमनागत बहै, ओकरा रैठि क२ जमीन कीन लिख । अथन धरि दुनु भाँग - जुगसब-झुगसबक- रीच पहिरके सम्बन्ध जीरित छल । झुगसब आपा अर्चि दगले तैयार भ२ गेल ।

जमीनक बजिम्प्री जुगसब दुनु भाँगक नाँसँ करा लेता । अपन कमजोर पाशा देखि जुगसब दुनु पवानी रिचाव केनन्हि जे नीक हएत रैठि नाँसँ जमीन लिखीन जाए । झुगसबकें कोनो पता नै । तग समए बजिम्प्रीबो आफिसमे अथुनका जकाँ नै छल जे लिखीनहारोकेँ उपस्थित बहै पड़ैत । कियो केकबाे नाँसँ जमीन लिखा सकैए । तग सग पान-सात रर्थ पछाति दस्तारेज भेटै छै, तारेँ रातो पवना जागत । तहुमे कागजक खोज जथन हएत तथन नै जँ नै हएत तँ के बुझत ? नै भिनोज भेल अछि आ नै खेती-पखारी रैठल अछि । तथन तँ गाममे बहै छी जेना-तेना जनक हाथे खेती क२ नग छी । रात खुजरेँ नै कबत, तँ झुदा-धुश्री आफि हल्ला-फसाद हएत किथए । जहिया तीन हएर तहिया बुझल जेते । अन्तुन रिचाव बुझि जुगसब अपना रैठिक नाँसँ आठो कष्टा जमीन लिखा देलन्हि । जे पछाति दुनु भाँगक रीच रिस्फोर्क भ२ गेल ।

किछ सार पछाति बजिम्प्रीक भेद खुगल । भेद खुगिते दुनु पविराबमे अनोन-रिसनोन शुक भेल । दु तबहक अनोन-रिसनोन उठल । एक तबहक भेल जे झुगसब दुनु रैकतीक रीच आ दोसब तबहक भेल जुगसबक रीच । जुगसबक पनी पितक सम्पतिक खेन देखि चकर छली जे अछि ते हिस्से हिस्सा नै भेल । तँ पतिपव दरार रैनौने जे जे भेल माने रैठि नामे बजिम्प्रीसँ नीक भेल । झुदा जुगसबकें सद्यः भागक सग रैगमानी आ समाजक रीच दोखी हेरौक डब मनमे नछेत बहन्हि । झुदा रैठे जुथान भ२ गेल बहन्हि । अपन थाम हिस्सा बुझि ओहो मागयेक पीठपोछ रैनल । तहिना दोसब दिस झुगसब अपन आमदनी देखि सबूब करैत । आमदनीयोँ नीक रैन गेल बहन्हि । सबकारीकषा भेने नीक दबमारा, तग सग धुशिनो फीस रैठने अपिक आमदनी, बाँचीक मकान भाड १ सेहो जेब दैत । झुदा साधनाक भूख (सम्पतिक भूख) आरो उग्र भ२ गेलन्हि । तहुमे अपन राप-मागक देल रबतन-रामन रिक्काएल बहन्हि । दुनु पवानीक रीच खुलि क२ मतभेद शुक भ२ गेल । गप-सपक क्रम एना भेलन्हि । झुगसब पनीकेँ बुझरैत कहलथिन-



“देथियौ, बाँटी सन शिहबमे अपन मकान भऽ गेल, गाममे बैठक कोनो प्रश्न नै छल। तখন तँ ओह (भैया) खेतियो करै छथि, खेरो कबत।”

झनेसबक रिचावकेँ कष्टेत् साधना अपन अर्थाश्रयीय तर्क देलथिन-

“जखन गाममे नै बहर तखन गामक पूँजीकेँ माव पूँजी किछ ए रैनौने बहर। ओकरा रैचि कऽ रैकमे जमा कऽ नेर तैयो सुदि आओत। नै जँ घर आरौ रँना नेर तैयो भाड। एरै कबत।”

पाशा रँदनेत् झनेसब तर्क देलथिन-

“रौप-प्रवृत्तक जँ घवाडा ये रैचि नेर तखन कोन झँह नऽ कऽ जिनगी जीर। कोनो कि पेष्ट जरेए जे रैचर।”

होगत-हरगत अ भेन जे गामक खेत भवना नगा रैकमे जमा कऽ नेर। झदा रिराद तँ रीचमे तैयारीक बहरै कबन्हि।

किछ दिन पछाति दनु रैकती (झनेसब-साधना) गाम आरि अपन डीह-डारबस नऽ कऽ रौप धविक रैरौवा करैक रिचाव जुगैसबक सोन्यामे बखतन्हि। रिरादी जमीन (जे बजिम्प्री भेन बह) छोडा सभ किछ रैरैने तैयार भऽ गेल। नग मामास कनहा मामा नीक। रिरादी जमीन छोडा रौकि रौष्टि नेलन्हि।

हबिहबक तैयारीमे अठ ग कष्टा घवाडा। जे रैरगत पाँच धुवप आरि गेल।

जग समए स्त्रोचना साम्प्रस नैह आन छनी ओ समए देशिक आन्दोलनक तूफानी दौड छल। सन् 1942क दमनचक्र प्रारम्भ भऽ गेल छल। परोपष्टाक (समावपव गलाक) लोक अष्टेजी ह्ममतक थिराक सडकपव उतवि गेल छल। गोवा-परठनक उछा समावपव रँनल छल। कतेको गाममे आगि नगाओल गेल। कतेको गोष्टे ग्पुत्रासमे काज करैत छल। कतेको गोष्टे मावि था-था जहनेमे रँल छल। झदा राजिमी रौत अहो बहने जे ईशमक कतेको परिवार गोवा सबकावक सर्ग देलक। बह-थागक रैरस्थक सर्ग-सर्ग सम्पतिक नुष्ट सेहो केनक।

ओना गाममे स्त्रोचना रँहिन सन कतेको गोष्टे छथि जे साम्प्रस भगाओल छथि। अपन माए-रौप, भाए-भाँजागक सर्ग सेहो बह छथि आ असगरो रौनि-रँता



क२ जीरन-यापन सेहो करैत छथि । किछ गोष्टेकें सन्तानो छन्हि आ किछ गोष्टेकें नहियो छन्हि ।

अदोसँ एक प्रकृष एक नारी सम्वर्नक रिधानो आ रैरहारो तँ रैनर बहन झुदा परिवारकें आगु रैठक लेन किछ कमी तँ छेलैहे । ओ कमी अछि जे मन्वष्यक शरीरक रैनारैठ समान नै होगत अछि । रैठनाशमे सन्तानोत्पत्तिक शक्ति समान बँहत आएन अछि तँ तग सँग कमी-रैसी सेहो बहन अछि । कतौ कोनो प्रकृषमे शक्तिक कमी तँ कतौ कोनो महिनामे । तहिना कतौ कोनो प्रकृषमे रैसी बहन अछि तँ कतौ कोनो महिनामे । शक्तिहीन प्रकृष बहने स्फेदज सन्तानक चरनि सेहो बहन अछि । झुदा शक्तिहीन नारी भेने तँ परिवारकें आगु रैठमे राधा उपस्थित भाग्ये जागत अछि । तगठाम दोसब नारीक सहारा जकरबी भ२ जागत अछि । जँ से नै हएत तँ परिवारक अन्त हएत । अन्ते नै हएत रैठ ाड़ १ आ रीमावीक अरस्था सेहो कष्टकर हएत । झुदा आरशयक-आरशयकता तखन आराम आ रिनास दिस रैठमे अछि जखन भो-रिनासक मनोरुति जोब मारैत अछि । जगक चलेत समाज-परिवारमे रिद्वतताक कप पकड़ैत अछि । से भेन । समाजक अग्रआएन (थास क२ आर्थिक कपे) आ मध्य रगीयो परिवारमे एक-सँ-अधिक रिखाह कवर नीके जकाँ चरनिमे आरि गेन । जगसँ एक प्रकृष एक नारीक प्रथापव जरबदस टोष्ट पड़न । झुदा केतरो जरबदस टोष्ट किछ ने पड़न, तेयो सोनहनी नष्ट नै भेन । ओना निम्न रक्तामे सेहो रीमावी पैसर झुदा दोसब कपमे । ओना बाजशाही रैरस्थामे डुपब-सँ-नीचाँ धरिक किछ परिवार जोड़ एन छन, तग परिवारक रीच भोगी-रिनासी मनोरुतिक पकिाम छन, जखनकि गरीरमे पैठक दर्द काब भेन । एहेन प्रकृषक सख्या कम नै जे कामचोर, आरसी, नशाखोब अत्यादिक काबषे पनेकें नै बाधि परैत छन । नै बखेक माने आ जे पनेक भवष-पोषष नै क२ परैत छन । झुदा सेहो सोनहनी नै भेन । एहेन रैठो महिना छनी जे प्रकृषे जकाँ श्रम करैत छनी । जिनका मनमे पतिक प्रति असिम श्रिहा आ मजगुत सकल्प छनन्हि । अपन जिनगीक सब स्वथ पतिमे आरोपि नेने छनी ।

एकसँ अधिक रिखाह करैक कप दिनान्दिन रैदतब होगत गेन । अनेको रंगक कृतसित रोगक जन्म होगत गेन । प्रकृषक रिचाब एते घिनोना कप पकड़ि लेनक जे दर्जनक-दर्जन रिखाह कब नगना । तग सँग गहो भेन जे प्रकृषक डमेरोक ठेकान नै बहन । जे डमेब रिखाहक नहियो छन तछ डमेबमे रिखाह कब नगना । जगसँ अपने किछए दिन पछाति मवि जागत छना आ जूआनियेसँ महिना रैधर्य कपमे रैदति जाग छनी । रिधरा जिनगीक रीच एहेन पविस्थिति पैदा न२ लेत छन जे समाजमे रोग रनि गेन ।



उना नारीक प्रति प्रकथ सौतहो आना अन्यागये केतन्ति सेहो नै ।
नड़का-नड़कीक (प्रकथ-नारी) रीच दूनु तबहै रोगक प्रवेशे भेल । कतौ रौनक
प्रयोग भेल तँ कतौ प्रकथ-नारीक रीचक आर्थिक सम्वन्ध सेहो भेल ।

प्रश्न उठैत जे अदौक पवम्पवा (रैदिक पवम्पवा) पव एते भारी टोष्ट
पड़ल आ सब प्रकथ-महिलाक झूठ देखैत बहि गेल । नै, ईठाम ग्रहो रात देखए
पड़त जे नै सब गामक एक बंग चारि-ठारि, खान-पान, रात-रिचाव अछि आ नै
सामाजिक विकासक प्रक्रिया एक बंग अछि ।

एक बंग नै होएक अनेको कावण अछि । एक तँ छोट-छोट राज्यमे
रिभाजित छल । जग तबहक राज्य छल ओग तबहक बजो छल । उना मिथिलाछल
सेहो कतेको जमीन्दारीक संग राज्योमे रिभाजित छल । सबकेँ अपन-अपन
शासनक संग सामाजिक रैरस्था संचालित करैक अलग-अलग ठड़ । छल । उना
क्षेत्रक हिसारसँ सेहो अंतर्गत छेलैह । खान-पानक संग उपार्जन करैक सिस्टमोमे
अंतर्गत पहिना छल अथनो अछि । अथनो एहेन क्षेत्र अछि जगठाम नै राठि क कोनो
प्रभार (पावक काठ-छाँट) तेहेन पड़ल जगसँ ओगठामक खेत-पथाव, रास भूमि
प्रभारित भेल । झुदा एहनो क्षेत्रक कमी नै जगठाम उपजाऊ भूमि धारो रनि गेल
आ राबुसँ भवि गेल अछि । जे कहियो सुन्दर गाम (रासक हिसार) छल ओ
उजड़ा गेल । रिन अन्न-पानिसँ मनुख जीव केना सकैए ? आ तँ प्रश्न तहियो छल
आ अथनो अछिये ।

एकठा आरो भेल । ओ आ जे जगठाम प्रकथ-नारीक रीच परिवार ठाढ़ भेल
ओगठाम प्रकथ प्रधान रैरस्था बहने अनेको तबहक अरिष्ट नगा नारीकेँ घबसँ
भगाएँ । केकरो सन्तानोत्पत्ति शिष्टि नै बहने, तँ केकरो चरित्रहीन कहि गत्यादि-
गत्यादि, नष्ट जोड़ा घबसँ अलग कइ देल जागत छल अथनो कइ देल जागए ।

गामक समस्या (भागक रैरहाव) दूनु पवानी झनेसबक सम्वन्धमे खापि रनेत
गेल । दूनु भाँगक भिनोजी सुलोचनकेँ सेहो राँष्टि देलकन्हि । एते दिन सुलोचना
दूनु भाँगक रीच छली झुदा तीन भेने जुगसबसँ हष्टि झनेसबक संग भेली । जुगसब
झनेसबक खेती छोड़ा देलकन्हि । भागक खेती छोड़ने खेतीक समस्या झनेसबकेँ
उठलन्हि । कावणो स्पष्ट अछि । अपने दूनु पवानी राहरे बहितो छल आ गामक
आराजारी सेहो नहियेँ जकाँ छलन्हि । गाममे नै बहने माले-जाल केना पोसि सकै
छल, जगसँ खेती कवितथि । उना राहरोमे दूनु रैकती झनेसब एकठाम नहियेँ बहत
छल । रात-रिचाक संग पनी-साधना बाँटीमे बहितो छली आ हाग-सुकुनमे नोकबियो
करैत छली जखन कि झनेसब पनामुमे बहत छल । एक तँ दूनुक दूरी अधिक अछि



दोसब जँ सकुनमे छुट्टियो होगत छनन्हि तैयो धुँसिन बहिये जागत छनन्हि । तँए बाँचीयोक आरौ-जानी कमे-सम बँहत छनन्हि ।

जिनगीक दूरी रिचारोक दूरी रँनौने बहनन्हि । जगठाम साधनाकेँ अपन परिवारक चिन्ह-पहचिन्हमे कमी छनन्हि तगठाम झनेसब भागक आगु सम्पति-जमीनकेँ गौण रँनौत छन । स्पष्ट दूनुक मतभेद होगत गेलन्हि । अपन हक-हिसासब साधना खडती तँ झनेसब आगु रँठ-सँ हिचकिचाग छन । होगत-हरागत भेल ए जे दूनु गोठे एक दिन निर्णयक लेल तैयार भेल । दूनुक रीच प्रश्न-उत्तर एना भेलन्हि ।

साधना- “जखन खेत कानैमे आपा खर्च भैयाकेँ देलियनि तखन ओ किखए अपना रँठ नामे लिखा रँगमानी केलन्हि ? ”

साधनाक मजगुत तर्कसँ झनेसब सहमि गेल । झदा अपनाकेँ उदाव रँनरँत उत्तर देलखिन-

“ओ (भैया) जँ रँगमानी नयँ केलन्हि तगसँ हमब की रिगड़न ? ”

(क्रमशः जारी...)

ई कनापब अपन मतलब ggaj_endr_a@videha.com पर पठाउ ।



साम्प्रतकाव श्री बाजदेर मण्डक संग-

उमेश मण्डन- सभसँ पहिले बिदेह साहित्य सम्मान लेल अपनेकेँ रँहूत-रँहूत रँपाग... ।

बाजदेर मण्डन- धन्यवाद ।

उमेश मण्डन- अहाँक नजबिमे साहित्यक उद्देश्य की खडि ?



बाजुदेर मण्डन- साहित्यक उद्देश्य होगत छि- लोक कल्याणक भारना । समाजक कल्याण करै साहित्यक पबल अतीवृष्ट छि । मात्र अतिरिक्त नै जेकर समर्थन जिनगीसँ हूँ सहै स्रष्टा साहित्य छि ।

उमेश मण्डन- अहाँक साहित्यमे गतिहास/संस्कृति (थास क२ मिथिलाक) केना रचित होगत छि ?

बाजुदेर मण्डन- सामाजिक यथार्थक अतिरिक्त जँ हेतै तँ गतिहास आ संस्कृतिक समारोह भ' जेनाग स्रष्टारिके छै । जिनगीकेँ जनराल लेन हाक छि आरक्षक छि, संगहि प्राचीन आ नवीन संस्कृति आ संस्कारक समारोह होगतै बह छै ।

उमेश मण्डन- दिनानुदिनक अतिरिक्त अहाँक साहित्यमे कोन तबहै रिकेचन होगत छि ?

बाजुदेर मण्डन- यह अतिरिक्त तँ कारक हेतुमे मदति करै छै । जगतकेँ अतिरिक्त आ अध्यात्मसँ अतिरिक्त प्राप्ति होग छै आ बचना करैत काल ओकर कप प्रगष्ट होग छै ।

उमेश मण्डन- साहित्यक शैक्षिक रिषयमे अपनैक की कहै छि ?

बाजुदेर मण्डन- साहित्यक शैक्षिक तँ असमि छि । एक दिस कान्तिक चिनगी छि तँ दोसर दिस शान्तिक रीज छि । सामाजिक परिवर्तनमे ई शैक्षिक अहम भूमिका बहैत छि ।

उमेश मण्डन- अहाँक साहित्यमे पाप-पुण्यक रिश्ता केना होगत छि ?

बाजुदेर मण्डन- मानव हब क्षण परिसंस्थितिक कड़ूसँ रान्हन बहैत छि । परिसंस्थिति री नैक-अधराह, पाप-पुण्य होगत बहै छै । ओना ई शैक्षिक समर्थन साहित्यक अपेक्षा धर्मसँ रैसी छि ।



उमेशी मण्डन- कल्पना आ यथार्थिक समन्वय अहाँ अपन साहित्यमे केना करैत छी ?

बाजुदेव मण्डन- तीव्रगतिसेँ रैठौत कारचक्र । आग जेकवा कल्पना कहैत छी कान्हि यथार्थ रैनि जागत अछि । साहित्य लेल कल्पना आ यथार्थिक समन्वय आरम्भिक होगते छै ।

उमेशी मण्डन- अहाँक साहित्यमे पाव जीरन्त भऽ उठैत अछि, तेकरा की बहस्य ?

बाजुदेव मण्डन- पाव तँ समाजसेँ रिद्धत जागत अछि । ओकरा सँगे जीअरै, जाँचरै, पबखरै आरम्भिक अछि । पश्चात जँ ओकरा अभिर्यक्त करै तँ ओ जीरन्त हेरै कबते ।

उमेशी मण्डन- साहित्य लेखन, विशेष करै मैथिली साहित्य लेखन अहाँ लेल कोन तबहै रिशिष्ट अछि आ एकरा प्राथमिकताकेँ अहाँ कोन तबहै देखै छी ?

बाजुदेव मण्डन- ईठाम आमजनक भाषा अछि मैथिली । जन-जन तक अपन अभिर्यक्तिकेँ संप्रेषण करैक लेल ई भाषाकेँ प्राथमिकता देमहि पड़त ।

उमेशी मण्डन- की अहाँ कोनो तथ्यक नैपनाह भाग उघारैत छिअक ? अगब हँ तँ केना आ ने तँ किअक ?

बाजुदेव मण्डन- कोनो भाग ने उघाड़त अछि आ ने नैपन । संभूता सोनेमे अछि । निखरैक आ देखरैक अपन-अपन दृष्टिकोण अछि ।



उमेशी मण्डन- अहाँ कहियासँ लेखन प्रारम्भ केनौ, केकवा लेल लिखनौ, आग-कान्ति केकवा लेल लिख बहल छी ?

बाजुदेर मण्डन- रूँन-रूँनसँ सरोवर भवि जाग छै । दीर्घ काल तक अन्ध्यास अनुरवत चलैत बहल । कल्पनाक झकत तँ पहिने मनेमे रँने छै । प्रवान छिँछुँ पाण्डुलिपि सभमे 1986 ग. तथा कोनोमे 1987 ग. अंकित अछि ।

समाजक लेल लिखनौ आ आगयो हुनके लेल लिख बहल छी ।

उमेशी मण्डन- की अहाँकेँ ग. लेलैत बहल अछि जे झूथ पावासँ अहाँ कतियाएल गेल छी ? अहाँक बचनमे समाजकेँ रौतबसँ देखबैक प्रवृत्तिक की कावण ?

बाजुदेर मण्डन- पावा तँ अन्तबसँ फूटैत छै । अपन-अपन पावा होग छै । झूथ आ कतिआएल कहि की ओकवा रौति देबै संभल छै ?

समाजकेँ मात्र रौतबसँ देख गंभीर बचना केना भ' सकैत अछि । एक छदए दोसबसँ निरुदन केना कबतै ।

रिदेह- अपन साहित्य आ बचनमे की सुर्यकेँ पूर्णपसँ अमानदाव बाखर आरक्षक छै ?

बाजुदेर मण्डन- साहित्य आ बचनमे जँ अमानदारी स्वस्मिन्त नै बहते तँ खेब ओ कतए आ केना रँचते ।

उमेशी मण्डन- मैथिली साहित्य आगक दिनमे की ग. सभ (साहित्यकाव)क सांस्कृतिक दोष स्रष्टातिक कप नै रूँमना जागत अछि ? -

बाजुदेर मण्डन- आगक दिनमे जे मैथिली साहित्यक स्थिति छै तेकवा लेल जे सभ दोषी छथि हुनका सभकेँ स्रिकाव कबरौक चाहियनि । पैघ लोकक तँ यएह पहिचान अछि जे अपन दोषपव स्रिकारोक्तिक भार प्रदर्शनमे



कोनोठा निमनक नै देखैए । हमहुँ ओही श्रेणीमे आगक साहित्यकाव
छी । तँए कि हमहुँ दोषी नै छी ?

उमेशी मण्डन- की अहाँकेँ नगैत अछि जे अहाँक पोथीकेँ हिन्दी, रँगना, नेपाली,
अंग्रेजी आदि भाषामे अनुराद कएल जाएत ? तग स्थितिमे ओतए एकव
कोन करपेँ स्रागत हेतैक ? की अहाँक साहित्य ओग भाषा आ सँसृति
सब लेल ओतरेँ महत्तरपूर्ण बहतेँ जतेँ ओ मैथिली भाषा आ सँसृति
लेल छै ? अहाँक लेखन भाषा-सँसृति निर्पेक्ष किअए नै भऽ सकल ?

बाजुदेर मण्डन- दीर्घ काल तक प्रतीक्षक उपरान्त तँ कहूँ पाथी प्रकाशित भेल ।
भाषांतर रा अनुरादक रिषएमे कि सोचरँ । ओना छदएसँपशी, सृष्टा
साहित्य सब भाषाक लेल महत्तरपूर्ण होग अछि आ सभठाम आदृत
होगत अछि ।

भाषा-सँसृतिसेँ निवपेक्ष भ' बचना केना होएत ।

उमेशी मण्डन- अहाँक भाषा तँ मैथिली अछि झुदा अहाँक लेखनपर रौहरी भाषा,
सँसृति, रिचावधाक प्रभार पड़ल अछि, कतौ-कतौ अ स्रष्ट अछि
झुदा रैसी ठाम नै, एकव की कारण ?

बाजुदेर मण्डन- भाषा तँ रँहत नीब अछि । एकव रौहसँ घेबि क' बाखरँ ठीन नै ।
रैकती आ स्थान सभमे परिवर्तन भ' बहल छै आ हेरँक सोहो चाली ।
परिवर्तन आ नित-नूतनता आरक्षक छै ।

उमेशी मण्डन- अहाँक बचनक प्रचार ई प्रवस्काक रौद भयँकव कपसँ भेल अछि,
अहाँकेँ ईसँ केहेन अनुराद भऽ बहल अछि ?

बाजुदेर मण्डन- प्रसन्न छी ई रौतसँ जे समाज आ खास क' बुद्धिजीवी पाठक रक्षा
हमबापव अनुराद केनथि । सभकेँ छदएसँ नमन ।



ई बचनापब अपन मंतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



जगदीश प्रसाद मन्दन

बनोकब डकैत (एकांकी)

पहिन दृश्य-

(मोजेनार गबदनिमे ठोर, हाथमे ढकड़ कि रँजौना नेने आगु-अ गू
आ भजन नार पाछु-पाछु ।)

मोजे नार- (डंका जकाँ रँजरेत, कनी कार ठोर रँजा, रँन करैत) नगब-
नगब, डगब-डगबसँ गाम-गामक, समाज-समाजक भाए-रँहिन, काका-काकी,
दादा-दादी अत्यादि सभसँ कहै छी, सुने- जाउ । भजन-नार भाय रीच
छथि ओ कहता ।

भजन नार- गाम-समाजक जे भाए-रँहिन छी कान थोति सुनु । जँ नै सुनरँ आ
पछाति कहरँ जे तेना कान गजिया गेर जे से सुनरँ ने केनौ । से
नै हुअए ।

मोजे नार- (पुनः जागरँ ध्रनिमे ठोर रँजा) भजन भाय, अपन रिचाव
कहियौ ।



ভজন বান- কান্দি ভাবেসঁ বনোকব ভৈয়া ঐঠাম প্ৰাযোত্‌সৰ ডিযনি ডপ্ৰথা কাডিক
খাশী নৈ কবৰঁ ।

মোজে বান- ভায সহএৰঁ, ডপ্ৰথা কাডি কি কহনিওঁ ?

ভজন বান- খাৰঁ দেখে ডী জে গামসঁ, পবিত্ৰাবসঁ এতে তক কি রাঁপ-মাএসঁ
করোড় । যোজন দুব ডী ক্ষুদা বৈঠা-বৈঠিক জন্মোত্‌সৰ মনা হজারো-
নাখা কাডি জতএ-তজএ বিন্নহি দগ ডিওঁ । ক্ষুদা... ।

মোজে বান- ক্ষুদা কি ?

ভজন বান- যএহ জে পহিনে ডুট্টাখাৰঁ পড়ত জে কোন কাড হকাব সদৃশি খাঙি
খা কোন ভাবক সঁগ ভোজনক খাঙি । ও ত নৈ জে 'জান নে পহচান,
হমব তোহব মেহমান' ।

মোজে বান- (এক পুন তোর বঁজবৈত নচৰৌ কৰৈত খা গেরৌ কৰৈত)

নোত এলৈ হৌ ভৈয়া, হকাব এলৈ হৌ

বৈন ডোরবৈত বৈনা এলৈ, পীপহীক ক্ষুস্‌কান হৌ ।

ফড়-খহিব ফড় বিন্নহি রাঁষ্ট

জোগী-ভানী বনোকব ডকৈত ভৈয়া হৌ ।

(দোহবা-তেহবা, তোরো বঁজবৈত খা গেরৌ কৰৈত ।) অসখিব
হোগত-



भजन भाय, नोत-हकावक ठोरहो छी, तँए दोहवा-तेहवा क२ कहियो ?

भजन वार- से की ?

मोजे वार- जहिना सोना भेठनौं आ हरनौं प्राशित कबरए पड़ै छै तहिना ने नतो-हकाव छी । सबही आमक पीपही नीक-नीक कनयी जौड़क जौड़ पारि नाता जौड़ा सबही-सँ-कनयी रनि जागत अछि तहिना ने नतो जौड़न जागत अछि । आ तँ ने ने जे हूर्मत दूखारे ए.पी.एम.क माध्यमसँ सम्वन्ध जौड़ा लेरै ।

भजन वार- से की ?

मोजे वार- यएह जे कोनो रिखाह छै आकि मुँडन आकि कोनो आन छोट-पैघ काज, जखने काज परिवारसँ डुपव उठैत अछि तखने ने परिवारसँ उठन सोच-बुझिक जकबत पड़ैत अछि, तखन अहाँकेँ अपनसँ छुट्टी ले अछि, केना पड़ुआएन लोक अहाँ संग सम्वन्ध रना बहत ।

भजन वार- जहिना तँ मोजे वार, रिव्र खतिखानक मादिक तहिना हम भजना हक नागनिसँ न२ क२ खोजवा-खेजवा चैकरीत रीपाक ओहन सब सद्दमे पहुँच जाग छी जे घण्टा भवि पठवा दरने एकठा मके हूँटि क२ आपड़ा सँ कुदि माँटिपव अरैत अछि ।

मोजे वार- भाय सहएरै, अहाँक रात ले रूमनौ ?



ভজন নার- জহিনা ভঞ্জন গাছমে লষ্টকি জীরন যাত্রা করৈত তহিনা ফুড় মাষ্টক
তরেমে জীরন যাত্রা করৈত খুচি, তঁএ ওকব জিনগীক কোনো মহত নৈ ?
কী ও জীরনদাতা নৈ ছী ?

মোজে নার- ভাষ সহএর, বুঠ ভেনে খহাঁ ভঁসিয়া জাগ ছী ?

ভজন নার- সে কেনা ?

মোজে নার- হম তঁ গাম-দেহাতসঁ শিহব রঁজাব ধবি নে ঘুমে ছী । জারৈ রঁজাব
নৈ রঁনত তারৈ চৌকীদাব কেনা ফুড়ত । দেখৈ ছিওঁ রঁড়কা-রঁড়কা
রঁবিখাতীমে এঁজন গাড় ক পতিখানী নগর, তগমে ছৌড় ৷-ছৌড় ৷ সভ
খপন গাড় ৷ সঠা দেত খা ভবি বাতি খা-পী উমৈক নেত ।

(গোবক খরাজ স্রনি গামক মিসব নার খা বমশ নার খরৈত, দুন্ধুকে
দেখিতে পাশা রঁদনৈত)

নোত এনৈ হো ভৈয়া, হকাব এনৈ হো....

(মোজে নারকেঁ চুপ হোগতে ভজন নার মিসব নার দিস তকরক । ভারাত্মক দৃশ্য ।
কেনা মিসব নারক খবখব কপৈত মন ক্ষিট্ট রাজএ চাইত, তহিনা ভজন
নারক পিয়াসন পথিকক দৃশ্য গত্যাদি... ।)

ভজন নার- (মিসব নারসঁ, খাএ 'গবী তানি রাঁহি উঠা) খহাঁ ক্ষিট্ট রাজএ চাই
ছী ?

মিসব নার- হঁ ।



भजन नान- तखन झूठ किथए चोरौने छी । जारै अपन रात काज कपमे
दुनियाँक राँच नै बाखरै तँ के केकब कि केनके से तँ बुझए पड़त ।
मन असुखि कइ राँजू । ओना अखन उत्सवक समय नगिचाएन अछि तँए
नीक छत जे अछि सब कपड़ १-नत्ता साफ कइ नी, केशी-दाढ़ी,
जूता-चप्पन ठीक-ठाक करैमे जते समय लागत तँसँ रैसी समय नै
अछि ।

मिसब नान- (कँपेत) भाय-सहाएँ, अहाँक उत्सवमे तेहन मँच रँनत जे
श्रीमान्-श्रीमती होगत-होगत रँजैक समेये ओना जखत तखन तँ
जहिना भोजमे सब दिन धकिखागत-धकिखागत एँ ठाँव नग पँचू
गेलौ ।

(रिँचमे मोजे नान डिगरी चानिमे ठोर रँजएँ नगैए)

भजन नान- भाय, नै तेहन राँत हमबा धइ नेत आ नै धड़क डब होए
झुदा पैघ काजक आगु छोट काजकेँ किछ रिनमा देर नीक होए छै ।
नग, जँ तँ रँड धड़कड़ एँन छह तँ चरह बस्ता पकड़ि सँगे-सँग ।
काजो चरते आ भजनो-कीर्तन चरते ।

(तग राँच बमन नान मिसब नानकेँ डपटैत राजन)

रँजैने जे सतमसुखा रँछा जकाँ पैठमे डधकेँ छौ से दारि कइ
बाख नै तँ कहि दग छिँ ।

मिसब नान- कि कहमे, जे कहक छौ से भने तेहननाक राँच छँहै राज ?

बमन नान- अपन राँप-प्रबन्धक नाथाँ ' बुझन छौ ? अपन किछ बुझने नै छौ
तँ दस गोरमे की रँजरीही ।



VIDEHA

मिसब नार- जखन दूनु गौरे संगे बँह छी तखन तूँ पहिने ने किछु चेता देने छेलौ ?

बमण नार- तूँ प्रछलौ कहिया ?

मिसब नार- अँग रौ, रिन प्रछनहि भवि दिन संगे बँह छी । तद्धमे जे नजबिपब चढ़रौ ने कएत से केना प्रछरौ ।

बमण नार- अँग रौ, कि तौवा रूमि पड़' छौ जे जहिना आवती घुमा लोक भगरानकेँ ठकि भवि बाति अन्हरेमे बथे छन्हि, से हम तौवा केनिओ ।

भजन नार- देखु, अहाँ सभ रँड अल्ला करै छी । कौन्का काज कि सभ अछि से मन पाड़ए दिख ।

(सभ जागत अछि)

दोसब दृश्य-

(भजन नार, मिसब नार आ बमण नार अरैत अछि ।)

भजन नार- भाय, दुनियाँक खेत अजरी छै । जेना सद्मदमे जागठ-सीमा ने होग छै तहिना ने अछि । ई अथाह माष्ट-पानि रीच छँपैक तीनु राँष्ट तेहेन भ२ गेल जे... ?



मिसब नान- भाय, चुप किथए भेलह ?

बमण नान- भजन भाय, दिनैबक सर्ग दिनाक जखन भैँष्ट होग छै तखन एकठा नर अएनाक बग चढ़ छै । तँए झूहक रात योँष्टी नै, नग पचए तँ उगनि दिई ।

भजन नान- (रिस्मित होगत) भाय, एकठा रैँष्ट, तेना रैनवा गेल जहिना गाछ-रिबीछमे होग छै जे कोटा यो-राती देर रैन भऽ गेल । देसब दोगनागये गेल । तेसब रैँष्टक बगड ामे रूठ ाड़ १ पबि रस्रपाबिये बहना सुखदेर जकाँ खाडरन-कोपीन नै लेलनि । खएब, जे होड... । पहिने रैँसक ओबिधान कक ।

(मिसब नान सतर्बजी मोँष्टबी थोनि पसाबए नगैत, तीनु गोँष्टे तीन काणे पकड़ा रीछा, जाजम रिद्धरैत छँडि । रिछान तैयाब होगते बनोकब मँचपब अरैत छँडि ।

माथमे तीन भरी केशि रान्हन, चानिपब तीन वकीब, दुनु दिस उजड़ १ रीचमे नान । दाढ़ १-मोड भयंकब । रीहि गबदनिमे कद्रास्कक माना, दहिना हाथमे कर्मडन, पीढ़ १पब नगैँष्टागे रान्हन प्रवान कमलक मोँष्टबी ।

मँचपब बनोकबकेँ अरिते तीन गोँष्टे पाछ-पाछ सेहो नावा नगैँष्टे-

“बनोकब भैया,

जिन्दाराद ।

बनोकब भैया

जिन्दाराद । ”



बनोकब- (पाछु घुमि) सोनेन हनुना केने आ नावा नगौने नै तेतह । छप-
चाप सब भइ जाह । रैबा-रैबी अपन-अपन जिनगीक रात-रिचाव
समाजकेँ सुना दहू । धर्मबाजक न्याय भेटैत, नै कि यमबाजक ।

महेश- भाय सहअरै, अपनक जीरन यात्रा रहूत नमहब अछि ओते सुनैले
ओते निचेनियौं चाली नै, से भूखन पैठ कतेकार सुनि अमर कबत ।
जग अनाकामे साने-सान रौदी, दालीक संग उपजाड माष्ट नमष्ट भइ
गेन अछि तग अनाकामे यात्री कते दुब जीरन यात्रा कइ सकैए ?

बनोकब- कि मतबर ?

महेश- भूखे भजन नै होग गोपाना ।

निख बखि थक कण्ठा मारा ।

बनोकब- महेश, अहाँक प्रश्न जेहेन सुन्दर अछि तेहेन कठिन । झुदा
समूहसँ बने निकारै आ जंगलसँ सिब-शिरोमणि खानै, दुनु दु दिशा छी ।

गणेश- एना नै हएत, कनी गुंगरीपव (गुंगरीपव जेना हिसार जौड़न
जागत) हिसार रैसा कइ रूमा दिख ।

बनोकब- गणेश रौड, कान थोनि सुनि निख । आ धवती रिशार बगमच छी ।
माष्ट-पानिक रीच बगमच सजल अछि । जे जेहेन यात्री छथि ओ ओहेन
अपन रौष्ट पकड़ा पाड़ करै छथि ।



VIDEHA

गणेश- कि मतवरै ?

बनोकब- मतवरै यएह जे कियो अपन जिनगी हरन दैत अछि तँ कियो दोसबाक हरन नैत अछि । एएब, जे होड... ।

(रिछमे, मिसब तार अपन रात उठरैए चाहक आकि सुरेसब तनकि राजन) एनेरे... ।

बनोकब- तखन पहिने रुबिया निथ पड़त जे थागने जीरै छी आकि जीरैने थाग छी । दान देरै नीक आकि नैरै नीक । आकि नैरै-देरै नीक । आकि देरै-देरै नीक ।

गणेश- नैरै-देरै नीक छी । दू नीक छी कोनो ने नीक ने अपन छी ।

भजन तार- तखन ?

गणेश- रैरहाबिक धवातवपव जे अधिक नीक हूअ ?

भजन तार- अधिक नीक दू दिशा छै ?

गणेश- से की ?



ভজন নান- অধিক লোকক শির্দিক রিচাব আ অধিক লোকক জিনগীক রিচাব ।

বনোকব- ভজন জেহনে তুঁ সায় ভোব বাতি-দিন নয়-ধুন রঁদনি-রঁদনি একে
রাতকৈ ওঠে-পৌড়ি ডহ তেহনে গণেশি খিচি । ভাবী দেখি হাখী চড়র
নীক ঝুমনি, ঝুদা হাখী কেনা পোসাগত খিচি সে বুবিযে নে ভেননি ।

গণেশি- (খিসিয়া কহ, দহিনা হাথ ডুপব ঘুমরৈত) তীন নকীব হম দগ ভী,
তাপবি হম নে মানর জাপবি ওহন ভোগী নে আনি দেখা দেব ।

বনোকব- হকাব দিখএ তোহী নে গের ছেনহ, তঁএ তোরে নে ওহেন হকবিয়াস
ভেঁঠ ভেন হেতহ ?

ভজন নান- ভৈয়া, বুড় ামে অহাঁ ওহনে অগতাহ বহি গেলোঁ জেহনে সমবথাগমে
ভেলোঁ ।

বনোকব- (হসকা দৈত) হে বুড়ি রক, কেতরৌ ধড়ফড় । কহ কাজ কবরহ,
তঁএ কি কাজ পহিনে খোড়। ভহ জাগএ । কাজক জে আপন সমএ ঠৈ
ওগ অন্ধকূর জে কবৈত খিচি, ও কশিভ ভেন । ঝুদা... ।

সুরেসব- ঝুদা কী ?

বনোকব- যএহ জে জঁ ধড়ফড় । কহ কবর তৈযো আ অবিযে কবর তৈযো
যা তঁ আরো গজপষ্ট জাএত রা উরাপি ভহ জাএত ।



सुरेसब- सुराणियो तँ भऽ सकैए किने ?

बनोकब- र्मयोगरशी, निश्चित नै ।

भजन नार- (धड़कड़ १गत) भैया, खहाँ खनेरे कोन घंघौजमे नणि गेलौ,
मोतीरँना सिन्धुआ दोसब होग छै भनहि नाँ कियो बथि निखै ।

(भार दृश्य) नै किछ बनोकब रँजैत, झुदा चेहवा कहैत समुद्रक सिन्धुआ
आ रँवमाती डरँवाक सिन्धुआ एक रियान केना कबत । एक खजब-खमब
रौच जीरन-यापन केनिहब, दोसब तीन मास तेनुखाव तीन मास बथनारा,
मिना छह मास । (भजननार हवाएर झुदामे रँडरँड १गत)

‘मनमे बहिनो साँम-भावे ओहए गरै छी ।’

(सरँहक झुदा अपन-अपन रिचावानकुर । सभसँ भिन्न मिसबनारक । जेना
किछ रँजैले झँह ब्रस-ब्रुस करैत, तहिना ।)

मिसब नारकेँ ब्रस-ब्रुसागत देखि सुरेसब रँजनार-

मिसब नार खहाँ किछ रौजए चाँह छी ?

मिसब नार- (दुनु हाथ जोड़ा) हँ, भाय सहएरँ । हमवा सन लोककेँ रँजैक
एहेन समए कहिया भैठैत ?

गणेशी- (रिंगड़ा कऽ) मिसब नार रँजैक छह तँ जन्दी रौजह, अखन धवि
चाहो नै भेर खडि । एना जे तेनिया-बुनिया नगेरँह तँ घौच-घाँचमे
दु-चावि कड़ि १ खमीन खागये जाग छै ।



भजन तार- माने ?

गणेश- माने यएह जे जखन रौसक सोनका तगगा छलै तखन नमहव धुव-कण्ठा छलै । जखन चास-रौस घटलै तखन अट-कटमे पहुँच गेल । झुदा नपेक यत्र तेहेन स्त्रीगदाव भऽ गेल जे केमहव कि भऽ जाएत जे... ।

बनोकब- समेपव धियान बखु । भजन देवी किथए होग छुह ?

मिसव तार- भाय सहाएँ, दुनियाँक बीतिक खनुसाव दूबागमनक अपनो कर्तव्य रूमनिई । तनियेँ सारमे दूषा रैथै भऽ गेल ।

गणेश- अपरेशन किथए ने कवा नेलौं, जखन दूगये रँछाक कोठा छै ?

मिसव तार- भाय सहाएँ, सुने छिई समलौगिक समरन्ध । ओग कठौतीस कोठा ने प्रवते ?

बनोकब- खागु रौजु ?

मिसव तार- भाय सहाएँ, मन अपनो दुनु पवानीक सह भेल । देखे छी जे एकठा रैथै-रिख रहमे जिनगी भविक कमागसँ पारो ने तगै छै, तगठाम दूषाक भाव तँ रैसी भेरै कएत ।



बनोकब- (झड़ १ डोतरैत) हँ से तँ भेल । तखन...

मिसब नार- (अठरौ हँसी हँसैत) दुष्टा ओही रीच भइ गेल, जग रीच फड़ा एरौ न
कएन जे दुनुमे के अपरेशन कबरी ।

भजन नार- एक गप्पा भेल ?

मिसब नार- गारीमे एक कमे अछि ।

बनोकब- पछाति ?

मिसब नार- माएक कानमे अपरेशनक समाचार पहुँचते मधुमाद्रीक गीत जकाँ गरैत
दिन-राति एके सोखब गरैत हमबा मौसीकेँ तेबहँ रैथी बह से पाब-
घाँठ नगरै केनौ आ एकबा सभकेँ चाबिये ठामे ठग्न ठीर होए छै ।

सुरेसब- (झस्की दैत) से तँ ठीके । पछाति की भेल ?

मिसब नार- तत्काल भागक रात मानि गेलौं । अपनो दुनु पवानी रिचाबलौं जे
जँ कही मागयो-रौपक असीबरादसँ आगु रैथै रैथै हूथए ।

गणेशी- (थिसिया कइ) एह रूँडा कही केँ, हम एते दिन-राति तराह बह
छी से पिया-पुता डरे रिखाहो न केनौ आ हिनका झनहबक झूठ खुजि
गेलनि ।



(गणेशीकेँ फ़ाषित देखि मिसब तान ठहका दैत)

मिसब तान- (धूनधूना क२) रैपजेठ जकाँ केहेन गवमी छन्हि । झुदा जोबसँ किछु नै रैजताह ।

भजन तान- मिसब भाय, एना जे ि तनकेँ ताब रैनेरैह तते समए नै छत्र ।
जन्दीमे अपन रात खन्त कबह ?

मिसब तान- हकाब दगले जे गेल छेनह से कहने छेनह जे अपन रात
धड़कड़ १ क२ रौजरी ।

बनोकब- देखु रिचाब दु ठगे लोक करैए, उपचारिक आ अनौपचारिक ।
अनौपचारियो उपचारी रैनेए झुदा रौचमे शोसकीय सूत्र आरि जागत
खडि । खच्छा आगु... ।

मिसब तान- हिसारै जोड़ा लेनिई किने । दुष्टा दुनियाँ बीतिक खनसाब, दुष्टा दुनु
पवानीक मगड़ १-मिलान, मिलान-मगड़ १मे ।

गणेशी- जते कर-खनदानक खतिखान-रैही छह से अखने डन्ठा दहक ।
बसखनलाक आसामे कचोबियो सुथि क२ ठाँठ भ२ गेल हएत ।

मिसब तान- गणेशी राबू, अपने लग नै रौजरै तँ रौजि कतए पाएरै । कनी
धियानसँ सुनि दृष्टि-कुष्ठ थोरियो । तखन नै भाँजि पेरै ।



ভজন নান- মিসব ভায, তোঁ ততে নে মেঠনি করে ডুহ জে কুশিয়ারো বসকেঁ
মিসবী রঁনাগযে কহ ডোড়রঁহক ।

মিসব নান- অচ্ছা হুনডে ভের । অখন ধবি সাত রেঁঠী রঁনা সত রেঁঠীয়া নাও
গ্রহণ কহ নেনে ডুনৌ ।

বনোকব- পছাতি ?

মিসব নান- (জেনা রিঁদনী কঠরাপব ডুঠপঠাতি হোগত) এহ ভায সহাএরঁ, কী
কহরঁ । (দুনা হাথ মাথপব নৌত) ভোরে-ভোর একঠা একবঁগা আএন ।

ভজন নান- কে বহএ ?

মিসব নান- কহরঁক জে ঘব তাঁ অহী ওলাকা অছি সূদা কামাখ্যা সীথ ডী ।
হমছাঁ এক রেঁব কামাখ্যা গেন ডী । কপৈয়া হাথে মহবানীক দর্শন হোগ
ডুৈ ওতএ ।

বনোকব- আগু রঁঠু ।

মিসব নান- ভায সহাএরঁ, সরঁ সএ কপৈয়াক বসীদ কাষ্ট হাথমে থমহা দেৱনি ।
হাথমে একেঠা পাগ নে । রিন্ন থেরাক যাত্রী জকাঁ ঘবরাব নগ বিনতী
কেনৌ ।



VIDEHA

गणेशी- (मोकमे) कि रिनती केनौ ?

मिसब नान- कहनिथनि, रौरा महबाज, रैँठीक माबिसँ मबि गेल छी केना अहाँकेँ
थुँशी क२ क२ दवरँज्जापवसँ रिदा कवरँ ।

गणेशी- तखन कि केनौ ?

मिसब नान- ओ जेना बुँमि गेला । नगने आँथि-ताँथि डनठरैँत-पुनठरैँत
कहननि । जते तोबा रैँठी छह तते तोबा एक्करैँव रैँठा देरँह, राजह
मँजुव छह ?

गणेशी- पछाति कि केनह ?

मिसब नान- मन पघिर क२ बाँग-बाँग भ२ गेल । झुदा घबराती धबि कहि देनक
जे आ ठकहवरा छी ।

गणेशी- पछाति कि भेल ?

मिसब नान- जे तकदीबमे निथि देने छेनिई, से भेल ।

गणेशी- हमही निथि देने छेनियह ।



मिसब नान- सभ दिन भागरत रैछे छी अहाँ आ नाँउ नगरेँ दोसबकेँ ।

भजन नान- उत्सव शुक होएक समझ कबीरँ आरि गेल । जारेँ तैयार हएँ तारेँ समेओ आरि जाएत ।

क्रमशः जारी...

ई कनापब अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



ओम प्रकाश

गजलक लेल (समीक्षा)

श्री रिजय नाथ माजीक गीत-गजल संग्रहक पोथीक नाम अछि "अहीक लेल" । ई पोथीमे गीत आ गजलक हवाक-हवाक दुई प्रभाग छै । हम ई पोथीक गजल प्रभागक सँधमे ईठाँ किछु चर्चा कब चाहै । ई पोथीमे गजलकाब श्री रिजय नाथ माजीक अठहतरि गजल प्रकाशित भेल अछि । पोथीक गजल पठनासँ ए पता चलैत अछि जे किछु गजल केँ डोडिक रहैसी ठाँ काहिया आ बदीक निश्चयक पानन कएल गेल अछि । पृष्ठ संख्या ४१, ३०, ३४, ३३, ३३, ३१, १९, १४, १३, १२, १४, १०, १०, ११४ पब दुपल गजलमे काहिया गडरैडएल अछि । ईठाँ ए बेथानमे बाथराक चाही जे रीना दूकसु काहियाक बचना गजल नै भइ सकै । तखनो अप्रकाशित गजलक काहिया दूकसु अछि, जे गजलक विकास यात्राक हिसाबेँ एकठाँ नीक लक्षण अछि । काहिया, बदीक आ गजलक रूपांतरक निश्चय पानन कबराक हिसाबेँ गजलकाब ओहि गजलकाब सभसँ हवाक श्रेणीमे छथि जे गजलक रूपांतरकेँ नै मानराक सम्पत्त अछि ।

ई गजल संग्रहक गजल सँ कोन रहबमे लीखल गेल अछि, ई पब गजलकाब मौन छथि । गजलक नीचाँमे रहबक नाम जकर लीखल जएराक चाही । रहबक ज्ञान नै



पौथीक गजलकाब सभमे रँटेरामे ग्रा महत्त्वपूर्ण डेग रहत । ओना तँ गजलकाब कोनो गजलक नीचाँमे रँहबक नाम ले नीखने छथि, झुदा गजल सभकेँ पठनासँ ग्रा पता चलैत छै जे ई संग्रहक ठेवी गजल एहन छद्म जाहिमे खबरी रँहबक निश्चयक पानन कबराक नीक प्रयास कएल गेल छद्म । ग्रा स्वागत योग्य गप छद्म । ईसँ अहो पता चलैत छद्म जे गजलकाब खबरी रँहबसँ नीक जकाँ पवित्रित छथि आ जँ ग्रा रौत छद्म तँ हुनका रँहबक नाम गजलक नीचाँमे बबिद्धाकेँ नीखराक चाही । ई सन्दर्भमे हम पौथीक सरसँ पहिलक गजलक (पृष्ठ संख्या ४३.) मतनारकेँ उद्धृत कबऽ छद्म-

हमब पूजा, हमब पवित्रय, हमब शृंगार छद्म अपन

सकरन सौभाग्य, मन, काया, कषिब-सँचाव छद्म अपन

आरँ एकब मात्रा संवचना पब देखान दिओ, तँ पता चलै छै जे ईमे मूल ध्वनि मन्त्राङ्गन माने "झुझ-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ" सरँ पाँतिमे चाबि रँव प्रयोग कएल गेल छद्म । माने ग्रा शैव रँहब-हजलमे कहल गेल छै । ई गजलक आनो शैवमे मोठामोठी किछु गरतीकेँ छोटि रँहब-हजलक प्रयोग छद्म आ किछुठाँ रँग दूकसु कऽ देना पब ग्रा गजल खबरी रँहब रँहब-हजलमे छद्म । ग्रा एकठाँ उदाहरण छद्म, एहन आरो गजल ई संग्रहमे छै जे रँग आ मात्रामे किछु परिवर्तन भेला पब खबरी रँहबमे कहल मानल जाएत । हमबा ग्रा आस छद्म जे गजलकाब अपन अगिला गजल संग्रहमे ई रौतक देखान बाखतह आ खबरी रँहब हाऊ गजल कहिकऽ मैथिली गजलकेँ समृद्ध कबतह । शैवक पाँतिक अंतमे पूर्ण रिवाम रा कोनो रिवाम चिन्ह ले नगैरौक निश्चय छद्म, झुदा पौथीक गजलक शैव सभक पाँतिक अंतमे पूर्ण रिवाम नगाओल गेल छद्म, जे निश्चयानुकूल ले छद्म आ एकब देखान बाखत जएराक चाही छद्म ।

संवेदनाक सुवपब ग्रा गजल संग्रह रँहब नीक छद्म आ गजलकाबक रिवारकेँ प्रकट करैत छद्म । झुदा कएकठाँ भारी भवकम तसेम आ संस्कृतक शिष्टक प्रयोग गजलकेँ रूमरामे भारी रँनरैत छै, जाहिसँ रँचन जा सकैत छद्म । गजलमे क्लासिकल भाषाक प्रयोग नहिह हेराक चाही, अपितु आम प्रयोगक भाषाक प्रयोग गजलक लेल रँसी नीक होगत छै । शैवमे एहन शिष्टक प्रयोग जे आम रँहबमे ले छै, गजलकाबक शिष्ट, सामर्थ्यकेँ तँ जकब देखावैत छै, झुदा शैवकेँ आम जनसँ दूर सेहो करैत छै । तेँ शैव कहराक कार हमबा हिसारै रँसी किन्तु भाषाक प्रयोगसँ रँचराक चाही ।

अंतमे ग्रा कहल जा सकै छै जे "अहीन लेल" पौथीक गजल प्रभाग मैथिली गजलक रिकसित होगत कपकेँ अस्पष्ट, कपेँ, झुदा देखवैत जकब छद्म । ग्रा पौथी गजलक रीकबक हिसारै किछु गरतीकेँ छोटिकऽ नीक प्रयास छद्म । ई संग्रहक कएकठाँ शैवमे खबरी रँहबक पाननक प्रयास महत्त्वपूर्ण आ नोस्टैस कबराक जोग छद्म । कएकठाँ किन्तु आ संस्कृतनिष्ठ शिष्टक प्रयोगकेँ जँ कात कए कऽ देखल जाग तँ संवेदनारक सुवपब सेहो ग्रा संग्रह नीक छद्म । मैथिली गजलक रिकस यात्रामे ग्रा पौथी गजलक भविष्यक लेल नीक डेग छद्म ।



ई कनापब अपन मंतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



१. जगदीश प्रसाद मण्डक रिहनि कथा- जनक हाथे खेती २.
रिन्दरिब ठारुब- रिपतियाक रिदेशे [रिहनि कथा]



१



जगदीश प्रसाद मण्डक रिहनि कथा

जनक हाथे खेती

दतमनि काष्ठे भैयाकाका हँसुआ नैने धड़कड़ एन रँसरिष्टी दिस जागत छुनाह आकि
बस्तेमे नुनखाँ प्रछनकनि- “ भैयाकाका, सरासती पुजा कहिया छिई ? ”

काजमे रिनम होग दूआरे भैयाकाकाक मनमे उठनि, जखन प्रछनक आ नै कहैँ ए
उचित नै । जखन काका बूनेँ तखन अपनो तँ दायित्व रँनेँ । झुदा नगले मनमे
उठनि, आठ दिनसँ पतरो नै डनछेलौं तखन ओहिना केना कहि देखैँ । आरँ कि ओ
समय बहन जे श्राद्ध कर्म कवरैँ कार एक गोष्टे कवरैँ छुनाह आ दोसब गोष्टे रिपि-
रिपान देखैत छुनाह । झुदा जतए जे होउ से होउ । अपना मनक मौजी रँहुँ
कहलौं भौजी जे कहते से कहौं झुदा छुसल रात नै रँजरँ । नुनखाँकेँ कहनि-
“ रौँआ, आठ दिन पतवा देखना भइ गेल, देखि कइ कहलौं । अखन दतमनि काष्ठे
जाग छी, नग रँवदेरौं । ”

जहिना गामक सब भैयाकाकाक रात मानै छन्हि, तहिना नुनखाँ सेहो मानि गेल ।
झुदा दोहवा देनकनि-



“कान्ति दूधबबमे आरि क२ बूझरै ।”

भैयाकाका रँजना किछु नै, किएक तँ रिवाम दगक जगह बूझि पड़नि । झुदा मनमे उठनि रँड खचचब छौड़ । अछि । कछु जे रँबह रँथसँ उपरक डमेव हेतै, सौसै गाममे छैले-छैल घर-घर पूजा होएते छै, से नै देखै सुनै जे प्रदुतक । झुदा मन ठमकि गेलनि । मन पड़ा गेलनि पनीक रात जे कहने छेलथिन- “तीन कष्टामे जते गहुँक नगता नागर छन दामक भाँडरे ततरै भेल ।”

कविआगत मन कड़लनि । झुदा कहलै केकवा कवितथिन । रँसरँसीमे हँसुआ नने आँखि नरका कड़ुछी तकेत बहनि झुदा मन जनक हाथे खेती कवरामे रौआए नगलनि । सोलमे कड़ुछी बह झुदा नजबिपब चढ़लै नै कबनि ।

नमहब-नमहब रँसिक रँसरँसीमे ठाढ़ छी झुदा दतमनि नै भेटै बहल अछि । रिल्लन होएत झूह पष्टपष्टलनि-

“जनक हाथे खेती ।”

रएह जनक नै जे रँबह रँथक रौदीमे हब जोति मिथिनाचनक धबतीरै असाथिब केननि । एक हाथ पनीक करेजपब तँ दोसब हरनमे आछत दैत छलाह । रएह मिथिना बाज छी नै जगठाम पढ़रै, अध्ययन कवरै पूजा नै । असन सबस्रतीक पूजा तँ देखिते छी । ।

२



रिन्दुशेव ठाकुर, धनुषा, नेपाल । हात-कताब ।

रिपतियाक रिदेशे [रिहनि कथा]

कतेको दिनसँ झुह बोकचौने रिपतियाक ओठपब आग भवत झुझान अछि । काका तीन महिनाक रँद पश्चिम दिससँ चान्द उगल । माने कम्पनी आग तवरै दैरौक नेल बाजौ भेल । तीन महिना धरि रिभिन्न रँहना रँनाक२ ठारैत छल । अगला महिना,



अगला महिना, अगला महिना..... । झुदा तीन महिना रौद कामदार सब जुर उखडन त कम्पनी सेहो रिरने भं गेन सेनवी देरौक लेन । झुदा ओतेक सोमिया ने बैक कम्पनीक मनेजब । लेरैव सबके ठकि हुसना क२ एक महिनाक तनरै देनक आ २ महिनाक बाथिने लेनक । अन्ततः जे हुअ, सब कामदार खुशि लेन । रिपतिया सेहो खुशि लेन ।

सेनवी न२ पैसा गनेत अछि त माव पाँच गोष्ट नमबी । पहिनेसँ आधन झुस्मान रिपतियाक झुहसँ रिना गेलैक । ओ चिन्तित भं गेन । काबु खानाक पैसा रँझौलीकेँ उधारिने छलै । चूल्हा चोका चलाएरै हेतु घबमे पठाएरै पडतनि । ओतरे कहाँ मन्थ्यास लेन तौरा ने बुनेताह त ३,०००० क सुगद-सुगद जोडि क२ २ लाख रँनाथ देते । आरै की कबत, रिपतिया गम्भीर सोचमे पडि गेन । "घब पबिराव छोडि क२ सात सन्ध्या पाव अएनी पखेब होड२ झुदा तेयो घब ने चनन आ पेष्टे ने चनन, पिकाव अछि हमब मेहनत आ हमब कामकेँ रँवरँड १गत आ नथरैत जेझीत ZEKPEET क ट्रस्ट एक्स्चेंज trust exchange मे जा प्रभु मनी प्रान्स्फर द्वारा पनीक नामसँ खाना पैसा रौहक सब पठा देनक । आरो ने किछु त ओ मन्थ्या धनिककेँ कर्जा त सपते ।

ए कनापब अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाड ।



उमेश मिश्र

बिदेह नाँठ उत्सव- 2013

मधुरनी जिनान्तगत चनौबार्गजमे, बाष्प्रीय बाजमाझ-57क सँठने उतवरावि कात बिदिरसीय आयोजन जे "बिदेह नाँठ उत्सव" क कर्पे प्रसिद्ध अछि आयोजित लेन । आयोजन दिसरु दुन रिगत 15-सँ-17 फेब्रुवरी । बिदेह प्रथम मैथिली पारिस्थिक ग्र-पत्रिका नाँठ-बर्गमट-फिल्म रिभागक संपादक श्री रँचन ठाकुरक संयोजकतमे ए आयोजनक सफल समापन लेन ।

दुष्ट नाँठक, दुष्ट एकाँकी नाँठक, ब्रह्मड, जँ-जँन, होली, नडनी, गंगा न्याँकी, गुरान-रौन न्याँकी, रौन नीना न्याँकी, लोक समूह गीत, स्रागत गीत, समूह नृत्य,



हास्य-चठनी, महादेव-नचावी, बाष्प्रीय एरं भक्ति पवक बाँकी अतुयादि-अतुयादि अनेक कार्यक्रमक प्रसुतुतिक सर्ग करि सम्मेलन तथा कला एरं साहित्य क्षेत्रमे “बिदेह सम्मान समारोह” क आयोजन सेहो कएत गेल । परांपर्याक लोकक उपस्थितिक अन्तर्गत करि-सम्माननमे तथा सम्मान समारोहमे अएत समस्तीपुर्व, दबडंगा, सुपौल तथा मधुबनी जिलाक शिष्ट र्यक्तिक उपस्थिति ई वार्षिक कार्यक्रमकेँ अल्लादकारी ओ सम्बर्णीय रैनौतक ।

पहिल दिन अर्थात् 15 फेब्रुवरीकेँ दिनक 11 रजेसँ बातीक 10 रजे धरि, दोसर दिन माने 16 फेब्रुवरीकेँ मौसम खराप बहनाक कारणेँ दिनक 3 रजेसँ 11:30 रजे बाति धरि तथा तेसर दिन 2 रजेसँ बातिक 12 रजे धरि उपरोक्त रिभिन्न कार्यक्रमक प्रसुतुतिक कपरेखा बहल । ई सम्पूर्ण कार्यक्रमक रिडियो बिकाडिंग सेहो कएत गेल अछि । प्राप्त सूचनाक आधारपर ई त्रिदिसीय कार्यक्रमक सम्पूर्ण रिडियो शीघ्रहि यु-टुवरपव सम्पूर्ण रिभिन्मे पसबल बिदेह-श्रीता-दर्शक तथा अन्य जेन उपलब्ध कबाओत जाएत ।

भाषा सम्मान, मूल साहित्य सम्मान, समग्र योगदान सम्मान, मांगनि खरास सम्मान, आत्म निर्भव संसृति संवर्क्षण सम्मान तथा अनुवाद प्रवसकाव एरं “मानद महत्त्व सदस्यता” सम्मानक ई कडिमे 47 गोष्ठ सम्मानित र्यक्तिक अल्लादकारी उपस्थिति एते सम्मान समारोहकेँ सफलता प्रदान कएत । हलाकि मैथिली पत्रकारिता सम्मान तथा उपरोक्त र्षित सम्मानक अनेक सूचीमे किछ र्यक्ति उपस्थित नै भऽ सकनाह तिनका सब जेन बिदेह द्वारा पुनः दोसर सबक सम्मान समारोह अगामी मार्च माहमे, सुपौल जिला अन्तर्गत निर्मलीमे आयोजित हएत तेकरो उद्घाटणा मंचसँ कएत गेल ।

सम्मान समारोह, नाटक मंचन, एकांकी मंचन तथा करि सम्मेलनक समाचार रिस्त्रावसँ निम्न अछि-

बिदेह सम्मान समारोह-

उद्घाटन- रुमाव वामेश्वरम्

अध्यक्ष- डा. शिररुमाव प्रसाद ।

मंच संचालक- उमेशी मण्डल ।



1. श्री बाजुदेव मण्डल स्वपत्र स्त्र. सोने तान मण्डल उर्फ सोनाङ्ग मण्डल, उमेव-
52, "अमर्बा" करिता संग्रह लेल बिदेह मूल साहित्य सम्मान-2012

सम्पर्क- गाम- झुसहबनियाँ, पोस्ट- बतनसावा, भाया- निर्मली, जिला- मधुबनी, पिन-
847452

2. डा. नरेश कुमार रिकव "यथाति" (रि. स. थाण्डेकर, मराठी)क अनुराद लेल
2013क बिदेह अनुराद प्रवस्कार। सम्पर्क- भगवानपुर, देसुखा समस्तीपुर रिहाव।

3. श्री जगदीश प्रसाद मण्डल स्वपत्र स्त्र. दल्लू मण्डल "तरेगन (रौत प्रेबक रिहनि
कथा संग्रह" लेल 2012क "बिदेह रौत साहित्य सम्मान"

सम्पर्क- गाम+पोस्ट- रैबमा, भाया- तल्लुबिया, जिला- मधुबनी (रिहाव) पिन-
847410

4. श्री बाजनन्दन दाव दास (प्रतिनिधि- डा. रूचक पासरान) मैथिलीमे समग्र योगदान
लेल "मानद महत्त्व सदस्यता" प्रदान कएल जा रहल अछि

5. नृत्य अभिनय लेल बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्वश्री सगीता कुमारी स्वपत्री श्री बामदेव पासरान, उमेव- १३, पता- गाम+पोस्ट-
चनौबागज, भाया- रसभावपुर, जिला- मधुबनी (रिहाव)

6. चित्रकला लेल बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"



श्री जय प्रकाश मण्डल स्वपुत्र- श्री केशीब मण्डल, उमेव- ३३, पता- गाम-
सनपतहा, पोस्ट- रौबहा, भाया- सवायगढ, जिला- सुपौल (बिहार)

7. चित्रकला लेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री चन्दन कुमार मण्डल स्वपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खडगपुर, पोस्ट-
रौबहा, भाया- नवहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, डाक्टर स्नातक
अंतिम वर्ष, कला एर शिल्प महारिद्यालय- पटना ।

8. हस्तिनियाँ राख लेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री जागेश्वर प्रसाद बाउत स्वपुत्र स्. रामसुरकप बाउत, उमेव ७०, पता-
गाम+पोस्ट- रौबहा, भाया- तल्लुबिया, थाना- नरनारपुर (आर.एस. शिरिब), जिला-
मधुबनी पिन- +८१४५० (बिहार)

9. गेवक-ठेकेता लेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री कव्वर बाब स्वपुत्र स्. अष्टव बाब, उमेव- ३०, गाम- नरनारियाँ, पोस्ट- डुजना,
भाया- नवहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

10. शिल्प-रासुतकला लेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री बाब बिरास धरिकाब स्वपुत्र स्. ठोठ १७ धरिकाब, उमेव- ४०, पता- गाम+पोस्ट-
चनौबागज, भाया- तल्लुबिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

11. मुर्तिकला लेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"



घुबन पडित स्वप्न- श्री मोहन पडित, पता- गाम+पोस्ट- रैबमा, भाया- तनुबिया, थाना- नमानपुव (आव.एस. शिरिव), जिला- मधुबनी (रिहाव)

12. काष्ठा कला लेव बिदेह - समग्र योगदान सम्मान

श्री योगेन्द्र ठाकुर स्वप्न स्. रूकु ठाकुर डुमेव- ४३, पता- गाम+पोस्ट- रैबमा, भाया- तनुबिया, थाना- नमानपुव (आव.एस. शिरिव), जिला- मधुबनी पिन- +४१४९० (रिहाव)

13. किसानी आयेनिर्भर संस्कृतिक संरक्षण लेव बिदेह - समग्र योगदान सम्मान

श्री राम अरताव बाउत स्वप्न स्. सुर्ष बाउत, डुमेव- ७७, पता- गाम+पोस्ट- रैबमा, भाया- तनुबिया, थाना- नमानपुव (आव.एस. शिरिव), जिला- मधुबनी पिन- +४१४९० (रिहाव)

14. किसानी आयेनिर्भर संस्कृतिक संरक्षण लेव बिदेह - समग्र योगदान सम्मान

श्री रोशन यादव स्वप्न स्. कपिलेश्वर यादव, डुमेव- ३३, गाम+पोस्ट- रैनगामा, भाया- नवहिया, थाना- लौकरी, जिला- मधुबनी (रिहाव)

15. अन्ता/महाभाग लेव बिदेह - समग्र योगदान सम्मान

मो. जीरु स्वप्न मो. रिठ मवहुम, डुमेव- ७३, पता- गाम- रैसहा, पोस्ट- रैडुहावा, भाया- अन्धवाठा १, जिला- मधुबनी, पिन- +४१४०९

16. जोगिवा गायन लेव बिदेह - समग्र योगदान सम्मान



श्री रञ्जन मण्डल स्वपुत्र स्. सीताबाम मण्डल, उमेव- ३०, पता- गाम+पोस्ट-
रैबमा, भाया- तल्लुबिया, थाना- नरनावपुर (आव.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन-
+४१४९० (रिहाब)

17. जोगीबा गायन लेव रिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री बामदेव ठाकुर स्वपुत्र स्. जागेश्वर ठाकुर, उमेव- ३०, पता- गाम+पोस्ट-
रैबमा, भाया- तल्लुबिया, थाना- नरनावपुर (आव.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन-
+४१४९० (रिहाब)

18. पवती गायन लेव रिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री लेखू दास स्वपुत्र स्. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- रैबमा, भाया- तल्लुबिया,
थाना- नरनावपुर (आव.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन- +४१४९० (रिहाब)

19. सबनी लेव रिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

मो. गुरु लसन स्वपुत्र अरुंदू बसिद मबल्लुम, पता- गाम+पोस्ट- रैबमा, भाया-
तल्लुबिया, थाना- नरनावपुर (आव.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन- +४१४९० (रिहाब)

20. नाव रादन लेव रिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री देव नावायण यादव स्वपुत्र श्री कृष्णमल्ल यादव, पता- गाम- रैनबमल्ला, पोस्ट-
अमही, थाना- घोघडडीहा, जिला- मधुबनी (रिहाब)

21. मैथिली लोकगीत लेव रिदेह "समग्र योगदान सम्मान"



श्रीमती रुदनी देवी पत्नी श्री बामरुत मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- रैबमा, भाया-
तल्लुबिया, थाना- रत्नावपुर (खार.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन- +८१४९० (रिहाब)

22. मैथिली लोकगीत लेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री श्रीमती रुमारी सुप्रती श्री गंगाराम मण्डल, उमेव- ९५, पता- गाम- मधुप,
पोस्ट- रैबिया, भाया- रत्नावपुर, जिला- मधुबनी (रिहाब)

23. खुबदक बादन लेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री सीताराम राम सुप्रती सुर. जंगल राम, उमेव- ७२, पता- गाम- लक्ष्मिनिया,
पोस्ट- दुजना, भाया- नवहिया, थाना- लौकरी, जिला- मधुबनी (रिहाब)

24. खुबदक बादन लेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री लक्ष्मी राम सुप्रती सुर. पट्ट मोची, उमेव- १०, पता- गाम+पोस्ट- रैबमा, भाया-
तल्लुबिया, थाना- रत्नावपुर (खार.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन- +८१४९० (रिहाब)

25. काबनेष्ट बादन लेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

मो. सुभान उमेव- ३०, पता- गाम+पोस्ट- चनौबागज, भाया- तल्लुबिया, जिला-
मधुबनी (रिहाब)

26. लोक सभ्भतिक सर्वज्ञ लेव बिदेह "मांगनि खरास सम्मान"

श्री राम वरुन साहू पे. सुर. खुशीनार साहू, उमेव- ७३, पता, गाम- पकडु या,
पोस्ट- बतनसावा, खनुमंडल- कुरुपवास (मधुबनी)



27. मिथिला चित्रकला जेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्रीमती रीणा देवी पत्नी श्री दिवसि सा, उमेव- ३३, पता- गाम+पोस्ट- रैबमा,
भाया- तक्रुबिया, थाना- नमानावपुर (आब.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन- +८१४९०
(रिहाब)

28. तरवा रादन जेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री उपेन्द्र चौधरी स्वपुत्र सूर. महारीब दास, उमेव- ३३, पता- गाम+पोस्ट-
रैबमा, भाया- तक्रुबिया, थाना- नमानावपुर (आब.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन-
+८१४९० (रिहाब)

29. तरवा रादन जेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री देरनाथ यादव स्वपुत्र सूर. सरिजीत यादव, उमेव- ३०, गाम- नानापट्टी, पोस्ट-
पीपवाही, भाया- तदनियाँ, जिला- मधुबनी (रिहाब)

30. सावि रादन जेव जेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री कन्दन कुमार कर्ण स्वपुत्र श्री गन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- बैराड़ १, पोस्ट-
चौबामहल, थाना- नमानावपुर, जिला- मधुबनी, पिन- +८१४०४

32. सावि रादन जेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री राम खेवरन बाउत स्वपुत्र सूर. कैनु बाउत, उमेव- ३०, पता- गाम+पोस्ट-
रैबमा, भाया- तक्रुबिया, थाना- नमानावपुर (आब.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन-
+८१४९० (रिहाब)



33. मैथिली लोकगाथा गायन जेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री बरिन्द्र यादव स्वपुत्र सीताबाम यादव, पता- गाम- तुलसीयाही, पोस्ट- मनोहर
पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

34. मैथिली लोकगाथा गायन जेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री पिछन सदाय स्वपुत्र सूर. मेख सदाय, उमेर- ३०, पता- गाम+पोस्ट- रैबमा,
भाया- तल्लुबिया, थाना- नरमावपुर (खाव.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन- +४१४५०
(बिहार)

35. शास्त्रीय संगीत आ तानपुरा राग जेव बिदेह "मार्गनि खरस सम्मान"

श्री रामबृक्ष सिंह स्वपुत्र श्री अनिकट सिंह, उमेर- ३७, गाम- हुल्लरबिया, पोस्ट-
रौबूरबही, जिला- मधुबनी (बिहार)

36. मृदन रादन जेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री खख सदाय स्वपुत्र सूर. रीठा सदाय, उमेर- ३०, पता- गाम+पोस्ट- रैबमा,
भाया- तल्लुबिया, थाना- नरमावपुर (खाव.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन- +४१४५०
(बिहार)

37. तबसा/तासा रादन जेव बिदेह "समग्र योगदान सम्मान"

श्री जोगेन्द्र राम स्वपुत्र सूर. रिन्दू राम, उमेर- ३०, पता- गाम+पोस्ट- रैबमा,
भाया- तल्लुबिया, थाना- नरमावपुर (खाव.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन- +४१४५०
(बिहार)



38. बमसावि/ कठसावि/ कबताव रादन जेव बिदेह “समग्र योगदान सम्मान”

श्री सी बाबु सुप्रसन्न सु. वलित बाबु, उमेव- ३०, पता- गाम+पोस्ट- रैबमा, भाया- तल्लुबिया, थाना- नरनाबपुर (आब.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन- +८१४९० (रिहाब)

39. ग्रमग्रामियाँ रादन जेव बिदेह “समग्र योगदान सम्मान”

श्री जूगाय साहू सुप्रसन्न सु. श्री श्रीचन्द्र साहू, उमेव- १३, पता- गाम+पोस्ट- रैबमा, भाया- तल्लुबिया, थाना- नरनाबपुर (आब.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन- +८१४९० (रिहाब)

40. उका/शेव रादन जेव बिदेह “समग्र योगदान सम्मान”

श्री योगेन्द्र बाबु सुप्रसन्न सु. रिन्दु बाबु, उमेव- ३३, पता- गाम+पोस्ट- रैबमा, भाया- तल्लुबिया, थाना- नरनाबपुर (आब.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन- +८१४९० (रिहाब)

41. उका रादन जेव बिदेह “समग्र योगदान सम्मान”

श्री जगन्नाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुप्रसन्न सु. महारीब दास, उमेव- ३३, पता- गाम+पोस्ट- रैबमा, भाया- तल्लुबिया, थाना- नरनाबपुर (आब.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन- +८१४९० (रिहाब)

42. उका रादन जेव बिदेह “समग्र योगदान सम्मान”

श्री महेंद्र पौद्दार उमेव- ३३, पता- गाम+पोस्ट- चनौबार्गज, भाया- तल्लुबिया, जिला- मधुबनी (रिहाब)



43. नङ्गवा/डिगरी रादन लेव बिदेह “समग्र योगदान सम्मान”

श्री बाबू प्रसाद बाबू सुप्रसन्न स्वर. सबहाग मोची, डमेब- ३२, पता- गाम+पोस्ट-
रैबमा, भाया- तह्मबिया, थाना- नरनाबपुर (आब.एस. शिरिब), जिला- मधुबनी पिन-
+४१४९० (रिहाब)

44. बगमच अभिनय लेव बिदेह “समग्र योगदान सम्मान”

सुश्री अश्ली कुमारी सुप्रसन्न श्री बाबाबताब यादव, डमेब- ९१, पता- गाम+पोस्ट-
चनौबागज, भाया- तह्मबिया, जिला- मधुबनी (रिहाब)

45. बगमच अभिनय लेव बिदेह “समग्र योगदान सम्मान”

मो. समसाद आवम सुप्रसन्न मो. गुवा आवम, पता- गाम+पोस्ट- चनौबागज, भाया-
तह्मबिया, जिला- मधुबनी (रिहाब)

46. बगमच अभिनय लेव बिदेह “समग्र योगदान सम्मान”

सुश्री अपर्णा कुमारी सुप्रसन्न श्री मनोज कुमार साहू, जन्म तिथि- ९१-२-१९९९, पता-
गाम- नरनाबपुर, पोस्ट- डुजना, भाया- नवहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी
(रिहाब)

47. बगमच हास्य अभिनय लेव बिदेह “समग्र योगदान सम्मान”

ठासिक आवम सुप्रसन्न मो. हस्तक आवम, पता- गाम+पोस्ट- चनौबागज, भाया-
नरनाबपुर, जिला- मधुबनी (रिहाब)।

करि सम्मान-



अध्यक्ष- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल ।

मंच संचालक- उमेश मण्डल ।

समीक्षक- डा. योगानन्द झा तथा कुमार बामेश्वर एर डा. शिरकुमार प्रसाद ।

अन्यराद त्तापन- श्री रैचन ठाकुर ।

करिगण तथा करिताक नाँउ-

- (1) श्री शिम्भु सौबत- अरुज मारण हुलकी
- (2) श्री उमेश पासवान- कागज
- (3) श्री बामरिनास साह- केना कहैँ भावत महान्
- (4) श्री नन्द रिनास बाय- मिथिला रर्गन
- (5) श्री श्री हेमनाथ साह- हम छी मैथिल
- (6) श्री परमानन्द प्रताप- अखनूँ छुअन अतलैँ
- (7) डा. योगानन्द झा
- (8) मो. अरु हसन- किसानक अविहान
- (9) श्री बाजुदेव मण्डल- जय हे किसान
- (10) श्री उपेन्द्र नाथ अरुपम- गेल चौरली
- (11) श्री कपिलेश्वर बाउत- हमबा किछु ने बुवागए
- (12) शशिकान्त झा- एतरेँ अंगन
- (13) श्री रिपीन कुमार कर्ण- रयरस्थानक जाति-पाति
- (14) गौरी शैल साह- रिवाह रिवाद होगत



- (15) शिर कमाव मिश्र- मान
- (16) वस्त्रमी दास- हब ज्योति हबरौह
- (17) डा. शिरकमाव प्रसाद- कजरौठी केव काजब र्ग
- (18) श्री जगदीश प्रसाद मण्डन- दिन बातिक खेन ।

एकांकी नाटक "सतमाध"

नाटककार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डन

निर्देशक- श्री रौचन ठाकुर

पात्र- परिचय-

- | | | |
|--------------------|--------------------------------------|-------------------|
| (1) बृहस्पति राँऊ- | हाङ्ग स्कूलक प्रधानाध्यापक, | भूमिकामे- स्वर्गी |
| पूजा कमावी | | |
| (2) रिपति राँऊ- | हाङ्ग स्कूलक एक गोष्ठी सहायक शिक्षक, | भूमिकामे- स्वर्गी |
| सबसरती कमावी | | |
| (3) प्रनकित- | हाङ्ग स्कूलक चपवासी, | भूमिकामे- स्वर्गी |
| सर्गीता कमावी | | |
| (4) अन्नकृष्णी- | रिपति राँऊक माँ | भूमिकामे- स्वर्गी |
| नरिता कमावी | | |
| (5) शिरकमाव- | रिपति राँऊक र्ग- | भूमिकामे- स्वर्गी |
| ज्योति कमावी | | |
| (6) खजूरिया- | एक गोष्ठी ग्रामीण महिला, | भूमिकामे- स्वर्गी |
| अनेखा कमावी | | |
| (7) तेतवी- | दोसब ग्रामीण महिला, | भूमिकामे- स्वर्गी |
| प्रनम कमावी | | |



VIDEHA

- (8) चिन्तामणी- एक गोष्ठ साधारण किसान, भूमिकामे- स्वर्णी
रोशनी कुमारी
- (9) सारित्री- चिन्तामणिक पत्नी, भूमिकामे- स्वर्णी बागिनी कुमारी
- (10) गीता- चिन्तामणिक रैष्टी, भूमिकामे-
स्वर्णी माता कुमारी
- (11) प्ररोहित- गामक पंडीजी, भूमिकामे-
स्वर्णी बाधा कुमारी
- (12) जय माताक काताकाव- भूमिकामे- स्वर्णी खुशिरू, पुनम, सुनेखा,
बागिनी, सोनी कुमारी ।
- (13) पविष्ठन गीत- भूमिकामे- स्वर्णी सुनेखा आ पुनम कुमारी

मैथिली नाटक "गंगा ब्रिज"

नाटककार- श्री गजेन्द्र ठाकुर

निर्देशक- श्री रैचन ठाकुर

पात्र-परिचय-

- (1) रैछा-1 मिथिलेश कुमार यादव
- (2) रैछा-2 आनन्द मोहन कुमार यादव
- (3) रैछा-3 कृष्ण किशोर 'बीबज'
- (4) अख्यमती- देवन कुमार मण्डल
- (5) मीत- रैछनाथ कुमार ठाकुर
- (6) रौड- सोनु कुमार



VIDEHA

- (7) नाना- गणेशी कृमाव
- (8) दादा- रत्नबाम कृमाव यादर
- (9) रिनै- अमित खानन्द
- अन्तर्यामि- धर्म कृमाव यादर
- अन्तर्यामि पत्नी- वंजित कृमाव बाम
- अन्तर्यामि रैणी- कणाद किशोव नीबज
- अन्तर्यामि रैणी- शुभम शिखर गृप्ता
- टीकेदाव- सुबज कृमाव
- पहिर मजदुव- ब्रह्मानन्द कृमाव यादर
- दोसव मजदुव- शिरकृमाव यादर
- तेसव मजदुव- सतीत कृमाव यादर
- पहिर शिक्षक- किशोव कृमाव ठाकुर
- दोसव शिक्षक- अन्तिनामि कृमाव साह
- टोनहो देनीहाव- बाजेशी कृमाव महतो
- पहिर उका रैजेनिहाव- कमल किशोव पंकज
- दोसव उका रैजेनिहाव- किशोव कृमाव यादर
- रतही माए- उमेशी कृमाव बाम
- पैघ भाय- सुभाष कृमाव
- अन्तर्यामि मित्र- सुनील कृमाव महतो
- कनियाँ काकी- बामराँ भवती



- प्रवान अतिथिता- सिकन्दर कुमार यादव
- पहित प्राफेसर- बमेशी कुमार
- दोसर प्राफेसर- मो. कलामुद्दीन अंसारी
- असकल डाक्टर- प्रभाष कुमार, शिरकुमार झुथिया, प्रशान्त कुमार
आ सजन कुमार
- कारेजक डाक्टर- प्रमोद कुमार, शिरजी मण्डल, गं. जन कुमार,
अजीत कुमार मण्डल,
बजीत कुमार मण्डल, मिथिलेश कुमार बाग, मो. अब्दुल
अंसारी

जठ-जठिन-

“ जठ-जठ पठ कठिण रे जठ.....”

गीत अस्तुति- अश्री ज्योति कुमारी आ अश्री रंजिता कुमारी ।

जठिन पम्फ- अश्री दुर्गा कुमारी, झिता कुमारी, सीता कुमारी आ सगीता कुमारी ।

जठ पम्फ- अश्री बीना कुमारी, पूजा कुमारी, कंचन कुमारी तथा पुष्पिमा कुमारी ।

एकार्क- “ जजाति”

नाटककार- श्री नंद रिवस बाग

निर्देशक- श्री रेंचन ठाकुर

पत्र-पत्रिय-



VIDEHA

- | | | |
|----------------|------------------|-----------------------------|
| (1) फुलचन्द- | गामक एकठा खलीका- | भूमिकामे- मो. नौशद आनम |
| (2) बनरानी- | फुलचन्दक पिता- | भूमिकामे- राम राई भावती |
| (3) मैनामरानी- | | भूमिकामे- अमित आनन्द- |
| (4) गामरानी- | | भूमिकामे- रिक्की कमार कर्ण |
| (5) तिनारानी- | फुलचन्दक पत्नी- | भूमिकामे- मिथिलेश कमार यादव |
| (5) | | |

महान सामाजिक मैथिली नाटक- "डूच-नीच"

नाटककार- श्री रेंचन ठाकुर

निर्देशक- श्री रेंचन ठाकुर

पात्र पत्रिका-

- | | | |
|----------------------------------|------------------------------------|------------------|
| (1) मंगल मल्लिक-
बाधा कमावी । | बामनगव गामक डोम- | भूमिकामे- सुश्री |
| (2) मवनी-
कमार । | मंगल केव पत्नी- | सुश्री आशा |
| (3) दुखन-
कमावी । | मंगल केव पत्नी मैथिलीक पास- | सुश्री हिरा |
| (4) बुधन-
कमावी । | एकठा ग्रामीण- | सुश्री बीना |
| (5) चन्द्रशेखर ना-
कमावी । | एकठा सुखी सम्पन्न, कजुशे ब्राह्मण- | सुश्री रीता |
| (6) मनीषा-
कमावी । | चन्द्रशेखर पत्नी- | सुश्री सुरिता |



- | | | |
|------------------------------|--------------------------|-----------------|
| (7) चन्द्रप्रभा-
रुमावी । | चन्द्रशेक अकलौती रैष्टी- | सुश्री ज्योति |
| (8) बरीया-
रुमावी । | मंगल केव दियाद भाय- | सुश्री रंजिता |
| (9) शिशिकांत-
रुमावी । | दाक दोकानदार- | सुश्री रोशिनी |
| सीताबाम-
रुमावी । | एकठा गवीर आदमी- | सुश्री आवती |
| शीला-
शिखरता पवरीष । | ताड़ पीरानी- | सुश्री |
| देरैन-
रुमावी । | एकठा ताड़ी पियाक- | सुश्री दुर्गा |
| सुकवाती-
संगीता रुमावी । | दोसब ताड़ पी पियाक- | सुश्री |
| डुङ्गू-
रुमावी । | तेसब ताड़ पी पियाक- | सुश्री प्रीति |
| मिगुब-
रुमावी । | एकठा नामी-गामी चाहरना- | सुश्री बानी |
| संजीत-
रुमावी । | मैथ्रीकक रिद्यार्थी- | सुश्री कंचन |
| हरीषी-
रुमावी । | मैथ्रीकक रिद्यार्थी- | सुश्री पूर्णिमा |
| भोवू-
चाँदनी रुमावी । | मैथ्रीकक रिद्यार्थी- | सुश्री |
| गौबी-
पूजा रुमावी । | पेपवरना- | सुश्री |



बाय प्ररेशे- सबसरती कमाबी ।	एकठा त्रामीश-	सुश्री
गंजीनियब- प्रीति कमाबी ।	मंगलक रैष्ठा-	सुश्री
डाकूठब- कमाबी ।	चन्द्रशेक रैष्ठा-	सुश्री पूजा
दम्भम- कमाबी ।	दडा की डावारासक मातिक-	सुश्री आवती
ब्रह्मानन्द- कमाबी ।	रकिन, चन्द्रशेक मित्र-	सुश्री आवती
मणिकाति- सोनम कमाबी ।	बुजुआ कायस्त-	सुश्री
शीति- सुश्री नीतू कमाबी ।	डाकूठबक सहेली-	
नित्यानन्द मित्र- सीता कमाबी ।	बेनमनी-	सुश्री
रकण मा- सरिता कमाबी ।	नित्यानन्द मित्रिक अंगवस्त्रक-	सुश्री
गुपीनदब- चिन्तामणि कमाबी ।	मंगलक पितिगत साब-	सुश्री
पवमानन्द- दिर्या कमाबी ।	चन्द्रशेक पड़ सी-	सुश्री
प्रस्थानन्द- बाधा कमाबी ।	चन्द्रशेक पड़ सी-	सुश्री
उमा- कमाबी ।	ब्रह्मानन्दक रैष्ठीक सहेली-	सुश्री सोनन



मोतीनार- रुमारी ।	परिचायतक सबपट-	सुश्री सुधा
बामानंद- सुश्री खुशिरु रुमारी ।	चन्द्रशेखर अप्पन लोक-	
चन्द्रकांत- ज्योति रुमारी ।	चन्द्रशेखर अप्पन लोक-	सुश्री
उमाकान्त- निकी रुमारी ।	चन्द्रशेखर अप्पन लोक-	सुश्री
शोभाकान्त- मानसी रुमारी ।	चन्द्रशेखर अप्पन लोक-	सुश्री
अनन्द नावायण- सत्यम रुमारी ।	चन्द्रशेखर अप्पन लोक-	सुश्री
दुष्टन- संगीता रुमारी ।	दोसब पेपवरना-	सुश्री
नरेश- खुशिरु रुमारी ।	पहिल गंदा-	सुश्री
भद्रशे- द्रापदी रुमारी ।	दोसब गंदा-	सुश्री
उत्तेश- सुषमा रुमारी ।	तेसब गंदा-	सुश्री
सुरेश- बंजीता रुमारी ।	चारिम गंदा-	सुश्री
महेश- रुमारी ।	पाँचिम गंदा-	सुश्री रंजनी
जयमाना हेतु दाय-माय-	गीतकारि सभ-	



सुश्री सबसुती कुमारी ।

सुश्री पुनम कुमारी ।

सुश्री सुनेखा कुमारी ।

सुश्री बागनी कुमारी ।

सुश्री खुस्रू कुमारी ।

सुश्री उजाला कुमारी ।

सुश्री पुष्पा कुमारी ।

सुश्री सरिता कुमारी ।

बुक्कब- "साथकिवक पाथ"

बुक्कबकाव- श्री रेचन ठाकुर

प्रस्तुति-

- | | | |
|----------------------------|------------|-------------------------------------|
| (1) रि रपीन- | हेड मासुब- | श्री किशोर कुमार ठाकुर |
| (2) बाम सेरक- | किबानी- | श्री खरिनाशि कुमार साह |
| (3) रिद्यार्थी-
कुमारी, | | श्री चन्दन कुमार, रुंदन कुमार, सोनी |
| (4) प्रभाष- | | प्रभाष कुमार, |
| (5) रिनय- | | रिनय कुमार |
| (6) रीरेन्द्रक पिता- | | चंदन कुमार |
| (7) शीतिनी- | | |



(8) मधुकव-

चंदन कमार

महादेव गीत- "अरै ले चढै रैवदसव छै रौरा....."

प्रस्तुति- श्री किशोर कुमार यादव ।

स्रागत गीत-1 "स्रागत की वष कवरै अछै....."

गीतकार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल

प्रस्तुति- सुश्री पुनम कुमारी आ सुनेखा कुमारी ।

स्रागत गीत-2 "अतिथि स्रागतम् अतिथि स्रागतम्....."

गीतकार- श्री रैचन ठाकुर

प्रस्तुति- श्री अमीत वर्जन ।

स्रागत गीत-3 "प्रिय पाहुन स्रागत स्त्रीकार कक....."

गीतकार- श्री रैचन ठाकुर

प्रस्तुति- श्री मनोज कुमार महतो ।

अ कनापव अपन मतलब ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



प्रा. हविमोहन नाक प्रशस्ति मनाओत गेल- संवाद- सुमित खानन्द

२३ फेब्रुवरी २०१३ केँ रिप्रेजिन्टेशन मैथिली रिभाग, न. ना. मि. रि., दबलंगाक मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा प्रा. हविमोहन नाक २९म प्रशस्ति अरसवपव एक गौणीक आयोजन कएल गेल । ई अरसवपव रिभिन्न राजा लोकनि हुनक रोजि एर प्रतिपव चर्चा करैत हुनका कावजयी बचनाका कहनि । गौणीक अध्यात्मता करैत डा. धीरेन्द्र नाथ मिश्र कहनि जे प्रा. हविमोहन ना हस्त बसक सिद्धहस्त लेखक बहिनो कवशासँ भवत साहित्याक दुनह । डा. बमरा ना हुनक प्रतिपव रिस्तारसँ चर्चा करैत कहनि जे प्रा. नाक बचनामे जे जातिष तल्ल भेटैत अछि से पैघसँ पैघ पडितेक हेतु त्राह अछि । रिभूति खानन्दक कहन जे हविमोहन राँसु सदियन पाठककेँ हँसैत खदखदकैत बहनाह रुदा अल्ल हुनक नोबमे डुरत बहल ।

ई अरसवपव श्यामानन्द शालिना, किवरा मिश्र एर अर्चना क्रुमावी सेहो अपन अपन रिचाव राज करनि । सुवेन्द्र भावद्वाराक धन्यवाद त्रापनसँ कार्यक्रमक समाप्ति भेल ।



ई कनापव अपन मतलब ggaj_endra@videha.com पव पठाड ।

३. पद्य



३.१. बामचन्द्र प्रसाद जीक दूठा करिता



३.२. रैचन ठाकुर जीक दूठा सुरागत गीत



३.३.१. जगदानन्द सा 'मनु' गजल करीष १-१२ २.
"नरनारी" (गजल १-४)



पंकज चौधरी



३.४.१. आशीष अनचिन्ताव-गजल २.



आशिष कमार सुदर्शन-प्रेम शिष्ट



३.५.१. कामिनी कामायनी- प्रह्लादजति २.
जयभूमिष्ट सुर्गादिपि गरीयसी



जाति सा चौधरी-जननी



३.७.१. राजदेव मण्डक दू गोष्ट करिता २.
गीत



जगदीश प्रसाद मण्डक साठठा



३.९. ओम प्रकाश- गजल १-२



इ.प.१. रिन्दुशिव ठाकुर "नेपाली"- खुनक ठेला संग नर प्रसुक पतन

बामचन्द्र प्रसाद जीक दृष्टी करिता-

प्रदूषण

सुनह हो भैया सुनु हे रँहिनी

आरँ केना क२ रँचते प्राण हे ।

प्रदूषणक समस्या एतौ

न२ लेते जान हे ।

गाछ काँष्टि जंगल उजाड़ा

अपन रँठरौ छी शान हे ।

अगिला पीढ़ी ले किछु ने सोचै छी

एकर समस्या महान हे ।

राहमण्डलक सन्तुलन रिगड़ि गेल

मानुष करैए त्राहिमाम हे ।

कখনो ठँठी कখনो गबमी

रँठि क ताण्डर महान हे ।

गन्दीक जाला नदीमे खसैत अछि

जलमे भबन रिषाण हे ।



VIDEHA

नर-नर रैमावी उमड़त अछि
जीरनक कानो ने ठेकान हे ।
रैम रौकद मिसागत रैनरैत अछि
शानेमे होगत अछि हानि हे ।
खूना मैदानमे शौच करैत अछि
शौचावयपव ने अछि बियान हे ।
प्रदूषण निर्यात कानून रैना क२
मानर केव कबियो कन्याण हे ।
करि कबजोबि कछै
सभ कियो बथियो बियान हे ।
सुनह हो भैया सुनु हे रैहिनी
केना क२ रैचते प्राण हे ।

किसानक हाव

किसानक छाती रिड्सि बहत अछि
रैथै रैथै ने पठा बहत अछि ।
अकारक गावमे किसान समाएत
हिनकापव संकष्ट दुन्हि आएत ।



महगाग चबम सीमा डुरैत थुछि
चौका डुक्का मजदुर मारैत थुछि ।
किसानक हार भेल रैहार
रिना जमीन रैचने नै होगत थुछि रैषी रिखार ।

खाद-रीजमे महगाग भवन थुछि
किसानक दिनमे नहबि ठुठन थुछि
खल्लदाता किसान कहरैत थुछि
खल्लक मुन्य रैषावी बथैत थुछि
यएह रिडमरनाक तब पड़ल किसान
थहाँ समानक दाम बथैथ आन ।

खाद रिज बैक्छीसँ थरैत थुछि
ओकब मुन्य ओरुए बथैत थुछि
एक दिन पृथ्वीपब मचत हाहाकाव
खल्ल देरता खल्ल दगसँ नचाव
थेती नागतमे रैठल तुहान
थारि कनको नै रैचते प्राण ।

रिन्न घुस थुफसब नै सनेत थुछि



VIDEHA

एनेकशेनक खर्चा बैक्छी-मातृक उठरैत अछि ।

मनमाना रसुतपव दाम

एकब मावि नेनैए किसान ।

नेताजी सब मोछ पिज्रै अछि

किसानक हात कियो नै पुछैत अछि ।

भगवानोकेँ नै बहननि पियान

ई धवतीपव किएक रैनौतनि किसान ।

सम्पर्क-

स्वपत्र स्त्र. मिश्री नारा साह

गाम- उठरा (रैड १), पोस्ट- खुँछौना

थाना- लोकता, जिला- मधुबनी (बिहार)

ई कनापव अपन मतार ggaj_endra@videha.com पर पठाउ ।



रैचन ठाकुर जीक दुष्टा सुगत गीत



प्रिय पातून.....

प्रिय पातून, मुरागत मुरीकाव कक

मुरीकाव कक, यौ साकाव कक

प्रिय पातून..... ।

(कथीसँ मुरागत कवरँ, नै रिध-रिधान अछि

पूजाक किछ, नै आविधान अछि)

अरौध केव, पियाव कक

यौ पियाव कक, हे यौ पियाव कक ।

प्रिय पातून..... ।

(साहित्य सर्गात, कला रिहीन

सभ्यता, संस्कृति दीन)

बम्ककगण, तैयाव कक

यौ तैयाव कक, हे यौ तैयाव कक ।

प्रिय पातून..... ।

(दर्शन ले, पिआसत डेलौ

प्रेम श्रृङ्खल, बकठन डेलौ)

अभिमत, रँहाव भक



यो रँहाव भक, हे यो रँहाव भक

प्रिय पाहुन..... ।

अतिथिगण स्वागतम्.....

अतिथिगण स्वागतम्, तिथिगण स्वागतम् ।

दर्शन पारि गदगद, पाहुन स्वागतम्

अतिथिगण..... ।

(ने पान प्रसाद, ने चाहक रँरस्था ।

रँरसक ने रँरहाव, कनामे पूर्ण आस्था ।)

संभ्यता संस्कृतिके, हार्दिक स्वागतम् । पाहुन स्वागतम् ।

अतिथिगण..... ।

(ने संगीत साहित्य, ने कना शिष्टाचार ।

शुभ आसीवरादसँ, ठठैत संभ अन्हाव ।)

बाम बहीम धृष्ट करीब, ठैरेसा शिवमणम्

पाहुन स्वागतम्

अतिथिगण..... ।



VIDEHA

(धन्य भव कोटिंग, धन्य पूजा समिति ।

धन्य बिदेह परिवार, चनौबागज रसती)

गुरुजन रिद्धतगण, सज्जन रूहम ।

पाहुन स्रागत

अतिथिगण..... ।

ए कनापव अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पव पठाड ।



१. जगदानन्द ना 'मनु' गजल करीअ १-१२ २. "नरनशी"



पंकज चौधरी

(गजल १-४)

१.



जगदानन्द ना 'मनु'

ग्राम पोस्ट- हविप्रव डीहठैल, मधुबनी

करीअ-१

कर्जा कए क२ हम जीरन जीर बहव छी

कष्टव अपनकेँ कहना सीर बहव छी

सब किछु गरा कए 'मनु' अपन जीरनकेँ



VIDEHA

निर्वज भए हम ताडी पीरें बहव छी

करौंख-२

लेकछै लखमे केहन वकीड छै

ले माय रौप ग केहन तकदीब छै

धो धो क२ ईठ कप वकीड १ खाएलै

ले सुले कियो ग दुनियाँ रँगीब छै

करौंख -३

गोडी तैब झुझीमे छै जहब भबव

ले एना झूठ खोव कते घायव पबव

जुँ निकैव गएलौ झुवमडी सन हँसा

राष्टपव भेटैत कतेको छेड़ १ मबव

करौंख -४



सौरविया पिया अहाँ ज्ञ की कएवहूँ
साउन चढव छोटि चवि कोना गएवहूँ
रहए तरा शितव सिरहए हमब तन
कोना बहरै रिन अहाँ बुझि ले पएवहूँ

कवि-३

सिन्धु आँखें कि रौरव रैनव अछि
नेता सब तँ एकठाँ जपाव रैनव अछि
रौंका रौंका रौंगव सब बाज चवहए
जनताक आशेपव सौरव रैनव अछि

कवि-७

गामक अधिकारी भेवा सैयाँ हमब
कोना क पकडते कियोक रैयाँ हमब
सबक पैठौक माव आँ रै हमब छेक
सैयाँ वधिन सबठाँ रैयाँ हमब

कवि -१

मेथिली साहित्यक आँच सुनौत अछि
सगरो नर रिधाक झुवा पजलैत अछि
कोठाँ नमन जिनकव रिछव जालैन अछि
रिदेहक रौरव आँगि मनु वरुकेत अछि

कवि-४



VIDEHA

राबुजीक करेजमे सदिखन बहवहुँ
ले अपन योनमे हुनका हम बखवहुँ
छाहब रौद पानिसँ सदिखन रैचेवहि
सेरौक रेंडमे हम रैहना कवहुँ

करौं-९

देह प्राण सँष्टी राबुजी देवहि
जे किछ छी एखन राबुजी केवहि
अपने बहि भूखे हमब पेट भववहि
सुधि अपन रिसवि हमबा मनुख रैनेवहि

करौं-१०

जे जय देवहि ओ कहेवहि गदहा
जे पौसवहि ओ मानवहि गदहा
गदहा जँका जीन्दगी अपन रितेवहुँ
जिनका रियाहवहुँ ओ बुझवहि गदहा

करौं-११

घाँ-घाँ पब सुतव कतेक गोहि अछि
साँध लोककेँ सँतवि लेने मोहि अछि
धर्मक नाम पब खुजव कतेक दुकान
ठाँका वऽ कऽ छनमे सबैठाँ पाप मोहि अछि

करौं-१२



VIDEHA

कौन बिधि मबि कऽ हम कपैया कमेवहुँ
सुख चैन निन्न बातिकेँ अपन हरेवहुँ
जबुक अपन सब समुँक तियागि
बिन कसुरे रौलब बनरास रितेवहुँ

२



पंकज चौधरी "नरनशी" (गजन १-४)

गजन-१

मिथिलोमे बहन नै रौस मैथिलीकेँ
छुँछैन जा बहन छै आशि मैथिलीकेँ

कहियो मैथिली नै हिचकि-हिचकि कानन
देखु पनछिँ सब गतिहास मैथिलीकेँ

चन्दा अमर यात्री सदति सब शिबणमे
रिद्धापति सनक छन दास मैथिलीकेँ



सभके ठाम देनौं भेन मान सभके

भेठेन छि कि ए बनराम मैथिलीके

राजरे-पठरे सदिखन मैथिली लिखरे हम

जागत "नरन" पुनि रिश्राम मैथिलीके

>महङुनातु+महङुनातु+हागनातुन /

मात्रा क्रम : २२२१+२२२१+२१२२

गजव-२

जे बुडिरक छन अवरत यो

तकरे भेठेन रहमत यो

जनता फेब ठकेले सभ

गेले रार्थहि जनमत यो

धन जनताक ब्रुठा बहले

जनतो छै छुप सहमत यो

शोषण पाँच रबख चरते

जनता कानत करपत यो



धर्मक दैत दूहाङ्ग ओ
जे नहि धर्मसँ अरगत यौ

नेता रैनर कतेको कहि
दुर्दिन देशिक रैदरत यौ

नागौ गप्प "नरर" एहन
ठैठही ठैकर परत यौ

*महङ्गुनातु + महङ्गुबन / मात्राक्रम-२२२१+१२२२

गजव-३

अनकर कहल मानर कते
था-था ठैस कानर कते

रैस किछु दिनक जिनगी त नै
दिन जिनगीक गानर कते

छोड़ु प्रबनका बाग सभ
ई सिङ्गीसँ बस छानर कते



रिनु साधनक की साधना

थुकसँ सातु सानरँ कते

चाही अपन अधिकार जे

माँगु नरन ठानरँ कते

गजब-४

माथसँ घोघ ससबन जाए

चला राजहि सकल जाए

कजबायन नैना मधुश्रीना

मातन मोन रँसल जाए

कपक जारमे गुमबाएन

राँठ रँठैही रिसबन जाए

माथक छिन्नी ठोठक वाली

देखि अयना चनकन जाए

हाथक चूडी कंगना खनकै

सौम करेजा दबकन जाए



आथिस् पीरौ "नरन" नेह जे

सगरो देह पसवन जाए

> आथव-११

ई कनापव अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाड ।



१. आशीष अनचिन्हार-गजन



२. फाति रुमाव सुदर्शन-प्रेम शिख

१



आशीष अनचिन्हार

गजन

निथरौक छन गवीरक लचारी गजन

देखु झुदा निथन हम स्वतारी गजन

हम आरि रौटि नेनहुँ हँसी ओ खुशी

रौटत कते समय धरि उधावी गजन

अन्हाव आरि भगरे कबत घबसँ यो



VIDEHA

ভগজোগানীক সঁগে দিরাঁবী গজল

সভ চপ উলাবকৈ খেলমে মল্ল খুটি

জনতাক ঢুইট বহলৌ দিহাড়া গজল

ফবি গেল ঢৈ করঁগ করি আপন দেশেমে

সৌসে স্ননা বহল বৈভিচাবী গজল

দীর্ঘ-দীর্ঘ-ক্রস-দীর্ঘ + ক্রস-দীর্ঘ-দীর্ঘ + ক্রস-দীর্ঘ-দীর্ঘ + ক্রস-দীর্ঘ

২



ফাহি কুমাৰ স্বদৰ্শন

শ্ৰেয় শেছ

নোবক পাব খুটি গানপব

দিবক রাব খুটি হানপব

কা হান কছ ছদযামে কেব

দোমন কৰৈত খুটি ঠামপব ।



थूँठायर कपकप करैत हाव
हठ्ठी गलने रिन रँजैत जाड
की कछु आरँ रिचाव मोन केव
छिछिआगत छी रँहु ओग पाव

काँठन रैमाय घिनाएन पएव
रँनर जागत छी कान्हि बाड
की आरौँ स्नरँ राथा झह केव
छी पागत जाए रीयव आ रौव

३



मनोज कुमार मन्दनक कविता-

हम छी पागत

हम छी पागत तँए घबसँ छी भागत
उदबक निमित्त रँनर छी अभागत ।

मन अथनो बँहैत अछि नागत
हुनको जी हेतनि हमरेपव नागत ।



VIDEHA

पवधन बहि सपना अछि नागन
गाम छेवरीक मोहब अछि नागन ।

मागक ममता रैब छन्हि जागन
रौरूक मन मिनरौक छन्हि नागन ।

हम छी पागन तँए घबसँ छी भागन
उदबक निमित्त रैनन छी अभागन ।

सम्पर्क—

रैबना, तक्रबिया, मधुरनी ।

सम्प्रति— क्रमरंज ।

अ कनापब अपन मतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाड ।



१. कामिनी कामायनी— प्रस्थाजति २.
जन्मभूमिश्च स्वर्गादिपि गरीयसी



जाति न्ना चोपरी—जननी



कामिनी कामायनी

प्रसफांजनि

प्रसफांजनि ।

आजुब मे भवने ।

नान / पीयब/हबियब ।

नारंगी /रैंगनी /भाति भाति के ।

बग /गंध /कप /आकाब ।

स सज्जित /प्रसप दर ।

स्नास मे भवने /मनयानिभ मादक ।

मह्रिम मह्रिम आंच प/

नह नह गमरिंगत हरा मे ।

नरै नरै तब पल्लर के थड स/

नाकैत धवा सुल्लरी ।

कवि बहर थडि ।

उन्मादित प्रेमी सन ।

भाररिभोव भ/भुत बाज क/

आवाधना मे/



अरकह गवा आ मुंदन आथि से /

प्रसपाजनि /

कपसी के सौन्दर्य स चकित /

अनंग सेहो शिथ नाद कवि देन /

सज्जी बहन अछि बगमट /

प्रेमोसेर के / ऊँठी मे आरि गेने /

सभ ठक / उडरैए नेन अरीब / गनार

उतवि गेना नव नावी मे/हेब स/नरन भेस मे /

थेनय नेन बागन के /

छुष्ट आ बाधा ।

२



ज्याति ब्या चौधरी

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

“जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी”
पठि-पठि क२ भने पैघ भेन छी
आग अपन रोजी रोष्टी नेन पनायित
दूर सँ देशिक दृष्टि पब नज्जित छी ॥

अछि तान धोरीक ककुड जकाँ
देशमे महिनाक दृष्टि सँ रथित
अतए कनो सम्मान रा स्मरिषा नेन



VIDEHA

अनकब जानि बागौत अछि अनुचित ॥
पार्वती-दुर्गा-वर्ष्मा-सबस्यती
सन अनेको देरी जतए पूजित
कोना एहेन पशुरत मानसिकता
बहि सकेत अछि जीरित ॥
महिलाक सम्मान रुएत ग्राह
माताक प्रति सम्मान जौ सिखारी
ममता आ स्नेह पूरित
प्रत्येक शिष्ट मनुष्य रैनारी ॥

ई कनापब अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



१. राजदेव मण्डवक दु गोष्ट करिता २.
गीत



जगदीश प्रसाद मण्डवक सातठा

१



राजदेव मण्डवक जीक दुष्टा अनुपम करिता-

मनुष्यदेरा

सभ मनहि-मन पूजि बहल अछि



एक-दोसबाक गप्प बुँमि बहन अछि

मनक केना बुँमत सब रात

करुण चैत अछि छुरि क२ गत

पकड़क पएव भ२ क२ कात

हमरो दुख सुनि निख तात

जखेने देरक देहमे भिबन

ठामहि ओ गुँबा क२ गिबन

जेकवा कह छुनौ महान

से अपनहि अछि रोजान

आरै के देत सुनब काया

सम्पति, यश, सम्मान

खुजि गेल सबठा बाज

तेयो भीतबसँ निकल आराज-

“छुनौ जे पारन

रैना देनिई अपारन

भ२ गेलै निष्प्राण

छुनौसँ घष्टि गेलै मान

पहिने रैन छुन देरा

आरै भेल मनुखदेरा

देह चठि कबत मेरा

भेष्ट सबकेँ मनक मेरा



नै डेवाड सभ किछो देत
मानत नै पूजा अथनो जेत । ”

अपन हावि

गाम-घबसँ मंत्री दवरौब
कियो नै पारि सकैत छत्र पाव
के रँजत सोना फोड़ा देतिई कपाव
डरे कनैत कते जाव-रँजाव
जीतने छलौ सकन समाज
उठिते आराज गिवरौ छलौ गज
रँडका-रँडका केनौ काज
रँजितो होगत अछि राज
सभ दुसमनकेँ हावि देनौ
कतेकेँ माष्टि तब गाड़ा देनौ
घब-पविरावकेँ हावि देनौ
तेयो अपनासँ हावि गेलौ ।

अपन उजाड़ा
काँठए रँपहावि
के रँजैत अछि



अप्पन हावि ?

२



जगदीश प्रसाद मण्डव जीक सात गोष्ट गीत-

रेद-भेद.....

रेद-भेद बग बहस्य

परिंते बस बहस्य भरे छै ।

भेद भेदिया भेदि-भेदि

तन-डुपव चक्री गठ्ठ छै ।

रेद-भेद बग बहस्य

परिंते बस बहस्य भरे छै ।



भेदि भेद भेदिया भभा
हँसि-हँसि सुवतान भरे छै ।
शून-सुनि न कभेद-भेद
मने-मन सिबजैत बह छै ।
रेद-भेद बग बहस्य
परिते बस बहस्य भरे छै ।

मन-मन्त्रतव रिचावि कचाड़ि
भेदि भेद भेदैत बह छै ।
रिचावि रीच कचाड़ि-सुचाड़ि
शक्ति शिर सुवतानि कह छै ।
रेद-भेद बग बहस्य
परिते बस बहस्य भरे छै ।

कवम-धवम आकि धवम कवम
रेद-भेद भेदिआ कह छै ।
तब हिन उकटि-पनटि
शुबधाम सुव-सुव चठ छै ।
रेद-भेद बग बहस्य
परिते बस बहस्य भरे छै ।



भक-अजोतमे.....

भक-अजोतमे पड़न छी

भयाव यौ, मीत यौ, भाय यौ

भक अजोतमे पड़न छी ।

थेती झूठक सुथ-सुहनगब

साड़ि अविथव खास चढ़ छै ।

उक्थवि रीठ समार सिस रनि

गर्भ सफ़ान्ति भरे छै ।

भक-अजोत..... ।

भुक-भुक भुकजोगनी ठहरि

अजोत-अन्हाव करै छै ।

थाहि-थाहि थोपड़ि थपथपा

ठाहि ठहरका मारि कह छै ।

भक-अजोत..... ।

कातिक कत देखैले



कनहंत कर्ण करपि कहै छै ।

कोकिन कंठ तानि मधु

काग-कागा सिब चटै छै ।

भक-गजोत..... ।

जेकवा वृषि छै घब रैनरै

चाहे घास चाहे ठौरबी ।

रौनी-राणी रुसि खुसिया

अपन रशि धड़ैत बहै छै ।

भक-गजोत..... ।



जेरुआ गरे.....

जेरुआ गरे गब तगिते

रनि अन्हब-रिहाडि धडै छै ।

छेत-रेशीख जेहन तपस्या

हलचला धडैती सिछै छै ।

सम-समए समेष्टि सिजति

हाने हल हाग-धर्म कह छै ।

जेरुआ गरे..... ।

जन-जनक जेना जनक

मिथिला काम-धाम कहै छै ।

देशी-देशीन्तब बथी मठा

सिख सिब सजैत बह छै ।

जेरुआ गरे..... ।

रैठ-कठ कठ रैठ वृक्ष

जिनगी रौठ धडैत बह छै ।



VIDEHA

बाग-रिबाग तजि तियागि

हंस टोच भरेत बह डै ।

जेरुंखा गरे..... ।

सब-नब बस्ता पकडऱि

श्रृंग-श्रृंगी श्रृंगाव करै डै ।

बथी-महाबथी बडमे

पुत्र-युद्ध श्रृंगी कवरै डै ।

जेरुंखा गरे..... ।



निर्जन रन.....

निर्जन रन निर्जन पक्षी

थड़-गृह थक थहावि बहन छै ।

सतर्बगी सतसर्गी कहि-सुनि

अपपन पएव पथावि बहन छै ।

निर्जन रन..... ।

एक सूर्य धवतियो एक

अग्नि-रास्र जल सिक्त करै छै ।

तूब-तूब तोड़ि त्रुबिया तूब

तक-तक तकली काँष्ट बहन छै ।

तक-तक..... ।

जगसन जतए जल-थलिक गति

सिबजन सिब ततए तेहन चलै छै ।

तन-मन-धन धवम ततए

हँसि-हँसि पक्षी हँस हँस छै ।

निर्जन रन..... ।



हंसा रनि-हंस हंसि-हंसि

सत साथी मंगल बटे छै ।

निर्जन रन निर्जन पक्षी

थड़-गृह थक थहाबि बहन छै ।

थड़-गृह..... ।



ढुगन्तामे पडऱ ङी.....

ढुगन्तामे पडऱ ङी

भाय यौ, ढुगन्तामे पडऱ ङी ।

ढुग-ढुगा, ढुक-ढुका-ढुक-ढुका

चाति करूँषि सरूँषि देखे छै ।

ढुक-ढुका मेरिचाग जेना

डऱँ-डऱँ जीह-ठाव नगै छै ।

भाय यौ, डऱँ-डऱँ..... ।

सिथ-सीथ सिथा-सिथा

सजि सिब सिबिस कह छै ।

कर्ता-धर्ता-भर्ता भजब

सीस चढऱि दुबमतिथा कह छै ।

देखि करपि करपै ङी

ढुगन्तामे पडऱ ङी ।

भवनी-तानी भवि ताना



दिन-बाति मथड़त बह छै ।

सुता सुत तानि-तना

नष्टा-कष्टा सजेत बह छै ।

नष्टा-कष्टा..... ।

सुत फेकि सुतियाव रनि

बंग-रिबंग जान बूनेत बह छै ।

गचना-पोठी संग बह-भारव

ग्राह-गोहि रनेत बह छै ।

ग्राह-गोहि..... ।



स्वागत गीत (सम्मान समारोह)

स्वागत की तए कवरै अहाँक
स्वागत की तए कवरै अहाँक ।
ने अछि एको रिषि रैरहाव
धन धर्मक चबचे की कवरै ।
सब-समांग एको ने देखै छी
तएओ स्वागत कवरै-कवरै ।
असे ने रिसरास कह छी
की तए स्वागत कवरै अहाँक
स्वागत की तए कवरै अहाँक ।
हेबन-हेबाएन भोखिआएन रौन
छीन-पहछीन उड्‌रि या गेलै
कीच कमल कोशिया रुबरा
जोति जन जोतिया गेलै ।
आसा-आस असिया अतिसा
जुड़ १-जुड़ १ कह छी
स्वागत की तए कवरै अहाँक ।
आच्छा-आशा सखी-सहेली



VIDEHA

सजि ह्वनडानी सग-सुसग

आस मावि रैआस मवि-मवि

छी समर्पित अंग-प्रत्यंग ।

भर-भाव भवि-भवि भरे छी

सुआगत की नए कवरै अहाँक ।

सुआगत की नए..... ।



गीत (नाष्ट मच, चनौबागज)

सुखागत अपनेक करै छी
अभिगत अपने सुखागत करै छी ।
गुरु-गुरु रँडः सिब सिबजन रँब
हाबि-हीय हिहिया कह छी
सुखागत अपनेक करै छी ।
नैन-रैन संग, रैन-चैन संग
चैन-मैन संग, मानि सानि कह छी
तथागत,
अपनेक सुखागत करै छी ।
असि आस निवास संग
रस रसि रिसवास कह छी ।
हम-अहाँ, अहाँ हम
गोप-गोपाल गोपी कह छी ।
सुखागत अपनेक करै छी
अभिमत,
सुखागत अपनेक करै छी
सुखागत..... ।



ई कनापब अपन मंतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



ओम प्रकाशि

गजत्र

१

तीतर हमब मोन हुनकब सिनेहसँ

भैरौं हम सदेह देखु रिदेहसँ

के छै अपन, खान के, रूमजौं ने

नडिते बहर मोन मोनक उछेहसँ

नाटे छी सदिखन खानक अशारे

कबते आव की रौदद रँहिक २ मेहसँ

छोडत संग एक दिन हमब काया

तखनो प्रेम रँहु अछि अपन देहसँ



काजक रैब मोन सरैके पढे छी

"ओम"क भवन घब सभक एहि नेहसँ

महुँनात-बागनातन-फुँवना (प्रत्येक पाँतिमे एक रैब)

२

अहाँ हमवासँ एना नै कसन कक

कनी प्रेमक सनेसाकेँ बुझल कक

हमब जिनगीक राँठक छी सँगी अही

करेजक राँठ कখনो नै छोडल कक

रहला ह्रस्वसतिक कबिते बहनों अहाँ

अहाँ कখনो तँ हमरो लग रैसन कक

रहूत माकक अछि नैनक भाषा प्रिये

अपन नैनक कठावी नै भोँकल कक

करेजा हमब हुरावा प्रेमक रैन

सिनेहक हुरा ग सदिखन लोठल कक

अही जिनगी, अही साँसक डोरी हमब



करेजक आस नै "ओम"क तौडन कक

(महाङ्गबन-महाङ्गबन-मस्तुङ्गबन)- प्रत्येक पाँतिमे एक रैब

अ कनापब अपन मतिर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।



बिन्दुशिव ठाकुर नेपाली
धनुषा नेपाल, लावःकताव

खुनक ठेना सर्ग नर पुस्तक पतन

सुन सुन हो भैया सब
आंगिक चिल्लाबीसँ पमाही नागि
देशे भवि तराही मचि गेलौ ।
जन्मदाता सब पृथ्वीपब अरतवण
कवारै सँ पहिनहि
अपन-अपन कोथिकेँ सुडाह
कबह गेलौ ।

भरिष्यक कर्णधार छै रँचा
कान्हि धवि उपमा देनिहार सब
दाम्पत्यक सुखमे निष्ठु भऽ
अधर्मी, बाक्कस आ नवपिशाच भऽ गेलौ ।

सृष्टिक हुन रँनि सुन्दर जिनगी नऽ
अनुपम ब्रह्माण्डक अरनोकन कवरै,
एहन प्रनीत आ पबम उद्धृष्ट

खुनक ठेना सर्ग रँकाव भऽ गेलौ ।

के दोषी, ककब अछि दोष
ककबा अछि होस, के अछि रँहोस
लोभी, नागची, महत्वाकांक्षी सन



मात-पितासँ मनो घरबाध नगनौ ।

दोसब दिस रोगी नै भगवान कहनिहार
समाजसेरी नामसँ प्रख्यात भेनिहार
आ स्नाथिक रिषपान केनिहार
आना-सिबिन्जरना सभ
भौतिकरादक चपेठामे पडि
पथभ्रष्ट भऽ गेलौ ।
मछब आ खनूरा जकाँ बस छुसऽ नगनौ ।

पता नै आ बारणवाज कहिया धरि चरत
लैङ्गिक असमानतामे गर्भ कहिया धरि उजडत
भगवान सबूझि देखि ई दूबायो सभकेँ
काबण पितक आगु मागयो नाचाव भऽ गेलौ
माने खुनक तेना संग जिनगी रेकाव भऽ गेलौ ।

ई कनापब अपन मतलब ggaj_endr_a@videha.com पर पठाड ।

रौताना छते



१. पंकज चौधरी "नरनशी"- रौत गजव १-२ २. जगदानन्द मा
मन- **तेधत ज**

१



पंकज चौधरी "नरनशी"

रौत गजव-१

दीदी जँ चटि गेल कनहा-गाछी चष्ट द कसर कोवा नए



VIDEHA

छल्लवि भेटैते दोसब रैहला कानन आरै कठैवा नए

मिल्ली-कचवी घिबनी-बुकना राँरु गेलनि ठाँसँ आनए

सांगकितक घँषी रँजिते दोगल दलान पब मोड़ १ नए

रैसल सभ मोड़ १ घेबने अपन-अपन अनमाना नेल

जे अनुप से राँष्टि क खेतक रँमि गेल मारि अंगोवा नए

आँगन नीपल अपिपन पाडल आग फेब डै पूजामानी

आसन पबमे त पडितजी रैसल ओ ओनेले रौवा नए

घडिघँषी आ शिख रँजि गेल चौबठ आ पबसादी भेटैते

"नरन" नखि नेते एकठै नहुँ झूठ बुनेकक जोड़ १ नए

*आखब-२२

राँव गजल-२

दू ठाँ रँस मोहारी चाली

माँ कम्हा तबकारी चाली

प्रबना छिपनीमे नै खेरौ



हमरो नरका खावी चानी

हमछाँ जेरै असकन राबू

पूरा सभ तैयावी चानी

हाष्टसँ आनु पोथी-रँझा

मोजा-जूता कावी चानी

असकनक जनथेमे हबखा

पूरी आ तबकावी चानी

छीष्टर रीया गाछो बोपर

आँगन नग हुनरावी चानी

नरनसँ नै हम नछु माँगर

हमरो कठली गाडी चानी

>मात्रा क्रम : आठ ठा दीर्घ सभ पातिमे



VIDEHA



जगदानन्द ना मन्त्र

हविष्वर डीहठैल, मधुबनी

रौत करिता

होएत जै

हाथक झुबती हमर खुबसी रैनत

गोरबधन रैनत थुँटि ठाकी,

प्रजा हमर सभ हवाए गेल

माए रैनत थुँटि बूढीया काकी ।

गाए एथनो हम चबरेँ छी

प्रिय नहि नम्रपठ कहरेँ छी,

अस्फुटक हसि दए नहि सकतहुँ

तेँ हम चबराहा कहरेँ छी ।

हमर गीतक स्वर

महीसे बूनेत थुँटि,

रा खेतक हवियर मज्जब



सुनि सुमैत थुछि ।

हमर रानिग नै कियो देखने थुछि

गाछीक एक एक आमक झूठपव निखन थुछि,

चौका छुकाक नाम नहि सुनतहुँ

हमर प्रह्लास गाम भविक रासन ठूँठन थुछि ।

के नर गेल यझनारै एतेक दूर

जै कनिको नाम हुनक जनितहुँ हम,

हाथ जोडि दुनु रिनती कबितहुँ

यझनारै हुनकासँ माँगितहुँ हम ।

हमरो गाममे जै यझना रँहत

रिषपव कनियारै नथितहुँ हम,

झवरी रँजा कए गैया चबरितहुँ

यझना कातमे नचितहुँ हम ।

होएत जै हमरो माए यशोदा

सभक प्रिय रँनितहुँ हम,

होएत जै दाडु भाग हमर

कतेक रँनशीली बहितहुँ हम ।



ई कनापब अपन मंतर ggaj_endr_a@videha.com पब पठाउ ।

रैछा लोकनि द्वारा स्वर्गीय श्लोक

१. प्रातः काल ब्रह्महृत् (सूर्योदयक एक घण्टा पहिने) सरप्रथम अपन दू हाथ देखरौक चाही, आ आ श्लोक रैजरौक चाही ।

कवाथे रसते लक्ष्मीः कवमश्च सबस्रती ।

कवमुने स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ लक्ष्मी रसित छथि, कवक मध्यामे सबस्रती, कवक मुनमे ब्रह्मा स्थित छथि ।
भोवमे ताहि द्वारे कवक दर्शन कवरौक थीक ।

२. संध्या काल दीप जेसरौक काल-

दीपमुने स्थितो ब्रह्मा दीपमश्च जनार्दनः ।

दीपाथे शिखरः प्राकृतः संध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥

दीपक मुन भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्याभागेमे जनार्दन (रिष्णु) आह दीपक अग्र भागमे शिखर स्थित छथि । हे संध्याज्याति । अहाँकेँ नमस्कार ।

३. सुतरौक काल-

वामं स्कन्दं हनुमन्तं रैनतेर्यं वृक्षोदवम् ।

शयने यः स्मरेन्नितं दुःस्वप्नस्तु नथिति ॥

जे सभ दिन सुतरौसँ पहिने वाम, क्रमावस्वामी, हनुमान्, गकड आह भौमिक स्मरण करैत छथि, हुनकब दुःस्वप्न नष्ट भऽ जागत छथि ।

४. नहरौक समय-

गर्भं च यक्ष्णे चैर गोदारवि सबस्रति ।

नर्मदे सिन्धु कारेवि जनेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥



हे गंगा, यमुना, गोदारवी, सबस्वती, नर्मदा, सिन्धु आह कारेवी पाव । एहि जनमे
अपन सान्निध्य दिथ ।

३. उतर्ब यसेन्द्रस्य हिमाद्रश्चर दक्षिणम् ।

रर्षे तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सन्द्रक उतर्बमे आह हिमानयक दक्षिणमे भावत अछि आह ओतका सन्तति भावती
कहरैत छथि ।

३. अहर्ना द्रौपदी सीता तारा मन्दादरी तथा ।

पञ्चकं ना स्वरस्मिन् महापातकनाशिकम् ॥

जे सभ दिन अहर्ना, द्रौपदी, सीता, तारा आह मन्दोदरी, एहि पाँच साप्ती-स्त्रीक स्वरण
करैत छथि, हुनकब सभ पाप नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

१. अश्विथोमा रैविरासो हनुमाश्च रिभीषः ।

हृपः पञ्चवामश्च सन्तते चिबङ्गरीनः ॥

अश्विथोमा, रैवि, रास, हनुमान्, रिभीष, हृपाचार्य आह पञ्चवाम- आ सात ठाँ चिबङ्गरी
कहरैत छथि ।

४. साते भरतु स्पर्धाता देरी शिखर रासिनी

उत्थेन तपसा वृद्धा यया पञ्चपतिः पतिः ।

सिद्धिः साक्ष्य सतामस्तु प्रसादान्तुस्य धूर्जटेः

जाल्हरिफेननेथेर यन्त्रि शिषिनः कना ॥

६. रानोहं जगदानन्द न मे राना सबस्वती ।

अपूर्णे पञ्चमे रर्षे र्क्षयामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दुरक्षित मरेश्वर यजुर्देद अध्याय २२, मंत्र २२)

आ ब्रह्मन्निवस्य प्रजापतिवन्द्यः । निर्भोकता देवताः । स्वादुकृतिशुन्दः । षड्जः
स्ववः ॥



आ अँहन् अँहन् शो अँहन् रचिंसी जांयतांमा बांश्चै बांज्चः
 शुरेन् गमरांतिरांपी मंहावथो जांयतां दोग्ध्री धेन्वरेठांनं डरानांशुः सपुः
 प्रबंछिंर्योरां जिंछु वंथेष्ठाः सन्नेयो हाराश्र यजमानश्र रीरो जांयतां
 निकांमे-निकांमे नः पृज्ज्या रश्मिं हनंरला नंश्चोषंधयः पचान्तां योगेष्कंमो
 नः कंप्ताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोवथाः । शिदूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणां हृदयस्तुर ।

ॐ दीर्घायुर्भवेत् । ॐ सौभाग्यरती भवेत् ।

हे भगवान् । अपन देशेमे सुयोग आ सरिञ्ज रिद्यार्थी उपेन्न होथि, आ शुकुं नशि
 कएनिहाव सैनिक उपेन्न होथि । अपन देशेक गाय थुर दुष दय रीनी, रैवद भाव रहन
 कबधमे सम्म होथि आ घोड़ १ ह्वित कपेँ दोगय रीना होए । स्त्रीगण नगबक
 नेत्र कबरामे सम्म होथि आ हरक सभामे ओजपूर्ण भाषण देरैयरना आ नेत्र
 देरामे सम्म होथि । अपन देशेमे जखन आरथक होय रश्मा होए आ ओषधिक-ईष्टी
 सरिदा पविपक होगत बहए । एर क्रमे सभ तबहै हमरा सभक कला होए । शिदूक
 बुद्धिक नशि होए आ मित्रक उदय होए ॥

मन्त्रार्थे कोन रसुक गछा कबरौक चाही तकव रनिं एहि मन्त्रमे कएन गेल अछि ।

एहिमे राचकब्रह्मापमानङ्काव अछि ।

अन्वय-

अँहन् - रिद्या आदि श्रम पविपूर्ण अँह

बांश्चै - देशेमे

अँहन् रचिंसी-अँह रिद्यक तेजस हकत

आ जांयतां- उपेन्न होए

बांज्चः-बाजा

शुरेन्-रीना डब रीना

गमरां- रीण चलेरामे निष्ठा



हतिर्यांधी-शित्तुके तावण दय रैना

मंहाबुथो-पैघ बथ रैना रीब

दोगंधी-कामना(दुध पूर्ण कबए रौनी)

धेनुबेठोठानुडरानाशुः धेनु-गौ रा राणी बेठोठानुडरा- पैघ रैबद नाशुः -
आशुः -बुबित

सष्टिः -घोड़ १

प्रबंछि-येरां- प्रबंछि- रारहाबके धावण कबए रौनी येरां-म्वी

जिंछु-शित्तुके जीतए रैना

बंथेष्टाः -बथ पब हिव

संभेयो-उत्तम सभामे

हरास्य-हरा जेहन

यजमानस्य-बाजाक बाजामे

रीरो-शित्तुके पबाजित कबएरैना

निकांमे-निकामे-निश्चयहकत कार्यमे

नः -रुमब सभक

पुर्ज्या-मेघ

रर्षत-रर्षा होए

हनुंरना-उत्तम हनु रैना

उषंधयः -उषधिः

पचान्ता- पाकए



योगेष्मो-अनन्त नन्त करैरौक हेतु कएन गेन योगक बस्का

नः-हमवा सन्नक हेतु

कम्पताम्-समर्थ हेतु

त्रिफिथक अनुराद- हे ब्रह्म, हमर बाज्यमे ब्रह्म नीक धार्मिक रिद्या रैना, बाज्य-
रीव,तीव्रदाज, दुध दए रौनी गाय, दौगय रैना जन्तु, उद्यमी नावी होथि। पार्जन्य
आरथकता पडना पर रर्या देथि, बन देय रैना गाछ पाकए, हम सन्न संपत्ति
अर्जित/सबस्मित कबी।

8. VI DEHA FOR NON RESI DENTS

8.1 to 8.3 MAI TH LI LI TERATURE I N ENGLI SH

8.1.1.The Comet -GAJENDRA THAKUR t r a n s l a t e d by Jyoti Jha
chaudhary

8.1.2.The_Sci ence_of _Wor ds- GAJENDRA THAKUR t r a n s l a t e d by
the aut hor hi m s e l f

8.1.3.On _t he _di ce-boar d _of _t he _m i l l e n n i u m- GAJENDRA
THAKUR t r a n s l a t e d by Jyoti Jha chaudhary

8.1.4.NAAGPHANS (I N ENGLI SH)- SHEFALI KA VERMA t r a n s l a t e d by
Dr. Raj i v Kumar Verma and Dr. Jaya Verma

Send your comment s t o ggajendra@videha.com

बिदेह नूतन अंक भाषापक बचानेखन-

अंग्ळिशकोष-मैथिली- / मैथिलीकोष-अंग्ळिश- प्रोजेक्टके आगु रैत १३, अपन स्मार
आ योगदान अ-मेर द्वारा ggajendra@videha.com पर पठाउ।

१.भावत आ नेपाक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाओर मानक शैली आ
२.मैथिलीमे भाषा संपादन पाठक्रम



१. नेपाल आ भावतक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाउन मानक शैली

१.१. नेपालक मैथिली भाषा बैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाउन मानक उच्चारण आ लेखन शैली

(भाषाशास्त्री डा. बामराताब यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग नऽ निर्धारित)

मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन

१. पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार: पञ्चमाक्षरानुशात ओ, ए, ण, न एर म अरैत अछि । संस्कृत भाषाक अनुसार शिष्टक अनुमे जाहि रत्नाक अक्षर बहैत अछि ओही रत्नाक पञ्चमाक्षर अरैत अछि । जेना-

अङ्ग (क रत्नाक बहराक कावणे अनुमे ङ् आएत अछि ।)

पञ्च (च रत्नाक बहराक कावणे अनुमे ञ् आएत अछि ।)

खल्ल (छ रत्नाक बहराक कावणे अनुमे ण् आएत अछि ।)

सङ्घि (त रत्नाक बहराक कावणे अनुमे न् आएत अछि ।)

खल्ल (प रत्नाक बहराक कावणे अनुमे म् आएत अछि ।)

उपर्युक्त रीत मैथिलीमे कम देखत जागत अछि । पञ्चमाक्षरक रैदनामे अप्पिकाशि जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखत जागद । जेना- अङ्क, पङ्क, खङ्क, सङ्घि, खङ्क आदि । राकवारिद पण्डित गोरिन्द नाक कहँ छनि जे करत्ना, चरत्ना आ छरत्नासँ पूर्ण अनुस्वार निखत जाए तथा तरत्ना आ परत्नासँ पूर्ण पञ्चमाक्षर निखत जाए । जेना- अङ्क, चङ्क, अङ्क, अनु तथा कम्पन । झुदा हिन्दीक निकट बहल आधुनिक लेखक एहि रीतकेँ नहि मानैत छथि । ओ लोकनि अनु आ कम्पनक जगहपर सेहो अङ्क आ कम्पन निखैत देखत जागत छथि ।

नरीन पद्धति किछु स्वरिपाजनक अरुथु छैक । किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक रैचत होगत छैक । झुदा कतेक रैब हनुलेखन रा झुदनामे अनुस्वारक छोट सन रिन्दु स्पष्ट नहि भेलासँ अर्थक अनर्थ होगत सेहो देखत जागत अछि । अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भारना सेहो ततरै देखत जागत अछि । एतदर्थ कसँ नऽ कऽ परत्ना धरि पञ्चमाक्षरक प्रयोग कवरँ उचित अछि । यसँ नऽ कऽ छु धरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग कवरैमे कतहु कोनो विवाद नहि देखत जागद ।



VIDEHA

२. ठ आ ट : ठक उच्चारण “व्” ह’जकाँ होगत अछि । अतः जतः “व्” ह’क उच्चारण हो ओतः मात्र ठ लिखल जाए । आन ठाम खाली ठ लिखल जएरौक चाही । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेडूआ, ठम्मी, ठेवी, ठाकनि, ठाठ आदि ।

ठ = पढ़ा, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रूँठरँ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।

उपह्राज शिष्ट, सबकेँ देखनासँ ए स्पष्ट, होगत अछि जे साधारणतया शिष्टक श्रुतमे ठ आ मध्य तथा अन्तमे ठ अरैत अछि । एहन नियम ड आ डक सन्दर्भ सेहो लागू होगत अछि ।

३. र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उच्चारण रँ कएल जागत अछि, झुदा ओकबा रँ कपमे नहि लिखल जएरौक चाही । जेना- उच्चारण : रँदनाथ, रिद्धा, नरँ, देरँता, रिष्टू, रँशि, रँन्दना आदि । एहि सबक स्थानपर क्रमशः रँदनाथ, रिद्धा, नर, देरता, रिष्टू, रंशि, रन्दना लिखरौक चाही । सामान्यतया र उच्चारणक लेन ओ प्रयोग कएल जागत अछि । जेना- ओकीर, ओजह आदि ।

४. य आ ज : कतहु-कतहु “य”क उच्चारण “ज”जकाँ करैत देखल जागत अछि, झुदा ओकबा ज नहि लिखरौक चाही । उच्चारणमे यङ्ग, जदि, जझना, जुग, जारँत, जोगी, जदू, जम आदि कहल जाएरँना शिष्ट, सबकेँ क्रमशः यङ्ग, यदि, यझना, हाग, यारत, योगी, यदू, यम लिखरौक चाही ।

५. ए आ य : मैथिलीक रतिनीमे ए आ य दुनू लिखल जागत अछि ।

प्राचीन रतिनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नवीन रतिनी- कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिष्टक श्रुतमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकब, एहन आदि । एहि शिष्ट, सबक स्थानपर यहि, यना, यकब, यहन आदिक प्रयोग नहि कवरौक चाही । यद्यपि मैथिलीभाषी थारु सहित किछु जातिमे शिष्टक आवृत्तमे “ए”केँ य कहि उच्चारण कएल जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीन पञ्चतक अनुसर्ष कवरँ उपह्राज मानि एहि प्रसृतमे ओकर प्रयोग कएल गेल अछि । किँक उँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुरुहताक रीत नहि अछि । आ मैथिलीक सरसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ रँसी निकष्ट छैक । थारु कः कएल, ठहरँ आदि कतिपय शिष्टकेँ केन, ठहरँ आदि



कपमे कतहू-कतहू निखन जाधर सैहो “ए”क प्रयोगके रैसी समीचीन प्रमाणित करैत छि ।

३.हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पबसबामे कोनो रौतपब रौत दैत कान शिछक पाछाँ हि, हू नगाओन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकबहु, तकौनहि, छेष्टहि, आनहु आदि । झुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपब एकाव एर हुक स्थानपब ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत छि । जेना- हुनके, अपनो, तकौने, छेष्ट, आनो आदि ।

१.ष तथा थ : मैथिली भाषामे अपिकारितः षक उच्चारण थ होगत छि । जेना- षडान्न (थडयन्न), थोडशी (थोडशी), षष्टकोष (थष्टकोष), रूषेश (रूथेश), सन्ताष (सन्ताथ) आदि ।

४.प्रनि-लोप : निम्नलिखित खरस्थामे शिछसँ प्रनि-लोप भ२ जागत छि:

(क) क्रियान्वयी प्रत्य अयमे य रा ए वृत्त भ२ जागत छि । ओहिमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भ२ जागत छि । ओकब आगाँ लोप-सूचक चिह्न रा रिकारी (‘ / २) नगाओन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) लेन, उठए (उठय) पडतौक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क लेन, उठ पडतौक ।

पठ२ गेनाह, क२ लेन, उठ२ पडतौक ।

(ख) पूर्वाकारिक छत आय (आए) प्रत्यमे य (ए) वृत्त भ२ जागछ, झुदा लोप-सूचक रिकारी नहि नगाओन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : आए (य) गेन, पठाय (ए) देरँ, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : आ गेन, पठा देरँ, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य एक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनूमे वृत्त भ२ जागत छि । जेना-

पूर्ण कप : दोसबि मानिनि चलि गेलि ।

अपूर्ण कप : दोसब मानिन चलि गेल ।



(घ) रतिमान धुदलुक अलुमि त वृषु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठेत अछि, रजैत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठे अछि, रजै अछि, गरै अछि ।

(ङ) क्रियापदक अरसान एक, उक, एक तथा ठीकमे वृषु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप: डियोक, डियेक, डहीक, डोक, डैक, अरितेक, होगक ।

अपूर्ण कप : डियो, डिये, डही, डो, डै, अरिते, होग ।

(च) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, हू तथा ठकावक लोप भ२ जागछ । जेना-

पूर्ण कप : डहि, कहरहि, कहरहू, गेरह, नहि ।

अपूर्ण कप : डनि, कहरनि, कहरौ, गेरह, नग, नहि, नै ।

६. धनि स्थानानुवर्ण : कोनो-कोनो सुब-धनि अपना जगहसँ हटि क२ दोसब ठाम चलि जागत अछि । खास क२ द्रस्य ग आ उक सम्वन्धमे ग रौत लागू होगत अछि । मैथिलीकवर्ण भ२ गेर शिष्टक मया रा अन्तमे जँ द्रस्य ग रा उ आरै उँ ओकव धनि स्थानानुवर्तित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- शनि (शेगन), पानि (पागन), दानि (दागन), माष्टि (मागष्ट), काड्ड (काडुड), मास्र (माडस) आदि । दूदा तसेम शिष्ट, सभमे ग निखम लागू नहि होगत अछि । जेना- बश्मिके बगश्म आ स्वपश्मिके स्वपाडस नहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हलन्त ()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त ()क आरंभिकता नहि होगत अछि । कावर्ण जे शिष्टक अन्तमे अ उच्चारण नहि होगत अछि । दूदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शिष्ट, सभमे हलन्त प्रयोग कएन जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिष्टके मैथिली भाषा सम्वन्धी निखम अनुसाव हलन्तरिहीन बाखन गेर अछि । दूदा र्वाकवर्ण सम्वन्धी प्रयोजनक लेन अखरंशक स्थानपव कतहू-कतहू हलन्त देन गेर अछि । प्रस्तुत पौथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन आ नरीन दूनु शैलीक सबन आ समीचीन पक्ष सभकेँ समेटि क२ र्ण-रिग्यास कएन गेर अछि । स्थान आ समयमे रचितक सङ्गि हस्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सबन होरहँरना हिसारसँ र्ण-रिग्यास मिलाउन गेर अछि । रतिमान समयमे मैथिली मात्रभाषी पर्यन्तकेँ खान भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेरहँ पडि बहल परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव ध्यान देन गेर अछि । तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषता सभ कथित नहि होगक, ताहू दिस लेखक-मन्दन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री



डा. बामारताब यादरक कहँ छनि जे सबनतक अनुसन्धानमे एहन अरस्था किन्नू ने आरँ देरौक चाली जे भाषाक विशेषता छँहमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बामारताब यादरक पावणार्के पूर्ण कपसँ सङ्ग न२ निधबित)

१.२. मैथिली अकादमी पठना द्वारा निधबित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शिष्ट मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि रर्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रर्तनीमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह

एथन

ठाम

जकब, तकब

तनिकब

अछि

अग्राह

अथन, अथनि, एथेन, अथनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकब, तेकब

तिनकब । (रैकम्पिक कपेँ ग्राह)

ईछ, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप रैकम्पिकतया अपनाओल जाय: भ२ गेल, भय गेल रा भ३ गेल । जा बहन अछि, जाय बहन अछि, जाए बहन अछि । कब गेलाह, रा कबय गेलाह रा कबए गेलाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत अछि यथा कहनि रा कहन्हि ।

४. 'ई' तथा 'उं' ततय लिखल जाय जत' स्पर्शतः 'अग' तथा 'अड' सदृश उच्चारण गच्छ हो । यथा- देखैत, छलैक, रौंखा, छौक अवादि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शिष्ट एहि कपे प्रयुक्त होयत: जैह, सैह, अएह, ओह, लैह तथा दैह ।



७. ह्रस्व अकारांत शिछमे 'अ' के वृत्त कवर सामान्यतः अत्राह थिक । यथा- अत्राह देखि आरह, मानिनि गेनि (मनुष्य मात्रमे) ।

१. स्रतंत्र द्वय 'अ' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकल्पिक कर्पे 'अ' रा 'य' निखन जाय । यथा:- कयन रा कएन, अयनाह रा अयनाह, जाय रा जाए अलादि ।

४. उच्चारणमे दु स्रवक रीच जे 'य' पुनि स्रतंत्र आरि जागत अछि तकवा लेखमे स्थान रैकल्पिक कर्पे देन जाय । यथा- पीआ, अठेआ, रिआह, रा पीया, अठेया, रियाह ।

६. सान्नासिक स्रतंत्र स्रवक स्थान यथासंभर 'ए' निखन जाय रा सान्नासिक स्रव । यथा:- मैएण, कनिएण, किवतनिएण रा मैआँ, कनिआँ, किवतनिआँ ।

१०. कावकक रिभक्तिभक्त निम्नलिखित रूप अत्राह:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे । 'मे' मे अनुस्वार सरथा लज्ज थिक । 'क' क रैकल्पिक रूप 'केव' बाखन जा सकैत अछि ।

११. पूर्वकातिक फ्रियापदक रौद 'कय' रा 'कए' अरय रैकल्पिक कर्पे नगाउन जा सकैत अछि । यथा:- देखि कय रा देखि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ अलादि निखन जाय ।

१३. अर्ध 'न' ओ अर्ध 'म' क रँदना अनुस्वार नहि निखन जाय, किंतु ढापक सुरिधार्य अर्ध 'ङ' , 'ण', तथा 'ण' क रँदना अनुस्वारो निखन जा सकैत अछि । यथा:- अर्ध, रा अर्क, अष्टन रा अँचन, कर्ण रा कँठ ।

१४. हर्त चिह्न निश्चयतः नगाउन जाय, किंतु रिभक्तिभक्त सँग अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सब एकन कावक चिह्न शिछमे सँ क' निखन जाय, हँ क' नहि, सँ क' रिभक्तिभक्त हेतु क' बाक निखन जाय, यथा घब पबक ।

१७. अनुनासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वावा रज्ज कयन जाय । पर्वत द्वावा सुरिधार्य हि समान जठिन मात्रापव अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक रँदना कयन जा सकैत अछि । यथा- हिँ केव रँदना हि ।

१९. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयन जाय ।



१५. समस्त पद सटी क' लिखल जाय, रा हाफेनसँ जोडि क' , हटी क' नहि ।

१६. लिख तथा दिख शिष्टमे रिक्कारी (२) नहि लगौल जाय ।

२०. अंक देरनागरी कपमे बाखल जाय ।

२१. किछु धुनिक लेख नरीन टिहू रैनरौल जाय । जा अ नहि रैनव अछि तारैत एहि दुनु धुनिक रैदवा पूरित अय/ आय/ अय/ अय/ आउ/ अउ लिखल जाय । अकि ऐ रा ओ सँ राउ कएल जाय ।

ह./- गोरिन्द मा ११/१/१३ श्रीकान्त ठाकुर ११/१/१३ सुरेन्द्र मा 'सुमन' ११/०५/१३

२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

२.१. उच्चारण निर्देशः (रौल कएल कप ग्राह) :-

दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सँ- जेना रौल नाम , रुदा ण क उच्चारणमे जीह मुँहमे सँ (नै सँ- तँ उच्चारण दोष अछि)- जेना रौल गणेश । तानरा शिमे जीह तारसँ , षमे मुँहसँ आ दन्त समे दाँतसँ सँ । निशँ, सभ आ शेष रौल क२ देख । मैथिलीमे सँ केँ रैदिक सँकृत जकाँ अ सेहो उचरित कएल जागत अछि, जेना रमा, दोष । य अनेको स्थानपर ज जकाँ उचरित होगत अछि आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेश सँजोग आ

गङ्गमे उचरित होगत अछि) । मैथिलीमे र क उच्चारण रँ, श क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होगत अछि ।

ओहिना द्रष्टु ग रैशीकान मैथिलीमे पहिने रौलन जागत अछि कावण देरनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे द्रष्टु ग अक्षरक पहिने लिखल जागत आ रौलनो जएरौक चारी । कावण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उच्चारण होगत अछि (लिखल तँ पहिने जागत अछि रुदा रौलन रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक कावण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ठगसँ क२ बहल छी ।

अछि- अ ग ङ अँ (उच्चारण)

छथि- छ ग थ - छैथ (उच्चारण)

पहुँचि- प ङ ग च (उच्चारण)

आरौ अ आ ग ङ ए ई ओ ँ अः अँ सभ लेख मात्रा सेहो अछि, रुदा अँमे ग ई ओ ँ अः अँ केँ सहायक कपमे गत कपमे प्रहाज आ उचरित कएल



जागत खट्टि । जेना म के वी कपमे उचवित कवरै । आ देखियौ- ई लेन देखिउं क प्रयोग खरचित । मदा देखिई लेन देखिये खरचित । कू म हू धवि अ समितित लेनासँ कू म हू रैनेत खट्टि, मदा उचाव कान हननु हाऊ शैक खनुक उचावक प्रवृत्ति रैठन खट्टि, मदा हम जखन मनोजमे जू खनुमे रैजैत छी, तखनो प्रबनका लोकके रैजैत मनरैहि- मनोज, रासुरमे ओ अ हाऊ जू = जू रैजै छथि ।

हेब छ खट्टि जू आ ए क मझ मदा गत उचाव होगत खट्टि- गा । ओहिना म्म खट्टि कू आ व क मझ मदा उचाव होगत खट्टि छ । हेब मे आ व क मझ खट्टि ऐ (जेना ऐमिक) आ म् आ व क मझ खट्टि ए (जेना मिस) । ए लेन त+व ।

उचावक आडियो हागत बिदेह आकाशिर <http://www.videha.co.in/> पब उपनद्ध खट्टि । हेब के / म / पब पूर अम्बरसँ मठा क२ निथू मदा ठ / क२ मठा क२ । एमे म मे पहिन मठा क२ निथू आ रादरैना मठा क२ । अंकक राद ठी निथू मठा क२ मदा अग ठाम ठी निथू मठा क२ जेना

छमठा मदा सब ठी । हेब उअ म सातम निथू- छठम सातम ले । घबरेनामे रैना मदा घबरावैमे रावी प्रहाऊ करू ।

बरह-

बैह मदा सकै (उचाव सकै-ए) ।

मदा कखनो कान बरह आ बैह मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्मा जगहमे पार्किंग कवरौक अत्रास बैह ओकवा । प्रह्लापव पता नागत जे दूनदून नाम्ना आ द्रावरव कनाठ ब्रसक पार्किंगमे काज करैत बरह ।

ढले, ढनए मे सेहो ई तबरक लेन । ढनए क उचाव ढन-ए सेहो ।

संयोगने- (उचाव संजोगने)

के / क२

केव- क (

केव क प्रयोग गहमे ले करू , पहमे क२ सकै छी ।)

क (जेना वामक)

- वामक आ मंगे (उचाव वाम के / वाम क२ सेहो)

म- म२ (उचाव)



चन्द्ररिन्दू आ खनुस्राव- खनुस्रावमे कर्ठ धविक प्रयोग होगत अछि ऊदा चन्द्ररिन्दूमे
नै। चन्द्ररिन्दूमे कनेक एकाक सेहो उचावण होगत अछि- जेना वामसँ- (उचावण
वाम स२) वामकेँ- (उचावण वाम क२/ वाम के सेहो)।

केँ जेना वामकेँ भेल हिन्दीक को (वाम को)- वाम को= वामकेँ

क जेना वामक भेल हिन्दीक का (वाम का) वाम का= वामक

क२ जेना जा क२ भेल हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेल हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एते चाक शिष्ट सरहक प्रयोग खराडित।

के दोसब अर्थे प्रशङ्क भ२ सकैए- जेना, के कहनक ? रिभङ्गि “क”क रँदना एकब
प्रयोग खराडित।

नखि, नहि, नै, नग, नँग, नज, नजँ ई सबक उचावण आ लेखन - **नै**

ऊर क रँदनामे उर जेना मरुपुर्ण (मरुपुर्ण नै) जतए अर्थ रँदनि जाए ओतहि मात्र
तीन अक्षरक सहायक प्रयोग उचित। सम्पति- उचावण स स्र ग त (सम्पति नै-
काव सही उचावण आसानसँ समुह नै)। ऊदा सरौतिम (सरौतिम नै)।

बासिष्टय (बासिष्टीय नै)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पोढेने/ पोढे नेन/ पोढए नेन

पोढेए/ पोढए/ (अर्थ परिवर्तन) पोढए/ पोढे

ओ लोकनि (छ्ठ क२, ओ मे रिकारी नै)

ओअ/ ओहि

ओहिनै/

ओहि नेन/ ओही व२

जएरौ/ रैसरौ

पँचभय्या



देखियोक/ (देखिउक नै- तहिना अ मे ज्ञास आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अन्नचित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तै

होएत / हएत

नहि/ नहि/ नँग/ नगँ/ नै

सौंसे/ सौंसे

रैड /

रैडी (सोवाउव)

गाए (गाए नहि), रुदा गाएक दुध (गाएक दुध नै।)

बहलौ/ पहिबतै

हमही/ अही

सरै - सभ

सरैलक - सभलक

धवि - तक

गप- राँत

रूसरै - समयसरै

रूसलौ/ समयलौ/ रूसनदू - समयनदू

हमवा आव - हम सभ

आकि- आ कि

सकैछ/ करैछ (गद्यमे प्रयोगक आरथिकता नै)

होअन/ होनि

जाअन (जानि नै, जेना देव जाअन) रुदा जानि-रूसि (अर्थ परिवर्तन)

पअठ/ जाअठ

आड/ जाड/ आडू/ जाडू



मे, के, सँ, पब (शेछसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (शेछसँ छँ क२) झुदा दुँ रा रैसी
रिभञ्जि सग बहनापब पहिन रिभञ्जि छँके सँ छु । जेना **एमे सँ** ।

एकछा, दुँ (झुदा क२ छँ)

रिक्काबिक प्रयोग शेछक अन्तमे, रीचमे अनारथक कर्पे ले । आकावातु आ अन्तमे अ
क रीद रिक्काबिक प्रयोग ले (जेना **दिअ**

, आ/ दिय , आ, आ ले)

अपोज्झाबिक प्रयोग रिक्काबिक रीदनामे कवर अन्तित आ मात्र फाँटिक तकनीकी
न्यूनताक परिचायक)- ओना रिक्काबिक संस्कृत क२ २ अरग्रह कहन जागत अछि आ
रतनी आ उचावण दुनु ठाम एकव लोप बहैत अछि/ बहि सकैत अछि (उचावणमे लोप
बहैत अछि) । झुदा अपोज्झाबिक सेहो अंग्रेजीमे पसेमिर केसमे होगत अछि आ
फ्रेचमे शेछमे जतए एकव प्रयोग होगत अछि जेना *raison d'être* एतए सेहो
एकव उचावण रैजोन डेष्टेव होगत अछि, माने अपोज्झाबिक अरकाशे ले दैत अछि
रबन जोडेते अछि, से एकव प्रयोग रिक्काबिक रीदना देनाग तकनीकी कर्पे सेहो
अन्तित) ।

अगमे, एहिमे/ **एमे**

जगमे, जाहिमे

एथन/ **अथन/ अगथन**

के (के नहि) मे (अन्त्याव बहैत)

भ२

मे

द२

तँ (त२, त ले)

सँ (स२ स ले)

गाछ तब

गाछ वग

साँस थन



VIDEHA

जो (जो go, करै जो do)

ते/तथ जेना- ते दूखारे/ तगमे/ तगने

जे/जथ जेना- जे कावण/ जगसँ/ जगने

ई/थथ जेना- ई कावण/ ईसँ/ थगने/ झुदा एकव एकठा खास प्रयोग- नावति कतेक दिनसँ कहैत बहैत थग

ले/वथ जेना लेसँ/ वगने/ ले दूखारे

नहँ/ नौ

गेनौ/ नैनौ/ नेवँह/ गेवहँ/ नेवहँ/ नेवँ

जथ/ जाहि/ जे

जाहिठाम/ जाहिठाम/ जथठाम/ जेठाम

एहि/ थहि

थग (राक्यक अंतमे ब्राह्म / ई

थगहु/ थछि/ ईछ

तथ/ तहि/ ते/ ताहि

ओहि/ ओथ

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/ जीरँ

भलेही/ भवहि

तौ/ तँग/ तँ

जाधरँ/ जाधरँ

वग/ ले

छग/ छे

नहि/ नै/ नथ



VIDEHA

गग/ ले

डनि/ डन्हि ...

समय शेरदक संग जखन कोनो रिभक्ति जूठै छै तखन समे जना समेपव
अतयादि । असंगवमे छदए आ रिभक्ति जूठने छदे जना छदेसँ, छदेमे अतयादि ।

जग/ जाहि/

जै

जहिठाम/ जाहिठाम/ जगठाम/ जैठाम

एहि/ अहि/ अग/ अ

अगछ/ अछि/ अँछ

तग/ तहि/ ते/ ताहि

ओहि/ ओग

सीथि/ सीथ

जोरि/ जोरी/

जीरै

भने/ भनेही/

भवहि

ते/ तग/ तँ

जाएरै/ जएरै

नग/ नै

छग/ छै

नहि/ नै/ नग

गग/

ले

डनि/ डन्हि



चूकन थुडि/ गेव गडि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

नीचाँक सूचीमे देन रिक्जमेसँ लेखएज एडीटर्न द्वारा कौन कप चुनन जेरौक चाही:

रौलेड कएन कप त्राह:

१. होयरँना/ होरँयरँना/ होमयरँना/ हेरँ रँना, हेम रँना/ होयरँक/होरँयरँना /होएरँक

२. था/ था२

था

३. क जेने/क२ जेने/क३ जेने/क४ जेने/न/व२/नय/व३

४. भ गेन/भ२ गेव/भ३ गेन/भ४

गेव

५. कव गेनाह/कव२

गेवह/कव३ गेवाह/कव४ गेवाह

६.

विथ/दिथ विथ, दिय, विथ, दिय /

७. कव रँना/कव२ रँना/ कव३ रँना कवैरँना/कव रँना /

कवैराव

८. रँना रना (प्रकष), रानी (मूनी) ९

आठव आंग्र

१०. प्रायः प्रायह

११. दुःख दुथ १

२. चलि गेन चव गेव/चैन गेन

१३. देवथिन्ह देवकिन्ह, देवथिन

१४.



देखवहि देखवनि/ देखलैन्ह

१३. छथिन्ह/ छवहि छथिन/ छलैन/ छवनि

१७. चलैत/दैत चलति/दैति

१९. एथनो

अथनो

१४.

रैठनि रैठजन रैठहि

१६. ७/७२(सरनाम) ७

२०

७ (संयोजक) ७/७२

२१. कागि/काग्नि कागगि/कागगु

२२.

जे जे/जे२ २३. ना-बुब ना-बुब

२४. केवहि/केवनि/कयवहि

२५. तखनत/ तखन त

२७. जा

बहव/जाय बहव/जाय बहव

२९. निकवय/निकवय

वागव/ वगव रैहवाय/ रैहवाय वागव/ वगव निकव/रैहवै वागव

२४. ७तय/ जतय जत/ ७त/ जतय/ ७तय

२६.

की बुबव जे कि बुबव जे

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यादि(योन पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/



यादि (मोन)

३२. अहो/ ओहो

३३.

हंस/ हंस हंस

३४. नो आकि दस/नो किंरा दस/ नो रा दस

३५. सास-सस्रव सास-सस्रव

३६. छह/ सात छ/छः/सात

३७.

की की/ की२ (दीर्घाकाराबुधे २ रजित)

३८. जरौर जरौर

३९. कबयताह/ कबयताह कबयताह

४०. दवान दिशि दवान दिशि/दवान दिस

४१.

. गेवाह गयवाह/गयवाह

४२. किछ आव/ किछ उव/ किछ आव

४३. जाध छव/ जाधत छव जाति छव/जैत छव

४४. पट्टि/ भेट जाधत छव/ भेट जाध छव पट्टि/ भेट जाधत छव

४५.

जरौन (हरा)/ जरौन(होरी)

४६. वय/ वय क/ क२/ वय क२ / व२ क२/ व२ क२

४७. व/व२ कय/

कय

४८. एथन / एथने / अथन / अथने

४९.



अक्षरै अक्षरै

३०. गहीव गहीव

३१.

धाव पाव केनाथ धाव पाव केनाथ/केनाथ

३२. जेकाँ जेकाँ

जकाँ

३३. तहिना तेहिना

३४. एकव थकव

३५. रहिनउ रहनोथ

३६. रहिन रहिनि

३७. रहिन-रहिनोथ

रहिन-रहनउ

३८. नहि/ नै

३९. कवरौ / कवरौथ/ कवरौथ

४०. तँ/ त २ तय/तथ

४१. तैयारी मे छेठ-भाथ/तै, जेठ-भाथ/भाथ

४२. गिनतीमे दू भाग/भाथ/भाथ

४३. जा पोथी दू भागक/ भाँग/ भाथ/ नेन । यारत जारत

४४. माथ मे / माथ रुदा माथक ममता

४५. देखि/ दखन दनि/ दएहि/ दयहि दहि/ दैहि

४६. द / द२/ दथ

४७. ओ (संयोजक) ओ२ (सरनाम)

४८. तका कथ तकाय तकाथ

४९. पैरे (on foot) पएरे कएक/ कैक



VIDEHA

१०.

ताहुमे/ ताहुमे

११.

प्रतीक

१२.

रैजा कय/ कय / क२

१३. रैननाय/रैननाथ

१४. कोवा

१५.

दिनका दिनका

१६.

ततहिम

११. गवरैवहि/ गवरौवनि/

गवरैवहि/ गवरैवनि

१७. रौव रौव

१८.

चेन चिन्हा (अक्षर)

+०. जे जे

+१

. से/ के से/के

+२. एखुनका अथनुका

+३. भूमिहाव भूमिहाव

+४. सुगव

/ सुगव/ सुगव



VIDEHA

+३. सठ्ठाक सठ्ठाक +३.

छवि

+१. कवगयो/उ करैयो ले देवक /कबियो-कवगयो

++ प्रवावि

प्रवाध

+२. सगड़ १-साष्टी

सगड़ १-साष्टी

२०. पखरे-पखरे पौरे-पौरे

२१. खेवखौक

२२. खेजेरौक

२३. वगा

२४. होध- हो - होध

२५. बूमव बूमव

२७.

बूमव (संरोधन अर्थमे)

२१. यैठ यैठ / अयैठ/ सैठ/ सयैठ

२४. तातिव

२२. अयनाय- अयनाग/ अयनाग/ एनाग

२००. निन्न- निन्द

२०५.

बिन्न बिन्न

२०२. जाध जाध

२०३.

जाध (in different sense)-last word of sentence



VIDEHA

१०४. छत पव आरि जाअ

१०५.

ले

१०६. खेवाए (play) – खेवाअ

१०७. शिकाअत- शिकायत

१०८.

ठप- ठप

१०९

. पठ- पठ

११०. कनिअ/ कनिये कनिअ

१११. बाकस- बाकसे

११२. होअ/ होय होअ

११३. अडवदा-

अवदा

११४. बुँमेवहि (different meaning- got understand)

११५. बुँमअनहि/बुँमेवनि/ बुँमयनहि (understood himself)

११६. चनि- चव/ चवि गेव

११७. अथाअ- अथाय

११८.

मोन पाडवबिह/ मोन पाडवबिन/ मोन पावबबिह

११९. कैक- कअक- कअअक

१२०.

वग वग

१२१. जवनाअ



१२२. जबोनाथ जबउनाथ- जबएनाथ/

जबेनाथ

१२३. होथत

१२४.

गबरैवहि/ गबरैवनि गबरौवहि/ गबरौवनि

१२५.

टिथैत- (t o t e s t) टिथथत

१२७. कबथयो (willing t o d o) करैयो

१२९. जेकवा- जकवा

१२८. तकवा- तेकवा

१२९.

रिदेसब स्थानमे/ रिदेसरे स्थानमे

१३०. कबरैयतहुँ/ कबरैएतहुँ/ कबरैतहुँ कबरैतौ

१३१.

हाकि (उचावण हाथक)

१३२. ओजन रजन आरुसोच/ आरुसोस कागत/ कागच/ कागज

१३३. आधे भाग/ आध-भागे

१३४. पिचा / पिचाय/पिचाए

१३५. नए/ ने

१३७. रैचा नए

(ने) पिचा जाय

१३९. तखन ने (नए) कठत अछि । कठ/ सुने/ देखे छव कदा कठत-कठत/ सुनेत-
सुनेत/ देखैत-देखैत

१३८.



कतेक गोठे/ कताक गोठे

१३६. कमाअ-धमाअ/ कमाअ- धमाअ

१४०

. वग वग

१४१. खेवाअ (f or pl ayi ng)

१४२.

छथिन्ह/ छथिन

१४३.

होअत होअ

१४४. का कियो / केउ

१४५.

केशे (hai r)

१४६.

कैस (court -case)

१४७

. रैननाअ/ रैननाय/ रैननाअ

१४८. जलनाअ

१४९. कबसी कसी

१५०. चवचा चर्चा

१५१. कर्म कर्म

१५२. डुराँअ/ डुराँअ/ डुराँअ डुराँअ/ डुराँअ

१५३. अथुनका/

अथुनका

१५४. वअ/ विअ (राकाक अंतिम गेह)- वअ



VIDEHA

१३. कएवक/

केवक

१३. ७. गवमी गर्मी

१३. १

. रवदी रदी

१३. ४. सूना गेवाठ सूना/सूना२

१३. ६. एनाअ-गेनाअ

१३. ७.

तेना ले घेबवहि/ तेना ले घेबवनि

१३. ८. नखि / ले

१३. ९.

डरो डरो

१३. १०. कठह/ कठौ कठी

१३. ११. उमबिगब-उमेबगब उमबगब

१३. १२. भकिगब

१३. १३. धोन/धोखव धोएन

१३. १४. गप/गप्प

१३. १५.

के के

१३. १६. दबरैज्जा/ दबरैजा

१३. १७. ठाय

१३. १८.

धवि तक

१३. १९.



VIDEHA

घृवि लोट्ट

९१३. थोवकैक

९१४. रूहु

९१५. चै/ हू

९१६. तौहि (पद्यमे त्राह)

९१७. चैली / तौहि

९१८.

कवरौअ कवरौअये

९१९. एकेठा

९२०. कवितथि / कवतथि

९२१.

पहुँचि/ पहुँच

९२२. बाखवहि बखवहि/ बखवनि

९२३.

वगवहि/ वगवनि वागवहि

९२४.

अनि (उचावण अणन)

९२५. अछि (उचावण अगछ)

९२६. एवथि गेवथि

९२७. रिंतने/ रिंतने/

रिंतने

९२८. कवरौवहि/ कवरौवनि/

करेवथि/ करेवथिन

९२९. कवएवहि/ करेवनि



VIDEHA

१९०.

आकि/ कि

१९१. पड़ुँचि/

पड़ुँच

१९२. रँझी जबाय/ जबाय जबा (आगि नगा)

१९३.

से से

१९४.

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिभक्तिमे ल्ला कय)

१९५. खेव खेव

१९६. कपव(spaci ous) खेव

१९७. होयतहि/ होयतहि/ होयतनि/हेतनि/ हेतहि

१९८. हाथ मटिआएर/ हाथ मटियारय/हाथ मटियाएर

१९९. खेका खेका

२००. देखाए देखा

२०१. देखारै

२०२. सतवि सतव

२०३.

सातेरें सातेरें

२०४. गेलैह/ गेलहि/ गेलनि

२०५. तेरौक/ होयरौक

२०६. केनो/ कएवहुँ/केनो/ केवूँ

२०७. किछ न किछ/

किछ ले किछ



VIDEHA

२०४. घुमेनहूँ/ घुमउनहूँ/ घुमेनौ

२०५. एवाक/ अथनाक

२१०. अः/ अह

२११. नय/

नय (अर्थ-परिवर्तन) २१२. कनीक/ कनेक

२१३. सरैलक/ सलक

२१४. मिना२/ मिवा

२१५. क२/ क

२१७. जा२/

जा

२१९. आ२/ आ

२२४. भ२ / भ (काल्पनिक कमीक आतक)

२२५. निश्चय/ नियम

२२०

.लेबलैखब/ लेबलैयब

२२१. पहिब अक्षर ट/ रौदक/ रौचक टः

२२२. तहिं/तहिं/ तखिं/ तै

२२३. कहिं/ कही

२२४. तँअ/

तै / तँ

२२५. नँग/ नगँ/ नखिं/ नहि/ले

२२७. तै/ रुए / एवीतै/

२२९. छखिं/ छै/ छैक /छग

२२४. दृष्टिअ/ दृष्टियै



VIDEHA

२२९. **आ (come) / आ२ (conjunct i on)**

२३०.

आ (conjunct i on) / आ२ (come)

२३१. **कनो / कोनो कोना / केना**

२३२. **गेनोह-गेवहि-गेवनि**

२३३. **हेरौक- होएरौक**

२३४. **केनो- कएनो-कएनहुँ/केनो**

२३५. **किछ न किछ- किछ ले किछ**

२३६. **केहन- केहन**

२३७. **आ२ (come)-आ (conjunct i on-and) / आ । आरै-आरै /आरैह-आरैह**

२३८. **रुएत-रैत**

२३९. **घुमेनहुँ-घुमएनहुँ- घुमेनारै**

२४०. **एनाक- अएनाक**

२४१. **होनि- होअन/ होहि/**

२४२. **उ-बाम उ आमक रौट (conjunct i on), उ२ कहक (he said) / उ**

२४३. **की रुए/ कोसी अएवी रुए/ की है । की रुए**

२४४. **दृष्टिअ/ दृष्टियै**

२४५.

.गोयिब/ सामेव

२४६. **तै / तैअ/ तयि/ तहि**

२४७. **जौ**

/ जौ/ जौ

२४८. **सभ/ सरै**

२४९. **सभक/ सरैहक**



२३.०.कहिं/ कही

२३.१.कनो/ कोनो/ कोनहुँ/

२३.२.काबकती भय गेव/ भय गेव/ भय गेव

२३.३.कोना/ केना/ कनू/कना

२३.४.अः / अह

२३.५.जने/ जनए

२३.६.गेवनि/

गेवाह (अर्थ परिवर्तन)

२३.७.केवहि/ कएवहि/ केवनि/

२३.८.वय/ वय/ वयह (अर्थ परिवर्तन)

२३.९.कनीक/ कनेक/कनी-मनी

२३.१०.पठेवहि पठेवनि/ पठेवअन/ पपठेवहि/ पठेवौवनि/

२३.११.निश्चय/ नियम

२३.१२.हेक्टअव/ हेक्टयव

२३.१३.पहिव अक्षर बहने ठ/ रीचमे बहने ठ

२३.१४.आकावातुमे रिक्काविक प्रयोग उचित नै/ अपोस्ट्रोफिक प्रयोग फार्मल तकनीकी नूनतक परिचायक ओकव रैदना अग्रह (रिक्काव) क प्रयोग उचित

२३.१५.केव (पद्यमे ग्राह) / -क/ क२/ के

२३.१६.टोहि- टोहि

२३.१७.वगैथ/ वगैथे

२३.१८.हैथत/ हथत

२३.१९.जाथत/ जथत/

२३.२०.आथत/ अथत/ आउत

२३.२१.



. खाधत/ खाधत/ खेत

२१२. पिअरौक/ पिअरौक/पियेरौक

२१३. गुरु/ गुरु

२१४. गुरुते/ गुरु

२१५. अतार/अतार/ एतार/ एतार

२१६. जाहि/ जाहि/ जहि/ जै

२१७. जाधत/ जैत/ जधत

२१८. खाधव/ खाध

२१९. कैक/ कैक

२२०. खाधन/ खाध/ खाध

२२१. जाध/ जध/ जध (नानति जाध नगतीह ।)

२२२. गुरुधन/ गुरुधन

२२३. कर्तृखाध/ कर्तृखाध

२२४. ताहि/ तै/ तध

२२५. गायरौ/ गाधरौ/ गधरौ

२२६. सकै/ सकध/ सकय

२२७. सेवा/सवा/ सवाध (भात सवा गेल)

२२८. कहत बही/देखेत बही/ कहत छलौ/ कह छलौ- अहिना छलैत/ पटैत

(पटै-पटैत अर्थ कयनो काव परिवर्तित) - आव बूमै/ बूमैत (बूमै/ बूमै छी रुदा बूमैत-बूमैत)/ सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। डैक/ डै। रचलै/ रचलै। बखरौ/ बखरौ। रिन/ रिन। बातिक/ बातिक बूमै आ बूमैत केव अपन-अपन जगहपव प्रयोग समीचीन अछि। बूमैत-बूमैत आर बूमैत। हमर बूमै छी।

२२९. दुआरे/ दार

२३०. भैरौ/ भैरौ/ भैरौ

२३१.



खन/ खीन/ खुना (भोव खन/ भोव खीन)

२९२. तक/ धवि

२९३. ग२/ गै (meaning different - जनरै ग२)

२९४. स२/ सँ (झुदा द२, न२)

२९५. ७. त्र (तीन अक्षरक मेव रँदना पुनरुक्ति एक था एकठा दोसरक उपयोग) आदिक रँदना त्र आदि। मह७. त्र/ मह७. कर्त्ता/ कर्त्ता आदिमे त्र सहायक कोनो आरथकता मैथिलीमे नै छि। रङ्गर

२९६. रेंसी/ रेंगी

२९७. रौना/ राना रँवा/ रना (बैरँना)

२९८

रावी/ (रँदनेरावी)

२९९. रात/ रात

३००. अन्तर्वास्तिव्य/ अन्तर्वास्तिव्य

३०१. लेमए/ लेमँए

३०२. वमडका/ नमडका

३०३. वागै/ वगै (

भेटैत/ भेटै)

३०४. वागव/ वगव

३०५. हरौ/ हरा

३०६. बाखक/ बखक

३०७. आ (come)/ आ (and)

३०८. पश्चाताप/ पश्चाताप

३०९. २ केव रारहाव गेहक अन्तुमे मात्र, यथासंभर रीचमे नै।

३१०. कठत/ कठ

३११.



बस्त्र (ढुव)/ बँठे (ढुल्ले) (meaning different)

३५५. तागति/ ताकति

३५६. खवाप/ खवारै

३५७. रौगन/ रौनि/ रौगनि

३५८. जार्ति/ जाथ

३५९. कागज/ कागच/ कागत

३६०. गिल्ले (meaning different – swallow)/ गिल्ल (खसए)

३६१. बास्तिर/ बास्तिर

DATE-LIST (year – 2012-13)

(१४२० कसवी साव (

Marriage Days:

Nov.2012- 25, 26, 28, 29, 30

Dec.2012- 5,9, 10, 13, 14

January 2013- 16, 17, 18, 23, 24, 31

Feb.2013- 1, 3, 4, 6, 8, 10, 14, 15, 18, 20, 24, 25

April 2013- 21, 22, 24, 26, 29

May 2013- 1,2,3,5,6,9,12,13,17,19,20,22,23,24,26,27,29,30,31

June 2013- 2,3

July 2013- 11, 14, 15

Upanayana Days:

January 2013- 16



February 2013– 14, 15, 20, 21

April 2013– 22

May 2013– 20, 21

Dviragaman Din:

November 2012– 25, 26, 28, 29

December 2012– 2, 3, 14

February 2013– 14, 15, 18, 20, 21, 22, 27, 28

March 2013– 1

April 2013– 18, 22, 24, 26, 28, 29

May 2013– 12, 13

Mundan Din:

November 2012– 26, 30

December 2012– 3

January 2013– 18, 24

February 2013– 1, 14, 15, 20, 28

April 2013– 17

May 2013– 13, 23, 29

June 2013– 13, 19, 26, 27, 28

July 2013– 10, 15

FESTIVALS OF MTHILA (2012–13)



VIDEHA

Mauna Panchami -08 July
Madhushravani - 22 July
Nag Panchami - 24 July
Raksha Bandhan- 02 Aug
Krishnastami - 10 August
Kushi Amavasya / Somvari Vrat - 17 August
Vishwakarma Pooja- 17 September
Hartalika Teej - 18 September
ChauthChandra-19 September
Karma Dharma Ekadashi -26 September
Indra Pooja Aarambh- 27 September
Anant Caturdashi - 29 Sep
Agastyar ghadaan- 30 Sep
Pitri Paksha begins- 30 Sep
Jimootavahan Vrat a/ Jitika-08 October
Matrini Navami - 09 October
Somvati Amavasya Vrat - 15 October
Kalashstapan- 16 October
Belnauti - 20 October
Patrika Pravesh- 21 October
Mahastami - 22 October



Maha Navami - 23 October

Vijaya Dashami - 24 October

Kojagar - 29 October

Dhanteras - 11 November

Diya Bati, Shyama Pooja - 13 November

Anakoota/ Govardhana Pooja - 14 November

Bhratridwitiya/ Chitrakuta Pooja - 15 November

Chhatra - 19 November

Devasthan Ekadashi - 24 November

Araviratarambh - 25 November

Navanna parvan - 25 November

Kartik Purnima - Sama Visarjan - 28 November

Vivaha Panchmi - 17 December

Makar / Teela Sankranti - 14 Jan

Narak Chaturdashi - 08 February

Basant Panchami / Saraswati Pooja - 15 February

Achha Saptmi - 17 February

Mahashivaratri - 10 March

Holi kadahan - Fagua - 26 March

Holi - 28 March

Varuni Trayodashi - 07 April



Chaiti Navaratararambh- 11 April

Jurishital-15 April

Chaiti Chhatihivrat-16 April

Ram Navami - 19 April

Ravi Bratarant- 12 May

Akshaya Tritiya-13 May

Janaki Navami - 19 May

Vat Savitri-barasait - 08 June

Ganga Dashhar-18 June

Somavati Amavasya Vrat- 08 July

Jagannath Rath Yatra- 10 July

Hari Sayan Ekadashi - 19 July

Aashadhi Gurupurnima-22 Jul

VI DEHA ARCHIVE

पत्रिकाक सब्ठा पुरान अंक ब्रैल-बिदेह ग्रंथ, तिबुता आ देरनागरी रूपमे Vi deha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह ग्रंथक ३.०पत्रिकाक पहिल -

बिदेह ग्रंथ सँ आगाँक अंक ३.०पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-i/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-ii/>



२. मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi>

३. डियो संकलन आ मैथिली Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

४. मैथिली रीडियोक संकलन Maithili Videos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video>

३. आधुनिक चित्रकला आ चित्र /मिथिला चित्रकला. Mithila Painting/ Modern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

-बिदेह-क एहि सब सहयोगी विकिपब सेहो एक बेब जाड ।

३. बिदेह मैथिली क्विज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली जानबूत अग्रिगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. बिदेहक पूर्ण-कप "भासबिक गाछ" :

<http://gajendrat hakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह अडेकल :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह फागत :

<http://videha123.wordpress.com/>



१२. बिदेह: सदेह : पहिन तिवहता (मिथिलाक्षर) जानबूत (बैनाँ)

<http://videha-sadeha.blogspot.com>

१३. बिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिन रेब बिदेह द्वारा

<http://videha-braille.blogspot.com>

१४. VIDEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पार्षिक ग्रा पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com>

१६. बिदेह प्रथम मैथिली पार्षिक ग्रा पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com>

१७. बिदेह प्रथम मैथिली पार्षिक ग्रा पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com>

१८. बिदेह प्रथम मैथिली पार्षिक ग्रा पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com>

१९. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सबसँ लोकप्रिय जानबूत)

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com>

२०.श्रुति प्रकाशन.

<http://www.shrutipublication.com>

२१.<http://groups.google.com/group/videha>

२२.<http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>



VIDEHA

२३. गजेन्द्र ठाकुर अडेकर


<http://gajendrathakur123.blogspot.com>


२४. नैना भुठैका

<http://mangan-khabas.blogspot.com>

२५. बिदेह रेडियोकविता आदिक पहिल पौडकास्ट सांठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२७.  Videha Radio

२९.  Join official Videha facebook group.

२९. बिदेह मैथिली नाट्य उमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२९. समदिया

<http://esamad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अनचिन्हाव आखर

<http://anchinharakharakolkata.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाकु

<http://maithili-haike.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. बिहनि कथा



VIDEHA

<http://vihani.katha.blogspot.in/>

३३. मैथिली करिता

<http://maithili-kavi.ta.blogspot.in/>

३७. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३१. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>

महत्त्वपूर्ण सूचना: The Maithili pdf books are AVAILABLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>



ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'विदेह' १२५ म अंक ०१ मार्च २०१३ (वर्ष ६ मास ६३ अंक १२५)

मासिक संचिका ISSN 2229-547X

VIDEHA



विदेह:सदेह: २: ३: ४:३:७:१:४:१० "विदेह"क प्रिंटेड संस्करण: विदेह-३-पत्रिका
(<http://www.videha.co.in/>) क छनन बचना सम्मिलित ।

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at publisher's (print - version) site <http://www.shruti-publication.com> or you may write to shruti.publication@shruti-publication.com

विदेह



मैथिली साहित् आन्दान

(c)२००४-१३. सराधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए संपादकाधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ङा-पत्रिका । SSN 2229-547X
VI DEHA संपादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-संपादक: उमेश मंडव । सहायक संपादक: शिर कमार सा आ कुमारी (मनोज कमार कर्ण) । भाषा-संपादन: नागेंद्र कमार सा आ पञ्जीकार रिद्वानन्द सा । कला-संपादन: ज्ञाति सा चौधरी आ बणि बेथा सिन्हा । संपादक-शोध-अवस्था: डा. जया रमा आ डा. बाजरी कमार रमा । संपादक- नाटक-वर्गमठ-चवटि- रैचन ठाकुर । संपादक- सूचना-संपर्क-समाद- पुनम मंडव आ प्रियका सा । संपादक- अनुराद रिभाग- रिनित उपेव ।

बचनाकाब अपन मौलिक आ अप्रकाशित बचना (जकरब मौलिकताक संपूर्ण उतबदायित्व लेखक गणक मध्य छुनि) ggajendra@videha.com केँ मेर अटैचमेण्टक रूपमें .doc, .docx, .rtf रा .txt फॉर्मेटमें पठा सकैत छुनि । बचनाक संग बचनाकाब अपन सम्पिष्ट पविचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठैतान, से आशी करैत छी । बचनाक अंतमें ठागप बहय, जे ङा बचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशिनक हेतु बिदेह (पाष्किक) ङा पत्रिकार केँ देल जा बहन अछि । मेर प्राप्त होयरक बाद यथासंभर शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकब प्रकाशिनक अंकक सूचना देल जायत । 'बिदेह' प्रथम मैथिली पाष्किक ङा पत्रिका अछि आ ईमें मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमें मिथिला आ मैथिलीसँ संबंधित बचना प्रकाशित कएल जायत अछि । एहि ङा पत्रिकार केँ श्रीमति नम्रा ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथि केँ ङा प्रकाशित कएल जायत अछि ।

(c) 2004-13 सराधिकार स्वसिद्ध । बिदेहमें प्रकाशित सभटा बचना आ आर्काइवरक सराधिकार बचनाकाब आ संग्रहकर्ताक नगमें छुनि । बचनाक अनुराद आ पुनः प्रकाशिन किंवा आर्काइवरक उपयोगक अधिकार किनरक हेतु ggajendra@videha.com पर संपर्क करू । एहि सांगठिकेँ प्रीति सा ठाकुर, मधुनिका चौधरी आ बणि प्रिया द्वारा डिजाइन कएल गेल ।



सिंहबु





ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका 'बिदेह' १२५ म अंक ०१ मार्च २०१३ (वर्ष ६ मास ६३ अंक १२५)

मानुषिह संस्कृतम् **ISSN 2229-547X**

VIDEHA